राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 केएल राहुल की कप्तानी बेहतरीन रही, बल्लेबाजी से हो सकता है थोड़ा ...

कांग्रेस और टीएमसी में इंडि गठबंधन को लेकर छिड़ी ... 12

वर्ष : 15 | अंक : 37 | नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

संक्षिप्त खबरें

सीएम नीतीश ने स्व सुशील कुमार मोदी को दी श्रद्धांजलि

पटना। रवीन्द्र भवन में आयोजित पूर्व उप मुख्यमंत्री स्व सुशील कुमार मोदी की श्रद्धांजलि सभा में राज्यपाल राजेन्द्र विष्वनाथ आर्लेकर एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शामिल हुये। मुख्यमंत्री ने स्व सुशील कुमार मोदी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि दी और याद कर भावुक हुये।

जमुई में सड़क दुर्घटना में जुड़वा भाई-बहन समेत तीन की मौत

जमुई। जमुई जिले के चंद्रमंडी थाना क्षेत्र में शुक्रवार की सुबह सड़क दुर्घटना में जुड़वा भाई-बहन समेत तीन लोगों की मौत हो गयी तथा छह अन्य घायल हो गये। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि बसबुटिया गांव के पास तेज रफ्तार कार सड़क किनारे पेड़ से टकरा गयी। इस दुर्घटना में कार पर सवार जुड़वा भाई-बहन समेत तीन लोगों की मौत हो गयी, वहीं छह अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये। घायलों को देवघर अस्पताल में भर्ती कराया गया,जहां प्राथमिक उपचार के बाद एक महिला को इलाज के लिये जमुई भेज दिया गया है। मृतकों की पहचान नागेन्द्र कुमार के पुत्र अभिनंदन और नंदनी कुमारी के रूप में की गयी है। मृतक महिला की पहचान नहीं की जा सकी है।

देश में चल रही तानाशाही अस्वीकार्य है: केजरीवाल

चंडीगढ़। भारतीय जनता पार्टी पर प्रहार करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को कहा कि देश में कथित तौर पर चल रही तानाशाही अस्वीकार्य है और देश ने पिछले 75 वर्षों में कभी ऐसा दौर नहीं देखा। केजरीवाल अमृतसर में आम आदमी पार्टी की पंजाब इकाई के कार्यकर्ताओं और विधायकों सहित नेताओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने उनसे पंजाब की सभी 13 लोकसभा सीट पर आप की जीत सुनिश्चित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने को कहा। उन्होंने भाजपा पर सभी प्रतिद्वंद्वी पार्टी नेताओं को जेल में डालने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, हमारे देश में जो तानाशाही चल रही है, वह स्वीकार्य नहीं है।

सीएम ने चुनावी सभा को किया संबोधित, राजद व कांग्रेस की खिंचाई की

दो बार इधर-उधर चले गए थे लेकिन अब कभी नहीं जाएंगे : नीतीश

बोलें- गड़बड़ी करने लगा तो सरकार से बाहर कर दिए, चुनाव बाद होगी जांच

प्रातः किरण

मोतिहारी/पटना। मुख्यमंत्री और जदयू राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार मुख्य विपक्षी दल राजद पर लगातार हमलावर है। इस कड़ी में मुख्यमंत्री ने एक बार फिर शुक्रवार को शिवहर लोकसभा क्षेत्र के बैरगनिया में राजग समर्थित जदयू उम्मीदवार लवली आनंद के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए राजद पर जमकर हमला बोला। साथ ही मुख्यमंत्री ने अपने कार्यकाल की उपलब्धियों को जनता के बीच साझा किया।

सीएम ने महागठबंधन से अलग होने के कारणों को भी बताया। सीएम ने कहा कि नवबंर 2005 से हमलोग और भाजपा ने मिलकर काम करना शुरू किया। हमारा रिश्ता तो 1995 का है, लेकिन बीच में हम दो बार बेमतलब का फालतू लोगों के साथ इधर उधर कर दिए। उसके बाद वह सब इतना गड़बड़ किया, तो एकबार तो उसको हटाये। फिर इस बार तो ऐसा गड़बड़ किया कि उसको पूरे तौर से हटा दिए। आगे जो भी जांच करवाना होगा, तो सबका जांच करवायेंगे। अब हमलोगों ने तय कर दिया है। कुछ मेरे पार्टी का था, जो इधर उधर कर देता था। हमने कह दिया है कि हमलोग अब कभी भी अलग नहीं होंगे। सीएम ने कांग्रेस और लालू राबड़ी सरकार का नाम लिए बिना कहा कि, बिहार में हिंदू मुस्लिम का झगड़ा यही सब लगाता था। हमलोग जब आए तो सब झगड़ा खत्म कराये। मदरसा को सरकारी मान्यता दिलाये। कब्रिस्तानों की घेराबंदी कराये। वह सब मुसलमानों के लिए कुछ नहीं किया। मुसलमानों का खाली वोट लिया है। मुस्लिम लोगों को कहेंगे कि आप लोग उसको वोट दिजिएगा? वह सब आपके लिए कुछ किया है? सब काम तो हमलोगों ने किया है और वोट उन्हीं लोगों को दीजिएगा तो जान लिजिए कि फिर वह आयेगा, तो सब नाश हो जाएगा। जनसभा में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ पटना से मंत्री विजय चौधरी और राज्यसभा सांसद संजय झा भी आए थे। वहीं जनसभा में एनडीए प्रत्याशी लवली आनंद, शिवहर विधायक चेतन आनंद पूर्व विधायक ठाकुर रत्नाकर राणा रीगा विधायक मोतीलाल समेत कई एनडीए नेता मौजूद रहे।

हमलोग पूरा बिहार एक परिवार हैं : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र के केसरिया में एनडीए समर्थित भाजपा प्रत्याशी राधामोहन सिंह के समर्थन में चुनावी जनसभा को संबोधित किया। सीएम ने राजद प्रमुख और पूर्व सीएम दंपति लालू यादव और राबड़ी देवी पर उनके नौ बच्चों को लेकर सार्वजनिक मंच से एक बार फिर तंज कसा। कहा कि बेटी ही हो रही थी। बेटा नहीं हो रहा था तो और ज्यादा पैदा कर दिया। कितना बाल-बच्चा पैदा किया। हट गया तो बीवी को बनवा दिया। बेटा-बेटी सबको कितना बढ़ाया। ये कोई मतलब है। हमलोग को देखिए कि हम लोग इतने दिन से हैं। हमलोग कोई अपने परिवार का विकास करते हैं। हमलोग पूरा बिहार एक परिवार हैं। नीतीश ने मोतिहारी की सभा में दोहराया कि 1995 से उनका भाजपा के साथ रिश्ता है। बीच में वो दो बार इधर-उधर चले गए थे लेकिन अब कभी नहीं जाएंगे। उन्होंने महागठबंधन से बाहर निकलने का जिक्र करते हुए कहा कि ये लोग गड़बड़ कर रहा था इसलिए हम सरकार से बाहर कर दिए। उन्होंने कहा कि चुनाव के बाद सब चीज की जांच होगी।

प्रधानमंत्री ने बाराबंकी में चुनावी सभा को किया संबोधित, विपक्ष पर साधा निशाना

धर्म के आधार पर आरक्षण के विरोध में थे आम्बेडकर : मोदी

सपा-कांग्रेस के लिए अपने वोट बैंक से बड़ा कुछ नहीं

प्रातः किरण

बाराबंकी/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के बाराबंकी में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव आम्बेडकर धर्म के आधार पर आरक्षण के विरोधी थे। जब संविधान बना, तब संविधान सभा ने निर्णय किया था कि धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं होगा। लेकिन, 10 साल पहले इन लोगों (कांग्रेस) ने धर्म के आधार पर आरक्षण देने की कोशिश की थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि कर्नाटक में तो इन्होंने यह कर भी दिया है। वहां इन्होंने सब मुसलमानों को रातों-रात ओबीसी बना दिया। ओबीसी को मिले आरक्षण में से बहुत बड़ा हिस्सा इन्होंने वहां लूट लिया। क्या ओबीसी व एससी का आरक्षण हम छीनने देंगे। बाबा साहब का दिया हुआ आरक्षण कोई छीन नहीं सकता है। यह लोग आरक्षण व संविधान के विरोधी हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने आज विपक्ष के पूरे कुनबे पर प्रहार किया है। उन्होंने कांग्रेस, सपा पर तो वार किया है, बिहार के विपक्ष को भी नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा कि इनके चारा घोटाले के चैंपियन(लालू यादव), जो अभी जेल से तबियत के बहाने बाहर घूम रहे हैं। नरेन्द्र मोदी ने कहा कि मैं आपके अधिकारों की रक्षा करने के लिए आपसे 400 पार मांग रहा हूं। वे तो यहां तक कह रहे हैं कि पूरा का पूरा आरक्षण अब मुसलमानों को मिलना चाहिए। इसका मतलब दलित, आदिवासी और पिछड़ों के पास कुछ बचेगा ही नहीं। उन्होंने कहा कि आज एक तरफ देशहित के लिए समर्पित भाजपा एनडीए गठबंधन है और दूसरी तरफ देश में अस्थिरता पैदा करने के लिए इंडी गठबंधन मैदान में है। जैसे-जैसे चुनाव आगे बढ़ रहा है, ये इंडी वाले ताश के पत्तों की तरह बिखरने शुरू हो गए हैं। यहां जो बबुआ जी यानी समाजवादी शहजादे हैं, अब उन्होंने एक नई बुआ की शरण ली है। सपा पर हमला बोलते हुए उन्होंने कहा कि उनकी ये नई बुआ बंगाल में हैं। अब उनकी बंगाल वाली बुआ जी ने इंडी गठबंधन वालों को कहा है कि मैं आपको बाहर से सपोर्ट करूंगी। इंडी गठबंधन की एक और पार्टी ने दूसरी को कह दिया है कि खबरदार अगर हमारे खिलाफ पंजाब में बोला। पीएम पद को लेकर भी ये सब मुंगेरी लाल को भी पीछे छोड़ रहे हैं। इनके सपनों की इंतहा देखिए। कांग्रेस के एक नेता ने कहा दिया कि रायबरेली के लोग प्रधानमंत्री चुनेंगे। ये सुनते ही समाजवादी शहजादे का दिल ही टूट गया, बस आंसू नहीं निकले, लेकिन दिल के सारे अरमान बह गए। इनके सपनों की इंतहा देखिए, कांग्रेस के एक नेता ने कह दिया कि रायबरेली के लोग प्रधानमंत्री चुनेंगे।

सपा-कांग्रेस के लिए अपने वोटबैंक से बड़ा कुछ नहीं: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि सपा-कांग्रेस के लिए अपने वोटबैंक से बड़ा कुछ नहीं है। लेकिन, जब मैं इनकी पोल खोलता हूं, तो ये बेचैन हो जाते हैं, इनकी नींद हराम हो जाती है। ये कुछ भी बोलना शुरू कर देते हैं, गालियां देना शुरू कर देते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि 100 सीसी के इंजन से आप 1,000 सीसी की रफ्तार ले सकते हैं क्या ? आपको विकास की तेज रफ्तार चाहिए तो वो सिर्फ दमदार सरकार ही दे सकती है...भाजपा सरकार ही दे सकती है। उन्होंने कहा कि यहां सपा के बड़े नेता ने रामनवमी के दिन कहा कि राम मंदिर तो बेकार है। वहीं, कांग्रेस तो राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला पलटने की तैयारी कर रही है। इनके लिए सिर्फ अपना परिवार और पावर ही मायने रखते हैं। सपा-कांग्रेस वाले अगर सरकार में आए, तो रामलला को फिर से टेंट में भेजेंगे और मंदिर पर बुलडोजर चलवा देंगे। प्रधानमंत्री मोदी अपने सम्बोधन में जैदपुर के गमछे, प्रगतिशील किसान रामसरन तथा सतरिख के आश्रम का भी जिक्र किया। अंत में उन्होंने अपने समर्थकों से घर-घर जाकर मोदी की तरफ राम-राम कहनी की अपील भी की। जनसभा में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, अपना दल एस की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल, एमएलसी अंगद सिंह, एमएलसी अवनीश कुमार सिंह, पूर्व सांसद वैजनाथ रावत प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

संविधान पीठ का फैसला कम संख्या वाली पीठों पर बाध्यकारी : उच्चतम न्यायालय

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने अपने अप्रैल 2022 के फैसले का जिक्र करते हुए कहा है कि संविधान पीठ का फैसला कम संख्या वाली पीठों पर बाध्यकारी होगा। 7 अप्रैल, 2022 के अपने आदेश में शीर्ष अदालत ने कहा था कि कोई पंचायत उस जमीन के स्वामित्व का दावा नहीं कर सकती जो हरियाणा में भूमि कानून के तहत वास्तविक मालिकों से उनकी अनुमेय सीमा से ज्यादा ली गई है। शीर्ष अदालत ने कहा था कि पंचायतें केवल उस भूमि का प्रबंधन और नियंत्रण कर सकती हैं जो मालिकों से ली गई हैं और उस पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकतीं। शीर्ष अदालत ने अप्रैल 2022 के फैसले की समीक्षा की अपील करने वाली याचिका पर अपना यह फैसला सुनाया। इसमें कहा गया है कि संविधान पीठ द्वारा निर्धारित कानून को अनदेखा करना और उसके बिल्कुल विपरीत दृष्टिकोण रखना एक भौतिक त्रुटि होगी। इसमें कहा गया, हमारे विचार में संविधान पीठ के फैसले को नजरअंदाज करने से इसकी सुदृढ़ता कमजोर होगी। केवल इस संक्षिप्त आधार पर समीक्षा की अनुमति दी जा सकती थी। समीक्षा याचिका की अनुमति देते हुए पीठ ने कहा, इस न्यायालय के सात अप्रैल 2022 के फैसले के आलोक में अपील दायर करने के लिए बहाल की जाती है। पीठ ने निर्देश दिया कि अपील को सात अगस्त को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाए।

पुलिस में भी अग्निवीर योजना लाने की साजिश : तेजस्वी

प्रातः किरण

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव केन्द्र की भाजपा सरकार पर लगातार हमलावर हैं। इसी कड़ी में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने अग्निवीर योजना को लेकर एक बार फिर पीएम मोदी पर हमला बोला है। तेजस्वी ने कहा कि पूरे देश में युवाओं के बीच अग्नि वीर का मुद्दा बन रहा है। मेरी अधिकारियों से बात हुई है भाजपा के जो लोग हैं अर्ध सैनिक बलो, पैरा मिलिट्री फोर्सेज, सीआईएसफ, आइटीबीपी, बीएसएफ इन सब जगह यह लोग लाना चाहते हैं और उसके बाद यह लोग पुलिस में भी अग्निवीर योजना लाने का काम करना चाहते हैं। पहले तो ओल्ड पेंशन खत्म किया और 2000 में सबसे पहले पेंशन जो है। भाजपा की सरकार ने खत्म किया था। उन्होंने कहा कि, जिससे लोग बहुत आक्रोश में है खास करके वह नौजवान जो 4 साल में बाहर कर दिया जाएगा ना उनको शहीद का दर्जा मिलेगा ना ही उनको पेंशन है। ना हीं कैंटीन की व्यवस्था है। यह देश के लिए और खासकर के नौजवानों के लिए सताने वाला काम किया जा रहा है, तंग किया जा रहा है परेशान किया जा रहा है। बिहार में खासतौर पर जो एनडीए की सरकार है जो अधिकारी है, वह लोग जाकर शिक्षकों को सता रहे और सबसे ज्यादा जो भुग्त भोगी है।

बालक का शव स्कूल परिसर से बरामद गुस्साई भीड़ ने आग लगायी

पटना। पटना शहर के दीघा इलाके में शुक्रवार को एक निजी स्कूल के परिसर से चार वर्षीय एक छात्र का शव बरामद होने के बाद आक्रोशित भीड़ ने स्कूल में आग लगा दी। पटना पुलिस के मुताबिक, दीघा थानांतर्गत एक बालक के गुम होने की सूचना प्राप्त हुई थी। तलाश के दौरान बालक का शव स्कूल के परिसर से बरामद किया गया है।

पुलिस ने बताया कि घटना के सिलसिले में तीन संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। स्कूल के सीसीटीवी फुटेज की भी जांच की जा रही है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा ने बताया मामला दर्ज कर जांच की जा रही है। एकत्र किए गए सभी सबूतों की फॉरेन्सिक जांच जारी है।

सहमति दोनों देशों के रक्षा मंत्रालयों के संयुक्त कार्य समूह की 12वीं बैठक उलानबटार में हुई

भारत और मंगोलिया रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढाने पर सहमत

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत और मंगोलिया ने रक्षा क्षेत्र में सहयोग को महत्वपूर्ण बताते हुए इसका दायरा बढाने पर सहमति व्यक्त की है और इस बारे में गहन विचार विमर्श किया है। रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को एक बयान जारी कर कहा कि दोनों देशों के रक्षा मंत्रालयों के संयुक्त कार्य समूह की 12वीं बैठक गुरूवार और शुक्रवार को मंगोलिया की राजधानी उलानबटार में हुई।

बैठक की सह-अध्यक्षता भारतीय रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव अमिताभ प्रसाद और मंगोलिया के रक्षा मंत्रालय के स्टेट सेक्रेटरी ब्रिगेडियर जनरल गनखुयाग दावागदोर्ज ने की। मंगोलिया में भारत के राजदूत अतुल मल्हारी गोत्सुर्वे भी इस बैठक में मौजूद थे। संयुक्त कार्य समूह की बैठक के दौरान दोनों पक्षों ने भारत और मंगोलिया के बीच रक्षा सहयोग पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने विभिन्न द्विपक्षीय रक्षा सहयोग गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा की। दोनों देशों ने इस दिशा में कदम आगे बढ़ाते हुए इन क्षेत्रों में सहयोग को और बढ़ाने के मुद्दों पर भी बातचीत की। दोनों पक्षों ने मौजूदा भू-राजनीतिक स्थिति पर भी अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। श्री प्रसाद ने भारत के रक्षा उद्योग की क्षमताओं एवं सामर्थ्य पर प्रकाश डाला और मंगोलिया के सशस्त्र बलों के साथ उपयोगी साझेदारी की आशा व्यक्त की। मंगोलियाई पक्ष ने भारतीय रक्षा उद्योग की क्षमताओं पर भरोसा व्यक्त किया। दोनों पक्षों ने भारत और मंगोलिया के बीच बढ़ते संबंधों को भी महत्व दिया। संयुक्त सचिव तथा भारतीय राजदूत ने मंगोलिया के उप रक्षा मंत्री बी बयारमगनई से भी भेंट की और द्विपक्षीय सहयोग के मुद्दों पर चर्चा की। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने उलानबटार में एक प्रशिक्षण प्रतिष्ठान का दौरा किया और वहां पर चल रही गतिविधियों की समीक्षा की। भारत के मंगोलिया के साथ सदियों पुराने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत संबंध हैं। दोनों देश एक-दूसरे को ह्यआध्यात्मिक पड़ोसीह्न मानते हैं। आधुनिक समय में लोकतंत्र, स्वतंत्रता और बाजार अर्थव्यवस्था जैसे मूल्य दोनों देशों को करीब लाते हैं।

संक्षिप्त समाचार

यात्रा मार्ग पर पसरा अतिक्रमण हटाया

ऋषिकेश, एजेंसी। पुलिस, तहसील व नगर निगम प्रशासन की संयुक्त टीम ने चारधाम यात्रा मार्ग पर पसरे अतिक्रमण के विरुद्ध कार्रवाई की। इसमें पुलिस अधिनियम के तहत 14 अतिक्रमणकारियों के चालान करते हुए 8750 रुपये का जुर्माना वसूला गया। चारधाम यात्रा को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने तहसील और नगर निगम की टीम के साथ मिलकर अतिक्रमण पर कार्रवाई की है। बुधवार को टीम ने श्यामपुर फाटक से नटराज चौक तक श्यामपुर, गुमानीवाला, अमित ग्राम, गौरा देवी चौक, नटराज चौक आदि स्थानों पर यात्रा मार्ग किनारे पसरे अतिक्रमण को हटाया। इसमें दुकानों के बाहर अतिक्रमण और सड़क किनारे रेहड़ी, फड़, ठेली आदि को हटाया गया। साथ ही भविष्य में दोबारा अतिक्रमण करने पर कठोर कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक एसएस बिष्ट ने बताया कि अभियान के दौरान टीम ने पुलिस अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए 14 अतिक्रमण कारियों के चालान किए। उक्त अभियान आगे भी जारी रहेगा।

बेरोजगार किसानों को रोजगार के लिए फूड वैन पर मिलेगा अनुदान

भीमताल, एजेंसी। बेरोजगार किसानों को रोजगार से जोड़ने के लिए मत्स्य विभाग की ओर से फूड वैन खरीदने पर अनुदान राशि दी जाएगी। सामान्य वर्ग को 40 प्रतिशत, एससी और एसटी को 60 प्रतिशत की अनुदान राशि फूड वैन को खरीदने के लिए दी जाएगी। विभाग प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत फूड वैन पर अनुदान राशि देगा। इसके लिए विभाग की ओर से वर्ष 2024-25 के लिए आवेदन लेने शुरू कर दिए गए हैं। फूड वैन पर किसान मछली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए मछली के पकौड़े और मछली से बने व्यंजन बेच सकेंगे। मत्स्य विभाग की ओर से दस लाख की फूड वैन खरीदने पर सामान्य वर्ग के किसान को चार लाख का अनुदान और एससी, एसटी वर्ग के किसान को छह लाख का अनुदान दिया जाएगा। विभाग की ओर से योजना का लाभ उन्हीं किसानों को मिल सकेगा जो बेरोजगार होगा और जिले का ही मूल निवासी होगा। विभाग की गठित टीम की ओर से जो किसान योजना के अनुरूप पाया जाएगा उसे ही अनुदान का लाभ दिया जाएगा। योजना में चयनित किसान को फूड वैन को सड़क पर लगाने के लिए खाद्य विभाग, अग्निशमन विभाग और नगर पालिका और नगर पंचायत से अनुमति लेनी अनिवार्य होगी। फूड वैन पर बेरोजगार किसानों को रोजगार करने के लिए अनुदान दिया जाएगा। इसके लिए मत्स्य विभाग की ओर से आवेदन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। फूड वैन में किसान मछली से जुड़े उत्पाद बेचकर अपनी आय अर्जित कर पाएंगे।

मरम्मत कार्य के चलते ठंडी सड़क पर मलबा गिरा, मार्ग बंद

नैनीताल, एजेंसी। ठंडी सड़क पर डीएसबी छात्रावास के नीचे भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र की मरम्मत कार्य के चलते इन दिनों सड़क पर मलबा गिर रहा है। जिससे मार्ग बंद हो गया है। ऐसे में लोगों ने सिंचाई विभाग से मलबा हटाकर रास्ता खोलने की मांग की है। सितंबर 2021 में ठंडी सड़क पर पहाड़ी में भूस्खलन होने से केपी छात्रावास का बड़ा हिस्सा दरक गया था। इससे आवाजाही बंद हो गई थी। लोनिवि की ओर से 8.31 लाख की राशि से अस्थाई ट्रीटमेंट किया गया था।

ट्रंचिंग ग्राउंड के कूड़े में लगी आग, सड़क पर छाई धुंध

हल्द्वानी, एजेंसी। आग को लेकर जिला प्रशासन ने गाइडलाइन जारी की है उधर नगर निगम का ट्रंचिंग ग्राउंड धधक रहा है। धुंए के गुबार के कारण गौजाजाली क्षेत्र में धुंध छाई हुई है। लोगों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। नगर निगम, ठेकेदार और पर्यावरण प्रदूषण बोर्ड के अधिकारी सुध लेने को तैयार नहीं है। ट्रंचिंग ग्राउंड की आग कभी भी जंगल में फैल सकती है। नगर निगम ने गौलापार बाईपास स्थित ट्रंचिंग ग्राउंड के कूड़े का निस्तारण करने का ठेका निजी कंपनी को दिया हुआ है। इस कंपनी का ही काम है कि आग बुझाए और कूड़े में आग न लगने दे। उधर बीते दिने तीन दिन से ट्रंचिंग ग्राउंड में भयंकर आग लगी है।

उत्तराखंड के इस जिले में अतिक्रमण पर चलेगा बुलडोजर, डीएम ने जारी कर दिए आदेश

हरिद्वार, एजेंसी। यायालय के आदेश पर नींद से जगे हरिद्वार जिला प्रशासन ने हाइवे पर यातायात को व्यवस्थित करने को अतिक्रमण हटाने के लिए कमर कसी है। वीरवार को जिलाधिकारी हरिद्वार धीराज सिंह गर्ब्याल ने लोनिवि तथा नगर निगम के अधिकारियों के साथ बैठक में नेशनल हाइवे से अतिक्रमण हटाने तथा अतिक्रमण के संबंध में न्यायालय के आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करने, अतिक्रमण हटाने से पूर्व तथा अतिक्रमण हटाने के बाद फोटोग्राफी कराने के निर्देश दिए।

बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि अतिक्रमण दोबारा न होने पाए, दोबारा अतिक्रमण करने पर प्रभावी कार्यवाही की जाए। कहा कि विकास अनवरत् चलने वाली सतत् प्रक्रिया है। इसलिए इस वर्ष के कावड़ मेले को पिछले वर्ष की तुलना में और अधिक सुविधाजनक बनाया जाये। बाहर से आने वाले यात्रियों को पार्किंग आदि की जानकारी के लिए चिन्हित स्थानों पर पार्किंग तथा विभिन्न स्थानों के दिशा-सूचक, रेट्रोरि,फ्लेक्टिंग हॉर्डिंग्स लगाई जाए।

उन्होंने एनएचएआई, लोनिवि तथा पुलिस विभाग के अधिकारियों को संयुक्त निरीक्षण करने तथा पार्किंग व यातायात व्यवस्था को और अधिक सरल व सुलभ बनाने के लिए पंतदीप पार्किंग से जल संस्थान तक सात मीटर चौड़ी स्लिप रोड एवं सर्विस रोड निर्माण कराने के भी निर्देश एनएचएआई के अधिकारियों को दिए।

रोड़ी बेलवाला चौकी के सामने दिशा-सूचक साइन बोर्ड लगाने, वीआईपी घाट मुख्य मार्ग पर स्थित गेट को बंद करने, निचले गेट से प्रवेश देने, केशव आश्रम के सामने आयरिश पुल एवं अंडर पास के नीचे सड़क की मरम्मत करने, के भी निर्देश दिये।

बैठक में एसपी क्राईम एवं यातायात पंकज गैरोला, अपर जिलाधिकारी पीएल शाह, उप जिलाधिकारी उदयवीर सिंह, सिटी मजिस्ट्रेट कुश्म चैहान, सचिव एचआरडीए उत्तम सिंह चौहान, अधिशासी अभियंता लोनिवि सुरेश तोमर, डिप्टी मैनेजर एनएचएआई अमित शर्मा, एसएनए श्यामसुन्दर प्रसाद सहित एनएचएआई के संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

समय से आपूर्ति न होने पर ग्रामीणों ने जताई नाराजगी

गदरपुर, एजेंसी। ग्राम पंचायत बकैनिया के मझरा मरदान गांव में पेयजल मिशन के तहत बने टैंक से खेतों में सिंचाई हो होती है, मगर समय से पानी की आपूर्ति होने पर आक्रोशित ग्रामीणों ने पेयजल निगम से मामले की शिकायत की। इस पर एई और जेई मौके पर पहुंचकर पंप आपरेटर को फटकार लगाकर निर्धारित समय पर पानी की आपूर्ति करने के निर्देश दिए।

बुधवार को जल निगम के एई अनिल शुक्ला और जेई सुशील कुमार ग्राम मझरा मरदान पहुंचे। वहां मौजूद ग्रामीणों का आरोप था कि पंप आपरेटर निर्धारित समय अवधि के बाद पेयजल निगम के टैंक से खेतों में पानी की आपूर्ति करता है। ग्रामीणों ने साक्ष्य के रूप में खेतों में पानी की आपूर्ति का वीडियो भी दिखाया। एई अनिल शुक्ला ने पंप आपरेटर को कड़ी फटकार लगाई। उन्होंने पेयजल टैंक में पानी के प्रेशर की भी जांच की और भविष्य में गलती होने पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी। ग्रामीणों ने पेयजल कनेक्शन उपलब्ध कराने की मांग भी की। वहां ग्राम प्रधान निर्मला रानी, संदीप कंबोज, गुरदयाल सिंह, कुलजीत सिंह, भजन लाल, मक्खन सिंह, सतनाम सिंह, कृपाल सिंह आदि मौजूद थे।

राजस्व उपनिरीक्षक को तीन वर्ष का कठोर कारावास

हल्द्वानी, एजेंसी। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम/विशेष न्यायाधीश भ्रष्टाचार निवारण हल्द्वानी नीलम रात्रा ने घूस लेने के मामले में राजस्व उपनिरीक्षक को दोषी पाते हुए तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई। साथ ही 25 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया।

विजिलेंस के सीओ अनिल मनराल ने बताया कि शिकायतकर्ता तरसेम सिंह निवासी मैनाझुंडी सितारगंज ने वर्ष 2018 में आय प्रमाणपत्र की रिपोर्ट लगाने के एवज में 5500 रुपये मांगने का आरोप लगाया था। एक मई 2018 को विजिलेंस की ट्रैप टीम ने राजस्व उप निरीक्षक राम सिंह को 5500 रुपये की घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया था। अभियोजन अधिकारी ने कोर्ट के सामने 11 गवाह पेश किए।

मनमानी : निशुल्क दवा काउंटर समय से पहले बंद करने का नोटिस चस्पा

हल्द्वानी, एजेंसी। कुमाऊं के सबसे बड़े अस्पताल एसटीएच में मनमानी की मार मरीजों पर पड़ रही है। अस्पताल में निशुल्क दवा काउंटर को समय से पहले बंद करने के कारण मरीजों को बाहर से महंगी दवा खरीदनी पड़ रही है। बाकायदा समय से पहले बंदी का नोटिस तक चस्पा कर दिया गया है। जिम्मेदार नोटिस से अंजान हैं और कार्रवाई की बात कह रहे हैं।

सुशीला तिवारी अस्पताल में ओपीडी पंजीकरण का समय सुबह आठ बजे से दोपहर दो बजे तक है। डॉक्टरों का ओपीडी में बैठने का समय सुबह नौ बजे से दोपहर तीन बजे तक है। नियमानुसार औषधि वितरण कक्ष भी तभी तक खुला रहना चाहिए, जब तक ओपीडी चलती है। पर अस्पताल के औषधि वितरण कक्ष के बाहर मरीजों के लिए दवा लेने का समय सुबह 9:30 बजे से दोपहर 2:30 बजे का मनामना नोटिस चस्पा कर दिया गया है। ऐसे में ढाई बजे बाद पहुंचने वाले मरीजों को बिना दवा लिए लौटना पड़ रहा है। इधर, जिम्मेदार इस नोटिस के बाबत जानकारी से इनकार कर रहे हैं।

धामों में भारी भीड़, ऑफलाइन पंजीकरण फलिहाल बंद; ऋषिकेश में रोके गए यात्रियों के सब्र का बांध टूटा

ऋषिकेश, एजेंसी। चार धामों में उमड़ी तीर्थयात्रियों की अप्रत्याशित भीड़ तथा यात्रा मार्गों पर लग रहे जाम को देखते हुए प्रशासन ने फलिहाल गंगोत्री और यमुनोत्री जाने वाले वाहनों को ऋषिकेश में ही रोक दिया है।

इसके अलावा ऑफलाइन पंजीकरण भी रोके गए हैं, जिससे ऋषिकेश में तीर्थयात्रियों का बैकलॉग बढ़ता जा रहा है। ऋषिकेश में फंसे यात्री तथा परिवहन व्यवसायियों का सब्र भी अब जवाब देने लगा है।

शुक्रवार को परिवहन व्यवसायियों तथा तीर्थयात्रियों ने ट्रांजिट कैंप स्थित यात्रा प्रशासन संगठन कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। उनका कहना था कि सरकार तथा प्रशासन की नाकामी के चलते तीर्थ यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ रही है।

कैबिनेट व उत्तरकाशी जनपद के प्रभारी मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के संबंध में स्थानीय प्रशासन से वार्ता की है। उन्होंने स्थानीय प्रशासन से कहा है कि यात्रा व्यवस्थित रहे इसके लिए कोई भी श्रद्धालु बिना दर्शन कर वापस न जाए, इसका विशेष ध्यान रखा जाए।

प्रेस में जारी एक बयान में कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने बताया कि उनके प्रभारी

जनपद उत्तरकाशी के पवित्र धाम गंगोत्री और यमुनोत्री में पिछले दिनों श्रद्धालुओं के बिना दर्शन कर लौटने की जानकारी मिली। जिसका संज्ञान लेते हुए उन्होंने स्थानीय प्रशासन से वार्ता की है। कहा है कि चार धाम यात्रा अपने चरम पर है। ऐसे में किसी भी श्रद्धालु को बिना दर्शन कर लौटने न दिया जाए।

व्यवस्थाओं में सभी लोग अपना सहयोग दें इसके लिए अग्रवाल ने यात्रा पर आ रहे श्रद्धालुओं से भी आग्रह किया है। वही स्थानीय प्रशासन ने कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल को बताया कि यात्रा सुचारू रूप से चल रही है इसके क्रम में मार्ग वन-वे किया गया है। गंगोत्री और यमुनोत्री धाम में अव्यवस्था न फैले, इसके लिए गाड़ियों में सवार श्रद्धालुओं को भंडारा आदि की व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है।

शराब बनाने वाली कंपनी में कर विभाग ने मारा छापा, चार साल से नहीं किया था टैक्स जमा; दस्तावेज जब्त

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। राज्य कर विभाग की विशेष अनुसंधान शाखा की टीम ने काशीपुर में शराब निर्माता कंपनी का औचक निरीक्षण किया। कंपनी की ओर से चार साल से टैक्स जमा नहीं कराया जा रहा था। कंपनी प्रबंधन ने मौके पर ही पांच लाख रुपये जमा कर दिए।

राज्य कर विभाग की विशेष अनुसंधान शाखा (एसआईबी) की टीम ने काशीपुर में शराब निर्माता कंपनी का औचक निरीक्षण किया। कंपनी की ओर से चार साल से वेट और सेस जमा नहीं कराया जा रहा था। कंपनी प्रबंधन ने मौके पर ही पांच लाख रुपये जमा कर दिए। टीम

ने दस्तावेजों को जब्त कर लिया है।

बुधवार दोपहर डेढ़ बजे एडिशनल कमिश्नर राकेश वर्मा के निर्देश डिप्टी कमिश्नर विनय प्रकाश ओझा की अगुवाई में एसआईबी की टीम ने काशीपुर के बाजपुर रोड स्थित शराब बनाने वाली काशीपुर बेयरवेजेज प्राइवेट लिमिटेड कंपनी पर छापा मारा। टीम ने कंपनी में शराब के स्टॉक की जानकारी एकत्र की। इसके साथ ही कच्चे माल का ब्यौरा भी लिया। टीम ने जरूरी जानकारी लेने के साथ ही कंपनी के दस्तावेज कब्जे में ले लिए।

प्रारंभिक तौर पर कंपनी की ओर से करोड़ों रुपयों का वेट और सेस जमा नहीं करने का मामला पकड़ में आया है। शराब में 12 फीसदी वेट और दो फीसदी सेस देना होता है। 2022 से पहले 20 फीसदी वेट जमा करना पड़ता था। डिप्टी कमिश्नर विनय प्रकाश ने बताया कि कंपनी की ओर से उत्पादों की बिक्री के बावजूद 2018-19 के द्वितीय त्रैमास से टैक्स जमा नहीं किया गया है। दस्तावेजों को जांचने के बाद टैक्स का आंकलन किया जाएगा। टैक्स की यह रकम काफी बड़ी हो सकती है। कंपनी की ओर से पांच लाख रुपये मौके पर जमा कराए गए हैं। टीम में असिस्टेंट कमिश्नर राहुल कांत आर्य, राज्य कर अधिकारी अनिल चौहान मौजूद रहे।

तीनपानी से मंडी तक सड़क फोरलेन करने का प्रस्ताव भेजा

हल्द्वानी, एजेंसी। बजट मिलने के साढ़े तीन वर्ष बीतने के बाद भी तीनपानी से मंडी तक फोरलेन हाईवे का काम एक इंच नहीं बढ़ पाया है। इस सड़क को दिसंबर 2020 में स्वीकृति मिली थी। लोक निर्माण विभाग ने सड़क बनाने के लिए 22 करोड़ का प्रस्ताव भेजा है। इसी सड़क के लिए एडीबी ने भी प्रस्ताव शासन को भेजा है। हाईवे नहीं बनने के कारण रोज इस सड़क पर जाम लग रहा है।

तीनपानी से लेकर मंडी तक सड़क की लंबाई 2.045 किलोमीटर है। तत्कालीन लालकुआं विधायक नवीन दुम्का ने इसे मुख्यमंत्री घोषणा में शामिल कराया था। दिसंबर 2020 में शासन ने इस सड़क को फोरलेन करने की स्वीकृति दी। यूटिलिटी शिफ्टिंग के लिए 1.10 करोड़ रुपया भी जारी किए। कई बार खबर प्रकाशित होने के बाद वन विभाग ने सड़क चौड़ीकरण की जद में आने वाले पेड़ों को कटा। इसके बाद भी विद्युत विभाग ने अब तक बिजली के पोल शिफ्ट नहीं किए हैं। उधर लोनिवि के अधिशासी अभियंता अशोक कुमार ने बताया कि बिजली के पोल शिफ्ट करने के लिए विद्युत विभाग को पत्र भेजा गया है। कहा कि सड़क चौड़ीकरण में 22 करोड़ रुपया खर्च होगा। इसकी स्वीकृति के लिए शासन को डीपीआर भेज दी गई है।

गंगोत्री-यमुनोत्री धाम में एक दिन में ठहर सकते पांच हजार श्रद्धालु

बड़कोट , एजेंसी। गंगोत्री और यमुनोत्री धाम में एक दिन में करीब पांच हजार श्रद्धालु ठहर सकते हैं। गंगोत्री धाम में जहां होटल और आश्रम दोनों में श्रद्धालु ठहर सकते हैं, वहीं यमुनोत्री धाम में होटल नहीं होने से केवल आश्रम ही उपलब्ध हैं।

गंगोत्री धाम में करीब 50-60 छोटे-बड़े होटल हैं। इसके अलावा गढ़वाल मंडल विकास निगम का गेस्ट हाउस भी है। धाम में छह से सात आश्रम हैं, जो श्रद्धालुओं को रुकने की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं।

होटल में जहां श्रद्धालुओं को एक हजार से लेकर ढाई हजार रुपये तक का कमरा मिल जाता है। वहीं, कई आश्रम श्रद्धालुओं को निशुल्क ठहरने की सुविधा प्रदान करते हैं। हालांकि, यहां श्रद्धालु सुविधा के बदले में अपनी

इच्छानुसार दान दे सकते हैं।

एक अनुमान के मुताबिक, धाम में एक दिन में करीब तीन से साढ़े तीन हजार तक श्रद्धालु ठहर सकते हैं। उधर, यमुनोत्री धाम में कोई होटल तो नहीं है, लेकिन धाम में कालिंदी आश्रम, यमुना आश्रम, रामानंद, हनुमान मंदिर आश्रम मौजूद हैं। जहां करीब 500 श्रद्धालु रुक सकते हैं।

आश्रम में श्रद्धालुओं को 150 से 200 रुपये प्रति श्रद्धालु की दर से हॉल में एक बेड और 400 से 500 रुपये में कमरा मिल जाता है।

जिला पर्यटन अधिकारी केके जोशी ने बताया, यमुनोत्री धाम में होटल नहीं है। गंगोत्री धाम में होटल तो हैं, लेकिन वे सभी वन विभाग या नजूल भूमि पर होने से उनका पर्यटन विभाग में पंजीकरण नहीं है। धाम में एक दिन में कितने श्रद्धालु या पर्यटक ठहर सकते हैं। इसका कोई आधिकारिक डाटा उपलब्ध नहीं है।

गढ़वाल मंडल विकास निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक वीरेंद्र गुसाईं ने बताया, गंगोत्री धाम के साथ धाम के पड़ाव उत्तरकाशी, हर्षिल, भैरोंघाटी में निगम के गेस्ट हाउस हैं, जिसमें कुल 240 पर्यटक ठहर सकते हैं।

वहीं, यमुनोत्री धाम के पड़ाव बड़कोट, फूलचट्टी, असनोलगाड व जानकीचट्टी में भी जीएमवीएन के गेस्ट हाउस हैं। इसमें भी 256 पर्यटक रुक सकते हैं। गेस्ट हाउस में कमरे 1200 से 4500 रुपये की रेंज में उपलब्ध हैं।

लालपुर में सर्विस लेन पर अतिक्रमणकारियों का कब्जा

किच्छा, एजेंसी। ग्राम सभा से नगर पंचायत बन चुके हाईवे पर स्थित कस्बा लालपुर में सर्विस लेन पूरी तरह अतिक्रमण का शिकार हो चुकी है। हालत यह हैं कि सर्विस लेन पर अवैध पार्किंग, ठेले, रेहड़ी, मैकेनिक कब्जा कर चुके हैं। इन पर अंकुश लगाने में पुलिस प्रशासन का रवैया ढीला रहा है। रोज दुर्घटनाएं हो रही हैं लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा।

लालपुर क्षेत्र में टोल प्लाजा से आगे ग्राम शिमला तक दो किलोमीटर हिस्से में सर्विस लाइन पर खड़े ट्रक, बस मेटाडोर और खाने के रेहड़ी चाट पकौड़ी की दुकानों के कारण लोगों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। पुलिस विभाग भी इस पर कोई कार्रवाई नहीं कर रहा। यहां पर बने अंग्रेजी शराब के ठेके के सामने कार जीप आदि खड़ी रहती हैं, जो न केवल दुर्घटनाओं को बढ़ावा दे रही हैं बल्कि यातायात के लिए भी परेशानी का सबब बन रही हैं। लालपुर व्यापार मंडल के अध्यक्ष सरदार सुबेग सिंह ने बताया कि उन्होंने कई बार पुलिस से शिकायत की लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई।

बाजपुर को बाढ़ से बचाने की तैयारी

बाजपुर, एजेंसी। लेवड़ा नदी के सफाई कार्य की टेंडर प्रक्रिया शुरू हो गई है।12 मई के अंक में अमर उजाला ने बाजपुर वासियों पर फिर मंडरा रहा बाढ़ का खतरा शीर्षक से समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया था। 12 मार्च 24 को बाजपुर आगमन पर सीएम पुष्कर सिंह धामी ने बाजपुर को बाढ़ से निजात दिलाने की घोषणा की थी। इस घोषणा के अनुरूप प्रशासन की ओर से कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

बुधवार को लेवड़ा नदी की बाढ़ के समाधान के लिए पूर्व दर्जा मंत्री राजेश कुमार की अगुवाई में एक प्रतिनिधि मंडल डीएम उदयराज सिंह से मिला। डीएम ने लेवड़ा सफाई कार्य जल्द शुरू करने का भरोसा दिया है। डीएम से वार्ता कर लौटे भाजपा नेता राजेश ने बताया कि बाढ़ से निजात दिलाने के लिए लेवड़ा नदी का सफाई कार्य सहित अन्य कार्य कराने के लिए टेंडर होने जा रहे हैं। बताया कि डीएम ने भरोसा दिया है कि एक सप्ताह के भीतर कार्य शुरू हो जाएगा। प्रतिनिधि मंडल में लोकतंत्र सेनानी गोपाल कोछड़, व्यापार मंडल महामंत्री ललित कोछड़, राजेंद्र गोयल, अशोक जिंदल,राजेंद्र पाल सेठी, अमित चौहान, रितेश शर्मा, कर्मजीत सिंह शामिल रहे।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण

नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024

कांग्रेस प्रत्याशियों को नहीं मिल रहा अपनों का साथ

- कुछ खुलकर तो कुछ साथ खड़े रहकर भी कर रहे हैं जमकर भीतरघात
- आम आदमी पार्टी को ही संभालती पड़ रही है कांग्रेस प्रत्याशियों की कमान

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

लोकसभा चुनाव को लेकर दिल्ली में मतदान को लेकर शुरू हुई उल्टी गिनती और चुनाव प्रचार में अब एक सप्ताह का समय शेष रहने के बावजूद कांग्रेस प्रत्याशियों के लिए सबसे बड़ी परेशानी यही है जहां आम आदमी पार्टी और उनके कार्यकर्ता खुलकर उनके लिए प्रचार कर रहे हैं वहीं कांग्रेस के अपने में स्थानीय स्वयंभू नेता या तो खुलकर पार्टी प्रत्याशी का विरोध कर रहे हैं नहीं तो प्रत्याशी के साथ तो चल रहे हैं लेकिन उसका फायदा करने की जगह उसका उल्टा नुकसान कर रहे हैं हालात यहां तक है की स्थानीय नेता भाजपा प्रत्याशियों के आगे समर्पण कर हुए हैं यह स्थिति कांग्रेस के लिए बड़ी विषम बनी हुई है। दिल्ली में गठबंधन के तहत हालांकि अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस पार्टी को तीनों ही मजबूत लोक सभा सीट दी हुई है जहां पर समीकरण गठबंधन के पक्ष में जाता है लेकिन सबसे बड़ी परेशानी यह है कि कांग्रेस के लोग ही वहां अपने पार्टी प्रत्याशी को हराने के लिए जमकर भीतर घात कर रहे हैं यह बात प्रत्याशी को भी पता है लेकिन चुनाव के चलते मजबूरी है कि उन्हें चुप रहना पड़ रहा है: कांग्रेस के पक्ष में जो तीन लोकसभा सीट है उनमें उत्तर पूर्वी दिल्ली चांदनी चौक उत्तर पश्चिम दिल्ली है यह तीनों समीकरणों के हिसाब से इस समय जीतने वाली सीट मानी जा रही है उत्तर पूर्वी दिल्ली सीट का जहां तक समीकरण है इस सीट पर मुस्लिम अनुसूचित जाति के मतदाता अपने में निर्णायक की स्थिति में है यदि यह एक तरफा मतदान करते हैं तब चुनाव की सूरत बदल सकते हैं इस क्षेत्र में सीलमपुर मुस्तफाबाद बाबरपुर सीमापुरी गोकलपुरी विधानसभा क्षेत्र इस समय गठबंधन के प्रत्याशी के लिए पक्ष में नजर आ रहे हैं भारतीय जनता पार्टी के लिए बड़ी बढ़त वाले क्षेत्रों में फिलहाल रोहतास नगर गोंडा तिमारपुर की सीट मानी जा रही है बुराड़ी में इस बार संघर्ष बताई जा रहा है जहां से मनोज तिवारी पिछली बार एक लाख से बढ़त ले गए थे इस तरह यहां रोमांचक मुकाबला है लेकिन यह निर्भर तब है कि मतदान कितना किसके पक्ष में होगा। चांदनी चौक सीट पर कांग्रेस ने जरूर अपने सबसे अनुभवी प्रत्याशी के रूप में जयप्रकाश अग्रवाल को उतारा है जो इस क्षेत्र से तीन बार सांसद रह चुके हैं इसके अलावा तीन बार में चुनाव हारे भी हैं लेकिन उसे समय समीकरण अलग थे विजय गोयल से जब वह चुनाव हारते थे उसे समय तीसरी ताकत के रूप में शोएब इकबाल उतरते थे और वह कांग्रेस प्रत्याशी के बराबर ही वोट काटा करते थे जिसका लाभ सीधे भाजपा को मिलता था हालांकि कांग्रेस एकजुट नजर आ रही है। उत्तर पश्चिम दिल्ली सीट पर कांग्रेस ने भाजपा से आए इसी क्षेत्र से सांसद रहे उदित राज को टिकट दिया है यहां भी आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता उनके पक्ष में पूरी तरह जुटे हुए हैं लेकिन भारतीय जनता पार्टी को लाभ यहां यह मिल रहा है कि कांग्रेस के पुराने दिग्गज जमकर यहां पर अपने प्रत्याशी का विरोध कर रहे हैं जिनका अपने में आधार भी है और यह स्थिति बड़ी ही विचलित करने वाली है। बताया जाता है की जयप्रकाश अग्रवाल के अलावा कन्हैया कुमार हो या उदित राज उन्हें साफ पता है की किस विधानसभा क्षेत्र से दिखाने के लिए तो उनकी पार्टी के लोग उनके साथ खड़े हैं लेकिन रात को वह दंडवत भाजपा प्रत्याशी के साथ हैं इसलिए वह उनके सहारे नहीं वहां के मजबूत कार्यकताओं को अपना आधार बनाए हैं और यहां तक कहे हैं की चुनाव है किसको प्रभारी बनाना है किसको मतदान केंद्र जिम्मेदारी देनी है यह भी संगठन के लोग कर रहे हैं वह यहां विवाद नहीं करना चाहते लेकिन उन्हें अच्छी तरह पता है कि वह लोग उन्हें चुनाव जीतने नहीं हराने में लगे हैं इसलिए आप लोग काम करिए हम चुनाव जीते या हारे आपके साथ खड़े रहेंगे।

मुख्यमंत्री आवास के सीसीटीवी फुटेज की जाँच होते ही सत्य सामने आएगा : मालीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी (आप) की सांसद स्वाति मालीवाल ने शुक्रवार को कहा कि मुख्यमंत्री आवास पर उनके साथ हुयी बदसलूकी में आरोपी को बचाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन मुख्यमंत्री आवास के अंदर के सीसीटीवी फुटेज की जांच होते ही सत्य सबके सामने आ जायेगा।

सुश्री मालीवाल ने शुक्रवार को बिना किसी का नाम लिये कहा कि घटना का आधा-अधूरा वीडियो डालकर अपराध करने वाले को बचाने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा, हर बार की तरह इस बार भी इस राजनीतिक हिटमैन ने खुद को बचाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। बिना संदर्भ का आधा वीडियो चलाकर इसे लगता है ये इस अपराध को अंजाम देके खुद को बचा लेगा। कोई किसी को पीटते हुए वीडियो बनाता है भला? घर के अंदर और कमरे के सीसीटीवी फुटेज की जाँच होते ही सत्य सबके सामने होगा।ह्व आप नेता ने कहा, जिस हद तक गिर सकता है गिर जा, भगवान सब देख रहा है। एक न एक दिन सब की सच्चाई दुनिया के सामने आएगी।

सुश्री मालीवाल से हुई बदसलूकी के मामले में सोशल मीडिया पर एक वीडियो सामने आया है। यह वीडियो मुख्यमंत्री आवास के अंदर का बताया जा रहा है, हालांकि फि लहाल इसकी पुष्टि नहीं हो पाई है। वीडियो में दिख रहा है कि सुश्री मालीवाल एक हॉल के अंदर बैठी हैं जहां कुछ सुरक्षाकर्मी उन्हें बाहर जाने को कह रहे हैं। सुश्री मालीवाल गुस्से में कह रही हैं कि उन्होंने दिल्ली पुलिस को फोन किया है। पुलिस के आने के बाद वह यहां से चली जाएंगी। गौरतलब है कि सुश्री मालीवाल 13 मई को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलने उनके आवास पर गयी थी। उन्होंने शिकायत में दावा किया है कि जब वह ड्राइंग रूम में इंतजार कर रही थी, उसी समय मुख्यमंत्री के पी ए विभव कुमार ने उनके साथ साथ बदसूलकी की। इस मामले में उन्होंने कल पुलिस के समक्ष अपना बयान भी दर्ज कराया था।

भारतीय जनता पार्टी दिल्ली में जीत रही है सभी सातों सीट : शिव कौशिक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी के सामाजिक कार्यकर्ता और वरिष्ठ नेता शिव कौशिक ने कहा की दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी तीसरी बार भी सभी सात सीटों पर बड़े अंतराल के साथ जीतने जा रही है दिल्ली की जनता का विश्वास उसके साथ बरकरार है और इसका लाभ उन्हें मिल रहा है। शिव कौशिक ने कहा कि इस बार का चुनाव नरेंद्र मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के लिए हो रहा है और पार्टी का नारा इस बार 400 पर का है और इसमें हमें पूरी सफलता मिलने जा रही है विपक्षी भले ही अपनी बौखलाहट में कुछ भी कहते रहे लेकिन मतदाता भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में वोट दे रहे हैं आने वाली 25 तारीख को दिल्ली के मतदाता भी सभी सीटों पर भाजपा को जीतने जा रहे हैं इसमें कहीं कोई भ्रम की स्थिति नहीं है इसलिए साफ हो चुका है कि भाजपा जीतने जा रही है।

शिव कौशिक ने कहा कि कांग्रेस का और आम आदमी पार्टी का किसी भी क्षेत्र में कोई आधार नहीं है इसलिए उनके प्रत्याशी चुनाव में पूरी तरह पराजित होंगे क्योंकि उन्होंने टिकट ऐसे लोगों को दिए हैं जिन्हें देखकर ही मतदाता नाराज है उत्तर पूर्वी दिल्ली से कन्हैया कुमार को प्रत्याशी बना गठबंधन ने पहले ही दिन अपनी पराजय मान ली है यह कौन व्यक्ति है इसे हर व्यक्ति जानता है और इसको टिकट देकर गठबंधन ने अपनी मानसिकता बता दी है।

पॉलिटिकल हिटमैन खुद को बचाने की कोशिश कर रहा है: मालीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास का कथित सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद आम आदमी पार्टी (आप) की सांसद स्वाति मालीवाल ने शुक्रवार को कहा कि पॉलिटिकल हिटमैन ने स्वयं को बचाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। मालीवाल 52 सेकंड के वीडियो में मुख्यमंत्री के आवास में सुरक्षाकर्मियों से बहस करती नजर आ रही हैं।

केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार ने मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास पर सोमवार को मालीवाल पर कथित तौर पर हमला किया था। दिल्ली पुलिस ने बृहस्पतिवार को इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की और कुमार को आरोपी बनाया।

मालीवाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर किसी का नाम लिए बगैर लिखा, हर बार की तरह इस बार भी इस पॉलिटिकल हिटमैन ने खुद को बचाने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। उन्होंने कहा, इसे लगता है कि वह इस अपराध को अंजाम देने के बाद अपने लोगों से ट्वीट कराके संदर्भहीन वीडियो साझा करके खुद को बचा लेगा। कोई किसी की पिटाई का वीडियो बनाता है भला? आवास के अंदर और कमरे की सीसीटीवी फुटेज की जांच होते ही सच सबके सामने आ जाएगा। कथित वीडियो में मालीवाल को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि उन्होंने पुलिस नियंत्रण कक्ष को फोन किया है और वह पुलिस कर्मियों के आने तक इंतजार करेंगी। वह वीडियो में कह रही हैं, आज मैं इन लोगों को सबको बताउंगी। मुझे डीसीपी (पुलिस उपायुक्त) से बात करने दो। वह सुरक्षाकर्मी को चेतावनी देती सुनाई दे रही हैं कि यदि वह उन्हें छूता है तो वह उसे भी नौकरी से निकलवा देंगी।

ईस्ट गोरख पार्क में जोरों शोरों से शुरू हुआ डोर टू डोर कैंपेन

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

उत्तरी पूर्वी लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत बाबरपुर जिले के ईस्ट गोरख पार्क में जोरों शोरों से शुरू हुआ इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी कन्हैया कुमार के समर्थन में डोर टू डोर कैंपेन। संजीव शर्मा ने बताया की डोर टू डोर कैंपेन में हमने प्रत्येक घर में कांग्रेस के न्याय पत्र को वितरित किया, ईस्ट गोरख पार्क क्षेत्र की जनता को कांग्रेस के पांच न्याय से अवगत कराया एवं सभी से अपील करी की 25 मई के दिन बैलट नंबर दो पर हाथ के चुनाव चिन्ह पर बटन दबाकर इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी कन्हैया कुमार को भारी मतों से विजयी बनाए। इस डोर टू डोर कैंपेन में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता भी शामिल हुए और सभी ने जनता से इंडिया गठबंधन को जीत दिलाने की अपील करी। डोर टू डोर कैंपेन में सभी क्षेत्र की जनता ने इंडिया गठबंधन के ऊपर अपना भरोसा दिखाते हुए इंडिया गठबंधन को विजयी बनाने का संकल्प लिया क्योंकि नरेंद्र मोदी की तानाशाही सरकार से जनता परेशान आ गई है और अब इंडिया गठबंधन की तरफ ही पूरा देश नई उम्मीद एवं उत्साह से देख रहा है। डोर टू डोर कैंपेन में संजीव शर्मा, संजय आनंद, नैन सिंह, जोगिंदर शर्मा विक्की, चो राजपाल नागर, दीपक अरोड़ा, कैलाश शर्मा, मनमोहन वशिष्ठ, रवि वर्मा, रजनीश त्रिखा, मंजीत सिंह, शिवा कौशिक शामिल हुए एवं ईस्ट गोरख पार्क की जनता भी कैंपेन में जुड़ती चली गई।

आईपी यूनिवर्सिटी के दाखिले में अब सिंगल गर्ल चाइल्ड कोटा भी

नई दिल्ली। आईपी यूनिवर्सिटी ने सत्र 2024-25 से अपने सभी यूनिवर्सिटी स्कूल और सेंटर में चलने वाले यूजी और पीजी प्रोग्राम में एक सीट का अतिरिक्त सिंगल गर्ल चाइल्ड कोटा देने का निर्णय लिया है। यूनिवर्सिटी के कुलपति पद्मश्री प्रो. (डॉ.) महेश वर्मा ने बताया कि इससे महिला सशक्तिकरण को संबल मिलेगा। यह कोटा उनके सपनों को मूर्त रूप देने में सहायक साबित होगा। यूनिवर्सिटी स्कूल एवं सेंटर के सभी यूजी एवं पीजी प्रोग्राम में एक-एक अतिरिक्त सीट इस कोटे के तहत भरा जा सकेगा। यह सीट किसी प्रोग्राम के लिए तयशुदा इंटेक से अतिरिक्त होगी। अगर किसी परिवार में दोनों जुड़वा बच्चे गर्ल है तो दोनों बच्चे इस कोटा के दायरे में आएँगे। यह सीट अखिल भारतीय स्तर पर भरा जाएगा। इसमें दिल्ली या आउटसाइड दिल्ली का अलग-अलग कोटा नहीं होगा। किसी भी प्रोग्राम में दाखिला उस प्रोग्राम के लिए निर्धारित मेरिट पर होगा। सिर्फ.कोटा के आधार पर दाखिला नहीं होगा। इस कोटा की आवश्यक अर्हता पूरी करने वाले आवेदक इस सत्र से इसका फायदा ले सकते हैं।

गौशाला की भूमि को पालिका ने ग्रामीण से कराया कब्जा मुक्त

प्रात: किरण संवाददाता

स्योहारा। गुरुवार शाम एसडीएम धामपुर रितु चौधरी के आदेश पर नायब तहसीलदार स्योहारा राजकमल के नेतृत्व में राजस्व की टीम थाना स्योहारा के गांव सलेमपुर झिल्ला और मेवानवादा पहुंची। सबसे पहले तहसील प्रशासन ने नायब तहसीलदार राजकमल के नेतृत्व में राजस्व टीम और नगर पालिका परिषद स्योहारा की ओर से अधिशासी अधिशासी विजेंद्र सिंह पाल के नेतृत्व में नगर पालिका की टीम ने ग्राम सलेमपुर झिल्ला में पहुंचकर गोशाला के लिये स्योहारा नगर पालिका को दी गई 16 बीघा भूमि को स्योहारा थाना पुलिस प्रशासन के सहयोग से ग्रामीणों द्वारा अवैध रूप से किये गये कब्जे से मुक्त कराया। एस.डी.एम. एवं तहसील प्रशासन ने गोशाला के लिए 16 बीघा भूमि नगर पालिका स्योहारा को दी थी। लेकिन कुछ ग्रामीणों उस पर अवैध कब्जा कर सामूहिक रूप से खेती कर फसल बो रहे थे। उक्त भूमि को कब्जामुक्त कराकर नगर पालिका परिषद स्योहारा को सौंप दिया गया है। इसके अलावा मेवा नवादा में भी तालाब की 22 बीघा भूमि पर भी कुछ ग्रामीणों ने कब्जा कर रखा था। एसडीएम रितु चौधरी ने बताया कि तहसील प्रशासन ने कई बार चेतावनी दी थी। लेकिन कब्जाधारियों ने कब्जा नहीं हटाया। जिस पर गुरुवार को टीम पुलिस के साथ पहुंची और तालाब की भूमि को कब्जा मुक्त कराया।उन्होंने बताया कि इस भूमि को कब्जा मुक्त कराकर खण्ड विकास कार्यालय प्रशासन के सुपुर्द कर दिया गया है।

ग्रुप के 9 साल पूरे होने पर शानदार म्यूजिकल शो आयोजित

नई दिल्ली। रिदम स्टार म्यूजिकल ग्रुप के सफलतापूर्वक 9 वर्ष पूरे होने की खुशी में एक शानदार म्यूजिकल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संगीत समारोह में उपस्थित वहा पर मौजूद गायक गायिकाओं, गेस्ट, सेलिब्रिटी व अन्य सदस्यों ने रिदम स्टार म्यूजिकल ग्रुप के डायरेक्टर्स सुनील सुनेजा, कविता गर्ग एवं अनुज अग्रवाल को बधाई व शुभकामनाएं दी। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने अपने संगीत व डांस का प्रदर्शन कर अपने हुनर से वहा उपस्थित लोगो का दिल जीत लिया और उन्हें भी डांस करने के लिए मजबूर कर दिया। कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर संजीव सूरी व राधिका अग्रवाल मौजूद रहे। कार्यक्रम के आयोजक व डायरेक्टर सुनील सुनेजा, कविता गर्ग एवं अनुज अग्रवाल के साथ कार्यक्रम में मौजूद बाकी सिंगर्स जिसमें प्रिया बंसल, सुभाष कश्यप, सुभाष गुप्ता, रवि जोशी, महेंद्र शर्मा, अब्दुल बसित, कंवल बजाज, राजेश सिंह, राजीव अग्रवाल, विजेंद्र शर्मा, रुचिका अरोड़ा, सोनल अग्रवाल, नीरज टंडन, अनन्या टंडन, पूनम सैनी, खालिद, राकेश अजय सिंह इन सभी सिंगर्स ने भी अपनी मधुर आवाज से कार्यक्रम में बैठे लोगो का दिल जीत लिया और मंच पर धमाल मचा दिया जिससे सभी लोग झूमने लगे, जिसकी सभी ने सराहना भी की। रिदम स्टार ने हमेशा की तरह इस बार भी अपने प्रोग्राम में नॉन प्रोफेशनल सिंगर को शामिल कर उनको आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

इंडी अलायंस की सरकार दिल्ली में प्रदूषण के खिलाफ प्राथमिकता से काम करेगी : जयराम रमेश

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने पर्यावरण प्रदूषण को दिल्ली सहित पूरे देश के लिए अहम मुद्दा बताते हुए कहा कि इंडी गठबंधन की सरकार दिल्ली में प्रदूषण के खिलाफ प्राथमिकता से काम करेगी और तय समय सीमा के अंदर फर्क दिखाएगी।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने शुक्रवार को यहां पार्टी के प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि देश में चार चरणों का चुनाव हो चुका है और आने वाली 25 मई को दिल्ली में चुनाव होने वाला है। उन्होंने कहा कि इन चार चरणों के बाद यह साफ हो गया है कि इस बार इंडी गठबंधन की सरकार बनने जा रही है। कांग्रेस नेता ने कहा कि इंडी गठबंधन सरकार बनाने जा रहा है और उसकी प्राथमिकता राष्ट्रीय राजधानी में वायु और यमुना नदी में प्रदूषण सहित पांच पर्यावरणीय मुद्दों पर काम करना होगा। इसमें वायु प्रदूषण, अरावली का वनीकरण, यमुना एक्शन प्लान को पुनर्जीवित करना शामिल है।

उन्होंने कहा कि देश में पर्यावरण एक बहुत जरूरी मुद्दा है। यह किसी विशेष व्यक्ति या समुदाय की बात नहीं है बल्कि यह हर व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात है। दिल्ली के चुनाव में पर्यावरण एक विशेष स्थान रखता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली के पर्यावरण के लिए केंद्र सरकार प्राथमिक रूप से जिम्मेदार है, क्योंकि दिल्ली में प्रदूषण की समस्या आसपास के अलग-अलग राज्यों से भी जुड़ी हुई है। आज सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए वायु प्रदूषण एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है। पर्यावरण के मुद्दे पर केंद्र सरकार को घेरते हुए कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि यदि आप दुनिया भर के महानगरों को देखें तो दिल्ली सबसे प्रदूषित शहरों में से एक होगा। दिल्ली के आसपास 11 बिजली स्टेशन हैं, जो कोयला उपयोग करते हैं। 2009 में सारे बिजली स्टेशनों के लिए वायु प्रदूषण मानक तय किए गए थे, जो इसको लागू नहीं करते थे, उसे बंद करा दिया जाता था। आज असलियत यह है कि 11 बिजली स्टेशनों में से 9 में किसी न किसी तरह मानकों का उल्लंघन हुआ है। मोदी सरकार ने इस पर कोई एक्शन नहीं लिया। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार कह रही है कि 2027 तक प्रदूषण के मानकों का पालन किया जा सकता है। दिल्ली के आसपास के 11 बिजली स्टेशनों की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है, जिनमें मानकों का लगातार उल्लंघन होता रहा है। इसका नतीजा सार्वजनिक स्वास्थ्य पर पड़ा है।

वाल्मीकि समाज के लोगो ने किया हर्ष का स्वागत

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के लोकसभा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा के समर्थन में वाल्मीकि समाज के प्रमुख लोगो व पटपड़गंज गाँव के स्थानीय नागरिकों द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर पूर्व महापौर राम नारायण दुबे कार्यक्रम संयोजक नीरज बागड़ी निगम पार्षद रेणु चौधरी जिला उपाध्यक्ष पंकज कोचर जिला मंत्री जितेन्द्र चौधरी मंडल अध्यक्ष रोहित चौधरी विकास चौटाला मंडल उपाध्यक्ष व कार्यक्रम सह संयोजक पूर्व मंडल अध्यक्ष महेन्द्र दुबे उपस्थित रहे। इस अवसर पर हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि व इसी क्षेत्र से महापौर थे व जनता की समस्याओं से अवगत है। आने वाली 4 जून के बाद से ही लगातार क्षेत्र में रहकर समस्याओं को दूर करूंगा। इस अवसर पर नीरज बागड़ी ने विश्वास दिलाया कि समाज व क्षेत्रीय जनता उनके साथ है।

स्वाति को खुद लड़ना होगा अब कोई कृष्ण भगवान बचाने नहीं आयेंगे : नवीन जहिंद

नई दिल्ली। जयहिंद सेना प्रमुख डॉ नवीन जयहिंद ने स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट में दर्ज एफआईआर को लेकर कहा कि अब तक जो इस पुरे मामले को झूठ बता रहे थे उन्हें अब सच पता चल गया होगा कि स्वाति के साथ मारपीट किस साजिश के तहत हुई है। हालाँकि अभी तक उनके पास कोई एफआईआर कॉपी नहीं आई है लेकिन मीडिया के हवाले से जो सुचना उन्हें मिली है उससे साफ है कि स्वाति के साथ कितना बुरा व्यवहार हुआ। कितनी बुरी तरह से उसे पिटा गया है। जयहिंद ने कहा कि दिल्ली पुलिस से अपील है इस मामले की पूरी तह तक जांच की जाए और वो अपराधी जो भागता फिर रहा है उसे जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए। उससे इस पूरी घटना के बारे में उगलवाया जाये। उसकी इतनी हिम्मत नहीं थी वो स्वाति पर हाथ उठता। साथ स्वाति को भी समझना होगा कि कलयुग में कोई कृष्ण भगवान उसे बचाना के लिए नहीं आएगा। खुद न्याय के लिए लड़ना होगा और आगे आना होगा। साथ ही जयहिंद ने स्वाति मालीवाल पर सवाल खड़ा करने वाले लोगों को भी सवालों के घेरे में लाते हुए कहा कि उनके घर में भी बहन -बेटी, माँ होगी अगर कोई उनके साथ ऐसा करें तब भी वो यही करेंगे।

400 के टारगेट में दिल्ली का होगा शत-प्रतिशत योगदान : धामी

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी रामवीर सिंह बिधूड़ी के समर्थन में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विशाल जनसभाओं को संबोधित किया। उन्होंने जनसभाओं में उमड़ी भीड़ को देखकर कहा कि दक्षिण दिल्ली से बिधूड़ी के साथ-साथ दिल्ली की सातों सीटों पर भाजपा बड़े अंतर से चुनाव जीतने वाली हैं। मोदी जी का 400 सीटों का टारगेट पूरा करने में दिल्ली शत-प्रतिशत योगदान देने वाली है। धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरे विश्व में भारत का सम्मान बढ़ा है। भारत विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है जबकि एक दशक पहले भारत विश्व की अर्थव्यवस्था में एक गरीब देश माना जाता था। ऐसा देश माना जाता था जिस पर अरबों का कर्ज था। अब पूरे विश्व की निगाहें भारत पर लगी हुई हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने पिछले दस वर्षों में वह कर दिखाया जो 70 सालों में नहीं हो सका। इसकी वजह सरकार की इच्छाशक्ति और दृढ़ता है। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की मजबूत सरकार ने चाहे कश्मीर से धारा-370 हटाने का काम हो, सीएए लागू करने का काम हो या फिर अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर को बनाने का काम हो, कभी हिचक नहीं की। भाजपा ने वे कार्य किए जिन्हें इससे पहले लोग असंभव कहा करते थे। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने इंडी गठबंधन का भी मजाक उड़ाया और कहा कि इंडी गठबंधन तो केवल अपना भ्रष्टाचार छिपाने, अपने परिवारों को बढ़ाने और तुष्टिकरण की नीति को आगे बढ़ाने के लिए बना है। चुनाव के बाद यह पूरी तरह बिखर जाएगा। अभी से ही यह हालत है कि इंडी गठबंधन की पार्टियां एक-दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ रही हैं। उन्होंने दक्षिण दिल्ली से भाजपा उम्मीदवार रामवीर सिंह बिधूड़ी की प्रशंसा करते हुए कहा कि राजनीति में उनका चार दशक का अनुभव जनता के दिलो-दिमाग पर उनकी विकास पुरुष के रूप में छवि से साफ नजर आता है। जनता को यह विश्वास है कि बिधूड़ी जीत गए तो फिर संगम विहार और देवली जैसे पिछड़े हुए इलाकों का जमकर विकास होगा।

नई दिल्ली नगर पालिका परिषद क्षेत्र में भी सीवर व्यवस्था है बदहाल

- सब कुछ जानते हुए भी अधिकारी लगाए हुए हैं चुप्पी
- क्षेत्र की जनता है इन हालातो से परेशान

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

सीवर व्यवस्था खराब होने से दिल्ली के अन्य हिस्सों से तो रोजाना खबर आती ही रहती हैं लेकिन राजधानी दिल्ली का दिल माने जाने वाले नई दिल्ली क्षेत्र में भी हालात कहीं और ज्यादा खराब है यह सुनने में अजीब जरूर लगे लेकिन हकीकत यही है कि यहां के लोगों को भी खराब व्यवस्था का सामना करना पड़ रहा है सामना करना पड़ रहा है चौंकाने वाली बात तो यह है की कई क्षेत्रों में तो अंग्रेजों के जमाने की बिछी सीवर लाइन ही चल रही है भले ही वह गल सड़ गई हो लोग मजाक में रहते हैं कि शायद पुरातत्व विभाग ने तो कार्रवाई करने से तो नहीं रोक रखा वरना हालत इतनी खराब नहीं होती क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता प्रीतम धारीवाल भी इस पर चिंता जताते हैं और कहते हैं कि हम इसके लिए लंबे समय से लड़ाई लड़ रहे हैं लेकिन अधिकारियों की ओर से सकारात्मक रवैया नहीं अपनाया जा रहा। बताया जाता है कि 1955 में सीपीडब्ल्यूडी ने सीवर व्यवस्था का काम एनडीएमसी को सौंप दिया था। अंग्रेजों द्वारा डाली गई सीवर लाइन फंक्शन में थी आज भी जमीन के नीचे गली हालत में पड़ी सरकारी कर्मचारियों के पेय जल को दूषित करती रहती हैं। राजधानी नागरिक कल्याण समिति मुद्दत से एन डी एम सी से कलर कोड सहित नई लाइन डालने की मांग करती चली आ रही है। 06 मई को चेयरपर्सन अमित यादव ने दलबल सहित मंदिर मार्ग पर इंस्पेक्शन किया। सीवर ट्रीटमेंट प्लांट के लिए जरूरी सीवर निकासी को ड्रेन में गिरता पाया गया। सीवर-ड्रेन को अलग करने की करवाई में काली बाड़ी मार्ग -मंदिर मार्ग के पब्लिक टॉयलेट (पीटीयू) को बंद कर दिया गया। साउथ इंडिया क्लब के सामने फुटपाथ पर 6 फुट गहरा चार फुट पानी से भरा हुआ अंडरग्राउंड टैंक निकला। जिसकी सही जानकारी चेयर पर्सन के साथ आए विभिन्न विभागों के कई दर्जन अधिकारी गण नही दे पाए। इसकी मोटर चोरी हो गई। हाईडेंट लाइन में रिसाव आने, वाटर लेवल नीचे उतर जाने के कारण सिस्टम फेल हो गया। तीन साल ही हॉर्टिकल्चर ने इसका उपयोग किया होगा 2018 में एनजीटी ने लगभग 50 जगहों के बोर बेल प्रतिबंधित कर दिए। एन डी एम सी के पूर्व चेयरपर्सन नरेश कुमार ने सीवर ट्रीटमेंट प्लांटस बनाए। लेकिन टूटी फूटी पड़ी पाइप लाइन के कारण टैंकरों से पानी डाला जाता है। स्वाति होस्टल के पास और हरकोर्ट बटलर स्कूल के प्लैंटर्स की देखभाल एन डी एम सी और शिक्षा संस्थान के सहयोग से फेडरेशन करती है। दर्जन भर सूखे पड़े प्लैंटरों को हरा भरा करने के आदेश चेयरपर्सन ने साइट पर उद्यान विभाग को दिए। बता दें कि फेडरेशन अध्यक्ष प्रीतम धारीवाल की पीवीसी पाइप को मेटैलिक पाइप में बदलने की रिक्वेस्ट 30 मार्च 2022 द्वारा एस्टीमेट बनाने और दो महीने में पूरा करने का पत्र तो मिला परंतु काम आज तक नही हुआ है। न्यू दिल्ली सोशल एक्टिविस्ट प्रीतम धारीवाल कहते हैं कि एसटीपी के पानी को यदि इन तीनों अंडर ग्राउंड टैंकस में डाल कर दुरुस्त पाइप लाईन द्वारा सड़क के पेड़ों और दर्जनों प्लांटर्स को सींचा जाय तो समस्या का स्थाई समाधान हो सकता है एनजीटी नियमों के उलंघन से भी बचा जा सकता है।

दिल्ली के लाजपत नगर में चलाया गया मोदी जरूरी है अभियान

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में लोकसभा चुनाव की तारीखें नजदीक आती जा रही है. 25 मई को होने वाली वोटिंग से पहले भाजपा के नेता और कार्यकर्त्ता फिर एक बार मोदी सरकार के लक्ष्य के साथ धुआंधार चुनाव प्रचार में जुटे हैं. इसी क्रम में राजधानी के प्रसिद्द लाजपत नगर मार्केट में मोदी जरूरी है अभियान चलाया गया. मोदी जरूरी है लिखी हुई टीशर्ट पहन कर युवा, लोगों को भाजपा के पक्ष में वोट देने के लिए जागरूक करते हुए दिखे. अभियान से जुड़े युवा, लोगों को समझा रहे थे कि देश के लिए मोदीक्यों जरूरी हैं. इस अभियान में विभूति सिंह, भानु लांबा, सीमा शर्मा, संचित, विकास, प्रीतिश, निशांत, दीपांकर और पंकज शामिल रहें. अभियान में शामिल विभूति ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी ने पिछले 10 वर्षों में पूरे विश्व में भारत का गौरव बढ़ाया है. आज दुनिया का हर बड़ा देश भारत के साथ दोस्ती करना चाहता है. मोदी जी ने जी-20 जैसे बड़े सम्मलेन का भव्य आयोजन करके दुनिया को दिखा दिया कि ये नया भारत है. भानु लांबा ने बताया कि मोदी जी के नेतृत्व में भारत का सांस्कृतिक उत्थान हो रहा है. केदारनाथ, काशी विश्वनाथ और महाकाल मंदिर का जिस तरह से कायाकल्प किया गया वो अपने आप में अद्वितीय अनुभव है. हमारे रामलला टेंट से भव्य मंदिर में पहुँच गए. लाजपत नगर के सेंट्रल मार्केट में मोदी जरूरी है है कारण बताते हुए सीमा शर्मा ने कहा कि आज भारत का इन्फ्रास्ट्रक्चर दुनिया के किसी भी विकसित देश को टक्कर दे रहा है. वन्दे भारत, रैपिड रेल सिस्टम ने यात्रा के अनुभव को बदल कर रख दिया. छोटे-छोटे शहर हवाई सेवा से जुड़े, देशभर में एक्सप्रेसवे का जाल बिछा, 23 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आयें. अब मोदी जी का लक्ष्य भारत को 2047 तक विकसित देश बनाना है. इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए मोदी जरूरी हैं.

उत्तर रेलवे

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खुली ई-निविदा सूचना

उप मुख्य अभियंता/टी.एम.सी./ला., उत्तर रेलवे, स्टेट एन्ट्री रोड, नई दिल्ली (भारत के राष्ट्रपति की ओर से) द्वारा मुहरबंद निम्नलिखित कार्य हेतु **एक पैकेट** खुली **ई-निविदा** आमंत्रित की जाती है।

1.	**कार्य का विवरण और स्थान :** उप मुख्य अभियंता/टी.एम.सी./ला., उत्तर रेलवे, स्टेट एन्ट्री रोड, नई दिल्ली के अधीन टैम्पिंग बैंकों के 17 सेट (सीएसएम/डब्ल्यूएसटी/वीपीआर = 05 सेट, यूनिमैट-2एस/3एस = 01 सेट, यूनिमैट-4एस/एमपीटी = 02 सेट, एमएफआई = 04 सेट, सीएसएम/डीयूओ संशोधित प्रकार = 02 सेट और पीसीटी/सीआरसीसी = 03 सेट) का ओवरहालिंग का कार्य।
2.	**कार्य समाप्त अवधि :** 15 महीने
3.	**अनुमानित लागत :** रुपये 8,94,61,215.00
4.	**धरोहर राशि (ऑनलाइन जमा) :** रुपये 5,97,300.00
5.	**निविदा पत्र का मूल्य (ऑनलाइन जमा) :** रु. शून्य
6.	**निविदा जमा करने व खुलने की तिथि एवं समय :** निविदा प्रपत्र दिनांक 17.05.2024 से दिनांक 07.06.2024 तक सायंकाल 15.00 बजे तक रेल वेबसाईट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध रहेगा। निविदा 07.06.2024 को अपराह्न 15:00 बजे के बाद खुलेगी।
7.	**निविदा सूचना व निविदा प्रपत्र का पूर्ण विवरण :** इस निविदा की सूचना उत्तर रेलवे की वेबसाईट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। निविदा प्रपत्र बिडिंग के लिए IREPS (www.ireps.gov.in) पर दिनांक 24.05.2024 से दिनांक 07.06.2024 तक उपलब्ध रहेगा। निविदा से संबंधित सभी नियम व शर्त निविदा प्रपत्र में दी गयी हैं। निविदा सूचना का विवरण इस कार्यालय के सूचना पटल पर भी देख सकते हैं।

सं.: 1-डब्ल्यू-उ.मु.अभि.-टी.एम.सी.-ला.-टी.बी.-03-24-25 दिनांक: 00.05.2024 1497/24

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

राष्ट्रीय दैनिक प्रातः किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran

www.pratahkiran.com

नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024

भाजपा ने जारी की आरोपों की चार्जशीट, कहा- कांग्रेस और आप लूट में भागीदार

केजरीवाल शराब घोटाले में मुख्य आरोपी हैं। उनके डिप्टी, मनीष सिसोदिया एक साल से जेल में हैं।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली भाजपा ने कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के खिलाफ आरोपों की एक चार्जशीट जारी की है। उसका नाम दिया गया है कांग्रेस और आप लूट में भागीदार। चार्जशीट कमेटी के अध्यक्ष हैं विधायक विजेन्द्र गुप्ता।

भाजपा ने अपने आरोपों में कहा है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल शराब घोटाले में मुख्य आरोपी हैं। उनके डिप्टी, मनीष सिसोदिया एक साल से जेल में हैं। सत्येन्द्र जैन भी पिछले 2 वर्षों से गिरफ्तार हैं। जब दिल्ली ऑक्सीजन के लिए संघर्ष कर रही थी, तब मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपने बंगले के सौंदर्यीकरण पर 45 करोड़ रुपये खर्च किए। भाजपा का कहना है कि जिम्मेदारी से बचने के लिए पिछले 9 सालों में अरविंद केजरीवाल ने किसी भी विभाग का कार्यभार नहीं संभाला। उन्होंने किसी भी फाइल पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। जल बोर्ड, शराब और महिला सुरक्षा, कक्षा निर्माण और 1000 डीटीसी बसों की खरीद से जुड़े घोटालों ने शासन को रोक दिया है। टैक्सियों, ऑटो, डीटीसी और क्लस्टर बसों में लगे पैनिक बटन के ऑडिट में लगभग 100 करोड़ का घोटाला सामने आया।

भाजपा ने आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी ने जल माफिया पर नकेल कसने का वादा किया था। हालांकि, आप शासन में, जल माफिया अधिक शक्तिशाली हो गया। आप सरकार को राष्ट्र विरोधी ताकतों का साथ देने में कोई संकोच नहीं था। यह जेएनयू के टुकड़े-टुकड़े गिरोह के साथ खड़ा रहा और भारत के खिलाफ उनके नापाक मंसूबों में उनका बचाव किया। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने सर्जिकल स्ट्राइक पर भारतीय सेना पर सवाल उठाए।

भाजपा ने कहा कि एसएफजे प्रमुख गुरपतवंत सिंह पन्नू ने दावा किया कि केजरीवाल ने 2014 में न्यूयॉर्क में एक बैठक के दौरान वित्तीय सहायता के बदले भुल्लर को रिहा करने का वादा किया था। भाजपा ने आरोप लगाते हुए कहा कि पूर्व कानून मंत्री जितेंद्र सिंह तोमर की कानून की डिग्री फर्जी पाई गई और उन्हें मंत्रिमंडल से बाहर करना पड़ा। पूर्व महिला एवं बाल विकास मंत्री संदीप कुमार पर एक महिला ने बलात्कार का आरोप लगाया था, जिसने उनसे राशन कार्ड के लिए मदद मांगी थी। एक बिल्डर से रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़े जाने पर आसिफ मोहम्मद को बाहर का रास्ता दिखाना पड़ा। आप विधायक अमानतुल्ला खान दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में अवैध भर्तियों और वित्तीय हेराफेरी से जुड़े एक मामले में फिलहाल जमानत पर हैं।

भाजपा के मुताबिक मोहल्ला क्लिनिक आप सरकार की सबसे बड़ी विफलताओं में से एक साबित हुई है। नकली दवाएं वितरित की जा रही हैं। फर्जी मेडिकल परीक्षण और भूत मरीज व्यापक पैमाने पर भ्रष्टाचार की कहानी बताते हैं। कोई नया अस्पताल शुरू नहीं हुआ। दिल्ली के 17 अस्पतालों में नियमित चिकित्सा अधीक्षकों की कमी के कारण अस्पतालों का प्रशासनिक ढांचा अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है। वहीं कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए भाजपा ने कहा कि कांग्रेस की योजना महिलाओं से मंगलसूत्र, हमारे किसानों से जमीन, हमारे मध्यम वर्ग से मेहनत की कमाई, हमारे युवाओं से अवसर छीनने और इसे अपने वोट बैंक के बीच पुनर्वितरित करने की है। कांग्रेस एससी, एसटी और ओबीसी का आरक्षण छीनकर मुसलमानों को देना चाहती है।

केजरीवाल चूड़ियां पहन लें, स्वाति मालीवाल मामले को लेकर भाजपा महिला मोर्चा का विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में मुख्यमंत्री आवास पर शुक्रवार को चूड़ियां लेकर पहुंचीं भाजपा महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं ने स्वाति मालीवाल पिटाई प्रकरण में दिल्ली सरकार के ढुलमुल रवैये पर अपना गुस्सा जाहिर किया। कार्यकर्ताओं ने कहा, महिलाओं की अस्मिता को सुरक्षित रखने में असमर्थ केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद पर रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। उन्हें अपने हाथों में चूड़ियां पहन लेनी चाहिए। कार्यकर्ताओं ने कहा, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए, क्योंकि वो महिलाओं की अस्मिता की सुरक्षा कर पाने में असमर्थ हैं। उन्हें चूड़ियां पहनकर अपने घर बैठ जाना चाहिए। दिल्ली को हम देख लेंगे। हम यहां राजनीतिक विचारधाराओं से परे हटकर एक महिला होने के नाते स्वाति मालीवाल के प्रति अपनी एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए एकत्रित हुए हैं। स्वाति खुद को अकेली ना समझें। हम सभी उनके साथ हैं।

कार्यकर्ताओं ने कहा, केजरीवाल इस मामले में कुछ भी बोलने से बच रहे हैं और सपा प्रमुख अखिलेश यादव कहते हैं कि देश में और भी ज्यादा जरूरी मुद्दे हैं। बेटे से गलती हो जाती है, जैसे बयान देने वाले मुलायम सिंह यादव के बेटे से उम्मीद भी क्या की जा सकती है।

प्रदर्शन में शामिल होने आई एक अन्य महिला ने सीएम केजरीवाल पर अपना रोष जाहिर करते हुए कहा कि उन्हें शर्म आनी चाहिए कि उनके आवास पर एक महिला सांसद के साथ बदसलूकी हो जाती है और वो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। बीते दिनों स्वाति मालीवाल ने दिल्ली पुलिस को दो दफा फोन कर सीएम केजरीवाल के निजी सचिव विभव कुमार पर मारपीट का आरोप लगाया था। उन्होंने यहां तक कहा था कि मुख्यमंत्री के निर्देश पर उन्हें पीटा गया है। घटना के दो दिन बाद उन्होंने बीते गुरुवार को इस संबंध में चुप्पी तोड़ते हुए आरोपी विभव कुमार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की बात कही थी। उन्होंने इस संबंध में दिल्ली पुलिस को लिखित शिकायत भी दी है।

केजरीवाल के निजी सचिव बिभव को राष्ट्रीय महिला आयोग ने फिर जारी किया नोटिस

- शुक्रवार को उन्हें राष्ट्रीय महिला आयोग के दफ्तर पेश होना था लेकिन वे पेश नहीं हुए।
- वह एक सांसद हैं जो हमेशा महिलाओं के मुद्दों को उठाती रही हैं।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राष्ट्रीय महिला आयोग ने आम आदमी पार्टी की नेता और राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट के मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव बिभव को एक बार फिर नोटिस जारी कर शनिवार को पेश होने को कहा है। अगर वे कल भी पेश नहीं होते तो आयोग के सदस्य उसके घर जाकर उनसे सवाल जवाब करेंगे। शुक्रवार को उन्हें राष्ट्रीय महिला आयोग के दफ्तर पेश होना था लेकिन वे पेश नहीं हुए।

राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने शुक्रवार को प्रेस वार्ता में कहा, जब हमने सोशल मीडिया पर यह देखा तो हमने स्वतः संज्ञान लिया। मैंने स्वाति मालीवाल से शिकायत दर्ज करने का अनुरोध किया। मुझे लगता है वह सदमे में थी क्योंकि कोई भी उम्मीद नहीं कर सकता था कि उन्हें अपने नेता के आवास पर इस तरह से पीटा जाएगा। वह एक सांसद हैं जो हमेशा महिलाओं के मुद्दों को उठाती रही हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं उनके साथ हूं, और आप बाहर आएं और शिकायत करें काफी देर तक सोचने के बाद उसने शिकायत दर्ज कराई।

रेखा शर्मा ने कहा कि हमने विभव को नोटिस भेजा है, लेकिन उनकी पत्न ी ने इसे स्वीकार नहीं किया, इसलिए हमने वह नोटिस उनके दरवाजे पर चिपका दिया। अगर वह कल तक नहीं आए तो फिर हम उनके आवास पर जाएंगे और सुनिश्चित करेंगे कि हमारी टीम उनसे मिले। मुझे उम्मीद है कि वह कल आएंगे। उन्होंने कहा कि इस घटना पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की चुप्पी बता रही है कि वे कह रहे हैं कि उन्हें किसी चीज की परवाह नहीं है। सोचिए यह एक संकेत है कि वह बिभव को अपने साथ ले जा रहे हैं। वह किसी महिला का पक्ष नहीं ले रहे हैं बल्कि अपराधी का पक्ष ले रहे हैं। अगर यह सब मुख्यमंत्री की जानकारी में था तो यह एक बड़ा सवाल है कि क्यों नहीं कोई एक्शन लिया गया?

दिल्ली कार शोरूम गोलीबारी: पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया हमलावर

- गोलियां कांच के दरवाजों और खिड़कियों पर लगीं और सात लोग घायल हो गए।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

पश्चिम दिल्ली में एक कार शोरूम में गोलीबारी में कथित तौर पर शामिल एक शूटर दिल्ली पुलिस की विशेष इकाई के साथ मुठभेड़ में मारा गया। यह मुठभेड़ शुक्रवार तड़के शाहबाद डेयरी इलाके के पास हुई। अजय उर्फ गोली पुर्तगाल निवासी कुख्यात अपराधी हिमांशु भाऊ का शार्पशूटर था। एक अधिकारी ने बताया कि वह एक कार से जा रहा था और जब पुलिस ने उसे रोकने की कोशिश की तो उसने पुलिस टीम पर गोलियां चला दीं।

पुलिस के अनुसार अजय हरियाणा के रोहतक का मूल निवासी था और वह राज्य और दिल्ली में हत्या, हत्या के प्रयास तथा शस्त्र अधिनियम के तहत अपराधों समेत एक दर्जन मामलों में शामिल था। पुलिस के मुताबिक वह दस मार्च को सोनीपत के मुरथल में एक व्यापारी की हत्या में भी शामिल था। अजय ने छह मई को 27 साल के मोहित रिधाऊ के साथ मिलकर तिलक नगर इलाके में पुरानी लक्जरी कारों के एक शोरूम पर गोली चला दी। गोलियां कांच के दरवाजों और खिड़कियों पर लगीं और सात लोग घायल हो गए।

हमलावरों ने घटना के बाद हाथ से लिखा एक नोट छोड़ा था, जिसमें तीन बदमाशों -भाऊ, नीरज फरीदकोट और नवीन बाली के नाम थे। पुलिस ने बताया था कि शोरूम के मालिक को एक अंतरराष्ट्रीय नंबर से कॉल आया था और फोन करने वाले ने उनसे रंगदारी के रूप में पांच करोड़ रुपये की मांग की थी। पुलिस के अनुसार बाद में रिधाऊ को कोलकाता से गिरफ्तार कर लिया गया।

मालीवाल से मारपीट पर केजरीवाल मांगे माफी : भाजपा

- बिभव ने राज्य सभा सदस्य के साथ मुख्यमंत्री के घर में मारपीट की।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शुक्रवार को सांसद स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट के मामले में केजरीवाल को जिम्मेदार ठहराया है और मांग की है कि वे जनता से माफी मांगे। भाजपा मुख्यालय में शुक्रवार को आयोजित प्रेसवार्ता में केन्द्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री के आवास पर उनकी ही पार्टी के नेता की पिटाई होती है और कोई कार्रवाई नहीं की जाती। मुख्यमंत्री जब अपनी ही पार्टी की महिला नेता की सुरक्षा नहीं कर सकते तो दिल्ली की महिलाओं की क्या सुरक्षा देंगे। उन्हें तो जनता से माफी मांगनी चाहिए।

निर्मला सीतारमण ने कहा कि स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट करने वाला आरोपी बिभव कुमार मुख्यमंत्री का दाहिना हाथ माना जाता है। बिभव ने राज्य सभा सदस्य के साथ मुख्यमंत्री के घर में मारपीट की। बिभव पर कार्रवाई करने के बजाय मुख्यमंत्री उन्हें साथ लेकर घूम रहे हैं। उन्हें शर्म आनी चाहिए। उन्हें इस मामले में अपना बयान रखना चाहिए था लेकिन कल उन्होंने मीडिया के सवाल पर माइक ही हटा दिया। यह बेशर्मी की भी हद है। वे मीडिया के सवालों से डर गए हैं। निर्मला सीतारमण ने कहा कि आम आदमी पार्टी के कई नेता महिला विरोधी हैं। उन्होंने सोमनाथ भारती का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी पत्नी के साथ मारपीट की। मुख्यमंत्री को स्वाति मालीवाल के साथ हुई अमानवीय घटना पर बयान देना चाहिए। लेकिन सभी को सांप सूंघ गया है। दिल्ली की महिला के मन में अब चलने लगा है कि जब उनके घर पर ही महिला की पिटाई हो रही है तो वे दूसरी महिलाओं का क्या सुरक्षा देंगे। इस पूरी घटना के जिम्मेदार मुख्यमंत्री भी हैं। आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल महिलाओं के खिलाफ हैं।

हर्ष मल्होत्रा को दिया ब्राह्मण समाज का समर्थन

नई दिल्ली। आज भारतीय ब्राह्मण मंच पंजीकृत के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रवण दीक्षित ने भारतीय जनता पार्टी पूर्वी दिल्ली लोकसभा के प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा को ब्राह्मण समाज की तरफ से समर्थन किया राष्ट्रीय अध्यक्ष सरवन दीक्षित ने कहा कि देश भारत देश नरेंद्र मोदी के हाथों में सुरक्षित है आने वाले समय में नरेंद्र मोदी भारत देश को विश्व गुरु बनाएंगे और विश्व में भारत का डंका बजेगा जिस में मुख्य रूप से कृष्ण भारद्वाज सुशील उपाध्याय शैलेंद्र शर्मा राजेंद्र मयंक शिव कुमार शर्मा रवि दत्त भारद्वाज पंडित संजीव शर्मा सुनील कौशिक सुमित भारद्वाज अनिल पंडित एडवोकेट सुनील शर्मा सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

घर से मतदान: पहले दिन 1,480 से अधिक मतदाताओं ने सुविधा का किया उपयोग

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी में बृहस्पतिवार को घर से मतदान के पहले दिन सभी सात लोकसभा क्षेत्र में 1,480 से अधिक दिव्यांग और वृद्धजनों ने इस सुविधा का लाभ उठाया। यह जानकारी आधिकारिक आंकड़ों से मिली। घर से वोट देने की सुविधा दिव्यांगजनों और 85 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को दी जा रही है।

दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय ने कहा कि 16 मई से शुरू हुई यह सुविधा 24 मई तक उपलब्ध रहेगी। आगामी 25 मई को दिल्ली में मतदान होगा।

पश्चिम दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में सबसे अधिक लोगों ने घर से मतदान किया जहां 338 बुजुर्ग मतदाताओं सहित 406 लोगों ने इस सुविधा का लाभ उठाया, जबकि पूर्वोत्तर दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में किसी ने इस सुविधा का लाभ नहीं उठाया। आंकड़ों के अनुसार, पूर्वोत्तर दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में घरेलू मतदान सुविधा के लिए 442 मतदाता पंजीकृत हैं। दिल्ली में, 5,424 मतदाता हैं जो या तो 85 वर्ष से अधिक आयु के हैं या दिव्यांग हैं और उन्होंने फॉर्म 12 डी भरा है, जिससे वे 2024 के लोकसभा चुनाव में गृह मतदान की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। जानकारी के अनुसार, अगर ऐसे लोग मतदान केंद्र पर वोट डालने का विकल्प चुनते हैं, तो उनकी भागीदारी को और सुविधाजनक बनाने के लिए 8,000 स्वयंसेवक तैनात किए गए हैं और 4,000 व्हीलचेयर इस काम के लिए इस्तेमाल की जा रही हैं। मतदान की गोपनीयता बनाए रखते हुए मतदान कर्मचारियों और सुरक्षाकर्मियों के दल घरों से मतदान करा रहे हैं।

बदसलूकी मामले में बयान दर्ज कराने तीस हजारी अदालत पहुंचीं मालीवाल

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

- अधिकारियों ने बताया कि मालीवाल दिल्ली पुलिस की एक टीम के साथ पूर्वाह्न करीब 11 बजे अपने आवास से निकलीं

आम आदमी पार्टी की सांसद स्वाति मालीवाल अपने साथ मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार द्वारा की गई कथित बदसलूकी के मामले में मजिस्ट्रेट के समक्ष बयान दर्ज कराने के लिए शुक्रवार को तीस हजारी अदालत पहुंचीं। अधिकारियों ने बताया कि मालीवाल दिल्ली पुलिस की एक टीम के साथ पूर्वाह्न करीब 11 बजे अपने आवास से निकलीं। मालीवाल सोमवार सुबह यहां सिविल लाइन्स थाने में पहुंची थीं और उन्होंने आरोप लगाया था कि केजरीवाल के निजी स्टाफ के एक सदस्य ने मुख्यमंत्री के सरकारी आवास पर उनके साथ मारपीट की थी। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली पुलिस ने बृहस्पतिवार को इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की और बिभव कुमार को आरोपी बनाया।

मालीवाल से बदसलूकी मामले में बिभव कुमार राष्ट्रीय महिला आयोग के समक्ष नहीं हुए पेश

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के साथ कथित बदसलूकी के सिलसिले में शुक्रवार को राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) के समक्ष पेश नहीं हुए। एनसीडब्ल्यू ने कुमार को सुबह 11 बजे आयोग के समक्ष पेश होने के लिए समन भेजा था। एनसीडब्ल्यू प्रमुख रेखा शर्मा ने कहा कि आयोग की एक टीम बृहस्पतिवार को कुमार को नोटिस देने उनके आवास पर गई थी, लेकिन वह घर पर नहीं थे। शर्मा ने संवाददाताओं से कहा, कुमार की पत्नी ने नोटिस लेने से इनकार कर दिया। मेरी टीम आज फिर पुलिस के साथ उनके आवास पर गई और अगर वह कल तक (एनसीडब्ल्यू के समक्ष) पेश नहीं होते हैं, तो हम पूछताछ करने के लिए व्यक्तिगत रूप से जाएंगे। पुलिस अधिकारियों ने बताया था कि सोमवार सुबह मालीवाल यहां सिविल लाइंस पुलिस थाने पहुंचीं और आरोप लगाया कि केजरीवाल के निजी स्टाफ के एक सदस्य ने मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास पर उन पर ह्महमलाह्न किया। एनसीडब्ल्यू ने मीडिया में प्रकाशित उस खबर का स्वतः संज्ञान लिया जिसका शीर्षक था ह्यपूर्व डीसीडब्ल्यू प्रमुख स्वाति मालीवाल ने अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव पर हमला करने का आरोप लगायाह्न। उन्होंने (मालीवाल) दावा किया कि कुमार ने मुख्यमंत्री के आवास पर उन पर बेरहमी से हमला किया। दिल्ली पुलिस ने मालीवाल पर कथित हमले के सिलसिले में बृहस्पतिवार को एक प्राथमिकी दर्ज की। अधिकारियों ने बताया कि मामले में कुमार को आरोपी बनाया गया है।

दिल्ली में न्यूनतम तापमान 25.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया

नई दिल्ली। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, दिल्ली में शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 25.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो मौसम के औसत तापमान से एक डिग्री सेल्सियस कम है। सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता 51 प्रतिशत दर्ज की गई। आईएमडी ने दिन में आसमान साफ रहने का अनुमान जताया है। उसके अनुसार अधिकतम तापमान 43 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

मोदी की रैली में जुटेंगे लाखों की तादाद में लोग: राजकुमार बल्लन

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र के घोंडा विधानसभा अंतर्गत यमुना खादर के विशाल ग्राउंड में भाजपा के लोकसभा प्रत्याशी मनोज तिवारी, हर्ष मल्होत्रा व प्रवीन खंडेलवाल के समर्थन में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 18 मई को शाम 5 बजे होने वाली रैली ऐतिहासिक होगी। यह जानकारी देते भाजपा किसान मोर्चा दिल्ली प्रदेश के प्रभारी राजकुमार बल्लन ने बताया कि मोदी की रैली में उत्तर पूर्वी संसदीय क्षेत्र के गांवड़ी, घौंडा, खजूरी उस्मानपुर, गढ़ी मेंडू, बिहारी पुर, सादत पुर, दयाल पुर, सभापुर, करावल नगर, गोपाल पुर, वजीराबाद, जगत पुर, गोकलपुर, जोहरी पुर, बुराड़ी, कादीपुर, मंडोली, मौजपुर, भगवान पुर खेड़ा व इब्राहिम पुर आदि गांवों से लाखों की तादाद में लोग शिरकत करेंगेही साथ ही चांदनी चौक लोकसभा और पूर्वी दिल्ली लोकसभा से भी गांवों से हजारों की संख्या में ग्रामीण लोग मोदी को सुनने के रैली में पहुंचेंगे। मोदी की रैली मनोज तिवारी सहित दिल्ली के अन्य सभी भाजपा के उम्मीदवारों की विजय में मील का पत्थर साबित होगी और 4 जून को भाजपा की जीत का परचम एक बार फिर सातों सीटों पर लहराएगा।

आतिशी बोलीं- बीजेपी ने रची पूरी साजिश, घटना के वक्त घर पर नहीं थे केजरीवाल; स्वाति के आरोप झूठे

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल से बदसलूकी मामले पर दिल्ली कैबिनेट मंत्री आतिशी ने प्रेस वार्ता की। उन्होंने इस साजिश के पीछे भारतीय जनता पार्टी का हाथ बताया है। प्रेस वार्ता के दौरान आतिशी ने कहा कि स्वाति मालीवाल झूठ बोल रही हैं। सीएम केजरीवाल के पीए बिभव कुमार पर झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं। घटना वाले दिन मुख्यमंत्री केजरीवाल वहां पर नहीं थे।

स्वाति मालीवाल ने सुरक्षाकर्मियों को धमकाया स्वाति मालीवाल की मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के साथ पहले कोई मुलाकात तय नहीं थी। स्वाति ने जो चोट लगने की बात कही है वह कहीं नहीं दिख रही है। उसके उलट स्वाति ने घर में मौजूद सुरक्षाकर्मियों को धमकाया। ये सारी साजिश बीजेपी की रची हुई है। वो अरविंद केजरीवाल को लेकर परेशान है। एफआईआर में स्वाति मालीवाल ने बताई घटना की सच्चाई

दिल्ली पुलिस की एफआईआर के मुताबिक, मालीवाल ने 13 मई की घटनाओं का जिक्र किया है। जब वह मुख्यमंत्री केजरीवाल के सिविल लाइंस स्थित आवास पर गई थीं। उन्होंने कहा कि मैं कैंप कार्यालय के अंदर गई। सीएम के पीए बिभव कुमार को फोन किया। लेकिन मैं अंदर नहीं जा सकी। फिर मैंने उनके मोबाइल नंबर पर एक मैसेज भेजा था। हालांकि, कोई जवाब नहीं आया।

इसके बाद मैं उनके आवास के परिसर में गई। जहां मैं अक्सर जाती थी। वहीं बिभव कुमार मौजूद नहीं थे। इसलिए मैंने आवास परिसर में एंट्री की और वहां मौजूद कर्मचारियों को जानकारी दी कि वे यहां सीएम से मिलने के लिए आई हैं। यह सब बातें एफआईआर में लिखी गई हैं। उन्होंने आगे बताया कि मुझे बताया गया कि वह घर में मौजूद हैं और मुझे ड्राइंग रूम में इंतजार करने के लिए कहा है। मैं ड्राइंग रूम में गई और सोफे पर बैठ गई और उनके मिलने का इंतजार किया। मुझे पता चला की सीएम मिलने के लिए आ रहे हैं। लेकिन अचानक पीए बिभव कुमार कमरे में घुस आए। उन्होंने बिना किसी उकसावे के चिल्लाना शुरू कर दिया। मुझे गालियां भी दीं। मैं स्तब्ध रह गई। इतना ही नहीं मुझे थप्पड़ मारना शुरू कर दिया। जब मैं लगातार चिल्लाती रही तो मुझे कम से कम सात से आठ बार थप्पड़ मारा। मैं वहां मदद के लिए भी चिल्लाई थी। जानबूझकर मेरी शर्ट ऊपर खींची।

उन्होंने बताया कि मैंने उनसे बार-बार कहा कि मैं मासिक धर्म के दौर से गुजर रही हूं। कृपया मुझे जाने दें। लेकिन जाने नहीं दिया। फिर मैं वहीं बैठ गई। मैं ड्राइंग रूम के सोफे पर गई और हमले के दौरान जमीन पर गिरे अपने चश्मे को उठाया। इसके बाद 112 नंबर पर फोन किया और पुलिस को सूचना दी।

राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम को लेकर तहसील स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक

- राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम मे लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्त: उप जिलाधिकारी

प्रात: किरण संवाददाता, नादिर त्यागी

स्योहारा/ धामपुर ।उप जिलाधिकारी धामपुर रितू रानी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम को लेकर तहसील स्तरीय टास्क फोर्स मीटिंग आयोजित की गई ।जिसमें समस्त ब्लॉक के प्रभारी चिकित्सा अधिकारी समेत सीडीपीओ आदि उपस्थित रहे ।इस दौरान उप जिलाधिकारी रितू रानी ने सभी को आदेशित किया कि राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम भारत सरकार का मुख्य कार्यक्रम है ।इस कार्यक्रम का उद्देश्य जीरो से 5 साल तक के बच्चों को 12 तरह की बीमारियों से बचाव के टीके लगाए जाना हैं ।साथ ही गर्भवती माताओ की निशुल्क जांच और टीकाकरण कैम्प भी गांव स्तर पर आयोजित होंगे। वीएचएसएनडी सत्रों पर की जाती है ।इस कार्यक्रम में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अवरोधी परिवारों के टीकाकरण के लिए हर ब्लॉक स्तर पर भी बी आर टी टीम का गठन तत्काल कर लिया जाए और जहां-जहां अवरोधी परिवार है वहां वहां पर इन टीमों द्वारा विजिट कर बच्चों का टीकाकरण अवश्य कराया जाए ।सभी कोटेदारों से भीआदेशित किया गया कि वह लोग इस कार्य में अपना सहयोग देंगे। इस दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्योहारा अधीक्षक डॉक्टर बी के स्नेही ने बताया कि सहसपुर क्षेत्र में करीब 49 अवरोधी परिवार हैं ।जिनमे से 41 का टीकाकरण कराया जा चुका है ।इनको टीकाकरण करने के संपूर्ण प्रयास अपने स्तर के साथ-साथ बीआरटी टीम और ग्राम प्रधान , कोटेदार और संभ्रांत लोगों के द्वारा करवाए जा रहे हैं । टीम वर्क से बच्चो का टीकाकरण कराया जा रहा है ।इसका मुख्य कारण यहां पर आशाओं की तैनात का ना होना है ।इस दौरान सर्विलेंस मेडीकल ऑफीसर / एसएमओ डॉक्टर वर्षा कदम ने बताया कि भारत सरकार द्वारा जिला बिजनौर को गाबी द्वारा गोद के लिया गया है उसके सहयोग से टीकाकरण कार्यक्रम को और सुदृढ़ किया जाएगा। उनके द्वारा प्रत्येक ब्लॉक का डेटा प्रस्तुत किया गया ।साथ ही राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के लिए कराए जा रहे हैड काउंट सर्वे को 26 मई तक पूर्ण करने को कहा। महिला बाल विकास पुष्टाहार विभाग से टीकाकरण में सहयोग की अपेक्षा की गई। इस दौरान प्रभारी चिकित्सा अधिकारी धामपुर डॉक्टर अंकित कुमार, कासिमपुर गड़ी डॉक्टर खालिद अख्तर , आईओ वीर सिंह और सभी ब्लॉक के मॉनीटर स्योहारा से श्रीकांत राजपूत ,बीपीएम मनीष कुमार, अमित कुमार, आशीष कुमार, समस्त ब्लॉक की सीडीपीओ और यूनिसेफ की बीएमसी ज्योति रानी आदि उपस्थित रही।

संक्षिप्त खबरें

नेम निष्ठा के साथ बाबा गरभू का पूजा संपन्न

जमुई/गिद्धौर प्रखंड के पतसंडा पंचायत के कुमार सुरेन्द्र सिंह स्टेडियम में अवस्थित ऐतिहासिक बाबा गरभू मंदिर में शुक्रवार को बाबा गरभू का पूजा पुरे नेम और निष्ठा के साथ संपन्न हुआ। बताते चलें की लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व में इस गरभू बाबा का पिंड निर्माण गिद्धौर राज रियासत द्वारा करवाया गया था। तब से लेकर आज तक बाबा गरभू के इस पिंड पर विधिवत रुप से पूजा कराने की परंपरा चली आ रही है। इस वर्ष भी पतसंडा गांव के सहित प्रखंड भर के हजारों श्रद्धालुओं ने बाबा गरभू की पूजा के अवसर पर गरभू बाबा की पूजा अर्चना करने आये तथा बाबा गरभू की पूजा अर्चना कर अपने परिजनों की सुख शांति की कामना की एवं मन्नते भी मांगी तथा जिन भक्तों की मन्नते बाबा गरभू ने पूरा की उन्होंने बाबा गरभू को खीर व पकवान भी चढ़ाई व प्रखंड भर के सैंकड़ो भक्तों ने बाबा के मंदिर में दूध,खीर व पकवान चडाई सुबह से ही बाबा गरभू की पूजा अर्चना करने के लिये भक्तों का तांता लगा रहा। सलौनी पूजा को विद्वान पंडित दिपू पांडेय,मनोज यादव,किशोरी यादव व लक्ष्मण यादव द्वारा संपन्न कराया गया। वंही पूजा की विधि ब्यवस्था एवं प्रसाद वितरण का कार्य की जिम्मेवारी अभिषेक कुमार,मुकेश यादव,अर्थव राज,विजय कुमार,श्याम वर्णवाल द्वारा निष्पादित कराया गया।

लड़की की आत्महत्या करने का मामला आया प्रकाश में

मधेपुरा आलमनगर थाना क्षेत्र के सोनवर्षा में एक 12 बर्षीय लड़की की आत्महत्या करने का मामला प्रकाश में आया है। बताया जाता है कि मृतका ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है। बताया गया कि मृतका अपने दादी के घर रहती थी लड़की की मां मर चुकी है, मृतका के पिता की दुसरी शादी मृतका की मोसी से हुई है मृतका दुसरे के यहाँ खेलने गई थी इस पर मृतका की मोसी डांटी सायद इसपर अपने घर में फांसी लगा कर आत्महत्या कर लिया हो। सुचना मिलने पर शव को पुलिस अपने कब्जे में कर के पोस्टमार्टम हेतु मधेपुरा भेज दिया गया है एवं जांच की जा रही है।

चुनाव बहिष्कार करने वाले सहरौन गांव के निर्दोष ग्रामीणों पर प्रशासन द्वारा अपनी कमजोरी छिपाकर किया गिरफ्तारी

प्रात : किरण, संवाददाता

- झूठा मुकदमा समाप्त करने, जेल में बंद ग्रामीणों को रिहा करने, सहरौन तक जल्द सड़क निर्माण करने की किया मांग
- आजादी के 75 साल बाद भी सहरौन गांव तक सड़क क्यों नहीं बना ? जवाब दे प्रशासन व सरकार

खगड़िया। पौरा पंचायत के सहरौन गांव तक सड़क निर्माण करने के सवाल को लेकर चुनाव बहिष्कार करने की घोषणा के बावजूद चुनाव कराने पर आक्रोशित ग्राम वासियों द्वारा कथित तौर पर झूठा आरोप इवीएम तोड़ने, हंगामा करने के विरुद्ध लगभग 500 लोगों पर नामजद व अज्ञात मुकदमा करने, 3 निर्दोष ग्रामीणों की गिरफ्तारी करने एवं जेल भेजने जैसी प्रशासनिक कार्रवाई का घोर निंदा सामाजिक कार्यकताओं ने किया है। तथा मुकदमा को समाप्त करने, जेल में बंद ग्रामीणों को रिहा करने करने एवं सहरौन गांव तक सड़क निर्माण करने की मांग किया है। देश बचाओ अभियान के संस्थापक अध्यक्ष सह पंच सरपंच संघ के जिला अध्यक्ष किरण देव यादव, आरटीआई कार्यकर्ता अमरीश यादव, अधिवक्ता डॉ कमल किशोर यादव, समाजसेवी प्रफुल्ल चंद्र घोष, देश बचाओ अभियान के सचिव धर्मेंद्र कुमार, फरकिया मिशन के सचिव लालमणि सदा ने कहा कि आजादी के 75 साल बाद भी सहरौन तक सड़क निर्माण नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार द्वारा प्रदत्त अरबों की खर्च राशि एवं झूठी विकास का पोल खोलती है। सरकार एवं प्रशासन अपनी कमजोरी छुपाने के लिए आक्रोशित आंदोलनरत क्रांतिकारी ग्रामीणों पर मुकदमा कर दमन करना घोर निंदनीय है।

चुनाव पूर्व आक्रोशित आंदोलनकारी ग्रामीणों ने एक सप्ताह पूर्व से चुनाव बहिष्कार की घोषणा किये, बावजूद इसके प्रशासन व सरकार ने ग्रामीणों के साथ ना ही किसी प्रकार का वार्ता किये, ना ही समझौता किये और ना ही किसी प्रकार का मांग पूरा करने संबंधित आश्वासन दिए; यह प्रशासन का निकम्मापन एवं लापरवाही, उदासीनता , कमजोरी को दर्शाता है। नेताओं ने कहा कि प्रशासन अपनी कमजोरी छिपाने के लिए दमनकारी नीति अपनाई है, जो घोर नींदनीय है।

नेताओं ने कहा कि यदि प्रशासन मुकदमा समाप्त कर जेल में बंद ग्रामीणों को रिहा नहीं करेगी तो व्यापक आंदोलन तेज किया जाएगा, जिसका जिम्मेवारी प्रशासन की होगी। नेताओं ने कहा कि आज भी फरकिया के दर्जनों गांव बुनियादी सुविधा एवं मौलिक अधिकार से वंचित है जहां विकास की किरण तक नहीं पहुंची है। नेताओं ने कहा कि प्रधानमंत्री सड़क निर्माण योजना एवं पंचायत स्तर पर हर गली सड़क निर्माण योजना के तहत आज तक पहुंचपथ सहरौन गांव तक क्यों नहीं बना ? कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपनी मांगों को लेकर आंदोलन करने का अधिकार है। फिर वाजिब मांगों को लेकर आंदोलनरत ग्रामीणों पर मुकदमा गिरफ्तारी क्यों ? जवाब दे प्रशासन एवं सरकार।

भाजपा ने सबका साथ और सब का विकास के तहत देश को नई ऊंचाई पर पहुंचाया:विजय

प्रात : किरण, संवाददाता

भगवानपुर। राजद अपने शासनकाल में विहार को लज्जित करने का काम किया है। आज भाजपा ने सबका साथ और सब का विकास के तहत देश को नई ऊंचाई पर पहुंचाया है।लालटेन को सदा के लिय बुझा देना है,लालटेन के साथ साथ लालटेन में तेल डालने वाले को भी बुझा देना है उक्त बाते विहार सरकार के उप मुख्य मंत्री विजय सिंहा ने रजौली में ब्रह्मासी समाज को एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा उन्होंने ने लोगो से अपील किया की अपने एक एक मत को संगठित होकर चिराग पासवान के चुनाव चिन्ह हेलिकॉप्टर के बटन दबा कर अपार बहुमत से जीतने की बाते कही।उन्होंने कहा की अपने समाज के मतो को टुकड़े टुकड़े नही होने दे।हमलोग उसी को मदद करे जो सब का साथ सब का विकास सोचता है।देश से आतंकवाद एवम उग्रवाद को मिटाना है।प्रधान मंत्री ने कहा है की एक भी भरष्टाचारियो को नही छोड़ा जाएगा।भारत उन्नति आम तरक्की को इंडी गठबंधन देखना नही चाहती। आज हर घर बिजली,प्रधान मंत्री आवास योजना ,स्वास्थ्य की गारंटी, सहित गरीबों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है। उन्होंने कहा की अबकी बार 400 पार को कोई भी शक्ति नही रोक सकती।इससे पूर्व उप मुख्यमंत्री को अंग वस्त्र एवम पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया।

चुनावी सभा में वैशाली जिले के कोने कोने से आए ब्रह्मसी समाज के लोगो ने हिस्सा लेते हुए एक मत से चिराग पासवान को भारी मतों से जिताने का संकल्प लिया।समारोह में सुबोध सिंह,लोजपा नेता अवधेश सिंह,लोजपा नेत्री अंजनी सिंह,गंगेश सिंह,सुरेश सिंह,सतीश सिंह,मुन्ना सिंह पूर्व जिला परिषद,राजेश सिंह,बिट्टू चौधरी,भोला ठाकुर,रामाशीष सिंह,नंद किशोर सिंह सहित बड़ी संख्या में ब्रह्मशी समाज के लोगो ने हिस्सा लिया।

महाविद्यालय का है गौरवशाली इतिहास:प्रधानाचार्य

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय का अपना गौरवशाली इतिहास है। हम सभी अपने इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने वर्तमान को समुज्वल बनाने का प्रयास कर रहे हैं यह बात ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा के प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव ने कही। वे स्नातकोत्तर गणित विभाग द्वारा आयोजित चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों के विदाई समारोह का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इधर-उधर भटकने से उर्जा एवं शक्ति का अपव्यय होता है। अतः विद्यार्थियों को हमें अपना एक लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयास करना चाहिए। मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. मिथिलेश कुमार अरिमर्दन ने कहा कि जीवन को समग्रता में समझने की जरूरत है। विशिष्ट अतिथि स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर ने कहा कि हमें अपने जीवन में प्रेय नहीं, बल्कि श्रेय को चुनना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष ले. गुड्डू कुमार ने सभी विद्यार्थियों से अपील की कि वे अपने कैरियर-निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। इसके पूर्व अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर विधिवत कार्यक्रम की शुरूआत की। अतिथियों को अंगवस्त्रम्-एवं पुष्पगुच्छ भेंटकर सम्मानित किया गया। गीतकार संतोष कुमार और उनके सहयोगी कलाकारों ने ने अपने गीत-गजलों से सबों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच संचालन छात्र बिपीन कुमार ने किया। इस अवसर पर देवांशु कुमार, दुर्गेश कुमार, नीरज कुमार, नवीन कुमार, संतोष कुमार कृष्णा कुमार, निशा कुमारी, पायल कुमारी, धर्मन्त्र, प्रिंस, जयकुमार, दिवाकर, अजीत, नेहा, टिंकल, अमर आदि उपस्थित थे।

पुलिस प्रेक्षक ने चुनाव की तैयारियों का लिया जायजा

प्रात : किरण संवाददाता

मशरक लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पुलिस प्रेक्षक हर्षवर्धन राजू ने शुक्रवार को मशरक के महाराणा प्रताप चौंक, लखनपुर गोलम्बर समेत अन्य इलाकों का भ्रमण किया। सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान सीओ सुमंत कुमार, बीडीओ पंकज कुमार, थानाध्यक्ष धनंजय राय समेत अन्य मौजूद रहें।

भाजपा के जिला कार्यालय में शोकसभा आयोजित कर दी गई सुशील मोदी को श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के निधन पर भाजपा के जिला कार्यालय में गुरुवार को शांक सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि दी गई। पार्टी के जिलाध्यक्ष दीपक कुमार के अध्यक्षता में शोकसभा हुई। मालूम हो कि बीते दिनों बिहार भाजपा के वरिष्ठ नेता बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री व पूर्व राज्यसभा सांसद सुशील कुमार मोदी का दिल्ली एम्स में निधन हो गया। पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के पुण्यात्मा की शांति हेतु भाजपा के कार्यकताओं ने शोक सभा का आयोजन कर श्रद्धांजलि अर्पित किए। वहीं उपस्थित कार्यकताओं ने दो मिनट मौन धारण कर पुण्यात्मा के शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। मौके भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक कुमार ने कहा कि बिहार भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के निधन से बिहार के राजनीतिक पटल पर एक गहरा आघात है। बिहार भाजपा में उनकी भरपाई नहीं किया जा सकता है। श्रद्धांजलि सभा में पूर्व जिलाध्यक्ष अध्यक्ष अरविन्द अकेला, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य डा. अमोल राय, जिला महामंत्री अभिषेक कुमार साह, जिला उपाध्यक्ष वीरेंद्र चौधरी, नीभा झा, तंद्रा शरण, जिला मंत्री सुरेश यादव, मीना देवी, पुष्पलता यादव,भाजपा नेता गुलजार बंटी, आईटी संयोजक सुभाष चौहान, सोशल मीडिया संयोजक राहुल राय, मंडल अध्यक्ष मधेपुरा ग्रामीण पश्चिमी अनमोल मंडल, पूर्वी दिलीप कुमार दीपक, महादलित प्रकोष्ठ संयोजक अरूण ऋषिदेव, चुनाव आयोग संयोजक मनीन्दर दास , पंचायतीराज प्रकोष्ठ संयोजक प्रभास चौपाल, जितेंद्र कुमार, अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष दिलशाद आलम, मोती रहमान,विस्तारक राजीव यादव, ग्वालपाड़ा पूर्व मंडल अध्यक्ष रणविजय चौधरी, पुष्पक कुमार, कंचन कुमार, नंदन कुमार, रमेश कुमार सहित दर्जनों भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

हृदय गति रुक जाने से मुखिया प्रतिनिधि के भाई का निधन, शोक

प्रात : किरण संवाददाता

आलमनगर (मधेपुरा) आलमनगर प्रखंड के किशनपुर रतवारा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि रामलाल सिंह के बड़े भाई दिलीप सिंह का हृदय गति के रुक जाने से मृत्यु पीएचसी आलमनगर में हो गया। जिसकी सूचना मिलते ही आलमनगर विधानसभा के पूर्व विधायक प्रत्याशी ई नबीन कुमार निषाद पहुँच कर शोक संवेदना प्रकट किया। वही इस दौरान पूर्व विधायक प्रत्याशी इंजीनियर नवीन कुमार निषाद ने बताया कि दिलीप सिंह अच्छे और नेक इंसान थे। किशनपुर रतवारा पंचायत में शोक की लहर। सूचना पाकर प्रखंड के अन्य प्रतिनिधियों ने पहुँच कर शोक प्रकट किए इसमें पंचायत समिति सदस्य दीपनारायण सिंह, अक्षय कुमार, सुभाष गुप्ता, चंदन शर्मा, रोहित कुमार अन्य आदि पहुँचकर शोक प्रकट किये।

तनाव व मानसिक दबाव से मुक्ति पाने के लिए राजयोग जरूरी : बीके कंचन

राजयोग द्वारा अपनी इन्द्रियों पर संयम रख बढ़ा सकते हैं अपना मनोबल

- राजयोग के अभ्यास से हम हो सकते हैं तनाव मुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर: राजयोग द्वारा हम अपनी इन्द्रियों पर संयम रखकर अपने मनोबल को बढ़ा सकते हैं। वर्तमान की सभी समस्याओं का मूल कारण इन्द्रियों की चंचलता है। तनाव व मानसिक दबाव से मुक्ति पाने के लिए राजयोग करना चाहिए। उक्त बातें प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी कंचन दीदी ने स्थानीय गायत्री मंदिर परिसर में कही। राजयोग साधना कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा कि राजयोग के द्वारा सहनशीलता, नम्रता, एकाग्रता, धैर्यता, शांति जैसे अनेक सद्गुणों का विकास होता है। राजयोग के अभ्यास द्वारा ही अतिइन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, जिसके कारण संसार के वस्तु वैभव का सारा सुख फीका लगने लगता है।राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी कंचन दीदी ने कहा कि राजयोग के अभ्यास से हम तनाव से मुक्त रह सकते हैं। राजयोग द्वारा हम विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण बनाकर आशावादी बनने की कला ला सकते हैं, जिससे हर परिस्थिति में हम विजयी बन सकते हैं। हम अपने आपको भूल गये। पिता को भूल गये, जिसके कारण हम से भूल होती गई। वास्तव में हम सभी आत्मा-आत्मा भाई-भाई हैं। एक शिव परमपिता परमात्मा की संतान हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में तनाव मुक्ति की आवश्यकता है। तनाव मुक्ति वाला ही रचनात्मक कार्य कर सकता है। उसका मनोबल मजबूत होगा तो जीवन के हर कार्य में सफलता हासिल कर सकते हैं।इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के गिद्धौर सेंटर से राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी सरिता दीदी,लखीसराय सेंटर से राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी रीता दीदी, गिद्धौर सेंटर से राजयोगी ब्रह्मकुमार अरविंद भाई, माउंट आबू से आए राजयोगी ब्रह्मकुमार बिंदेश्वरी भाई सहित ब्रह्मकुमारीज से जुड़े भाई-बहन एवं गायत्री परिवार के सदस्य मौजूद थे।

ट्रेक्टर का ट्रेलर पलटी हुई बच्ची की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

चौसा (मधेपुरा) चौसा थाना क्षेत्र के रसलपुर धुरिया पंचायत के रजवाड़ा बहियार में ट्रैक्टर का ट्रेलर पलटने से एक बच्ची की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। घटना के संदर्भ में बताया जा रहा है कि चौसा पूर्वी पंचायत के बीरबल टोला वार्ड नंबर 2 निवासी मिंटू मंडल की पुत्री आंचल कुमारी (12वर्षीय) टील्हारही गांव के समीप रजवाड़ा बहियार से गांव के ही ट्रेक्टर पर मक्का लोड कर वापस घर बीरबल टोला आ रहा था इसी दौरान रजवाड़ा बहियार में ही एक गड्ढे में ट्रैक्टर का ट्रेलर पलटी मार दिया जिससे ट्रेलर पर सवार आंचल ट्रेलर के नीचे दब गई। हालांकि घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों द्वारा आंचल को ट्रेलर के नीचे से बाहर निकाल कर आनन फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चौसा में भर्ती करवाया गया जहां ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक डॉ नरेंद्र कुमार ने प्रारंभिक जांच के दौरान ही मृत घोषित कर दिया। उधर घटना की जानकारी मिलते ही मृतका के परिजनों में कोहराम मच गया जबकि वाहन चालक के द्वारा गाड़ी को घटना स्थल से हटाने में कामयाब रहे।बताया गया की मृतका तीन भाई बहन में एकलौती बहन थी और मृतका के पिता मिंटू मंडल पंजाब में मजदूरी करने गया हुआ है। वहीं घटना की जानकारी मिलते ही चौसा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मधेपुरा भेज दिया। वही घटना के बाद मृतका मां की चीत्कार को सुन आसपास के माहौल को गमगीन कर दिया है।

बेटा बनकर पिता के अधूरे कार्यों और सपनों को करेंगे पूरा: चिराग

चिराग पासवान ने कई स्थानों पर किया चुनावी सभा और रोड शो

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। हाजीपुर लोकसभा से एनडीए समर्थित लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के उम्मीदवार चिराग पासवान हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र अंर्तगत विभिन्न प्रखंड में जनसभा को संबोधित किए । श्री चिराग हाजीपुर वकालत खाना में जनसंपर्क कार्यक्रम किए और राधोपुर, लालगंज, देसरी, महुआ एवं महनार में जनसभा को संबोधित किया।वही देर शाम श्री चिराग ने महनार बजार के इस्हाकपूर, मदन चौक, थाना मोड़ , गंगा रोड एवं स्टेशन रोड में रोड शो कार्यक्रम किए। चिराग ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा की मैं चिराग पासवान आप सभी से नेता नहीं बेटा बनकर आया हूँ।हम आपसे स्नेह और आशीर्वाद लेने आये है। आपके स्नेह और आशीर्वाद से मेरे नेता और मेरे पिता को देश और दुनिया मे बहुत नाम दिया है। सम्मान दिया है हाजीपुर के कारण ही वे दुनिया और देश मे प्रसिद्धि पायी है यहां के लोग से हमारा पारिवारिक रिश्ता रहा है जब बचपन मे हाथ पकड़ कर मेरे पिता यहां के लोगो से परिचय कराते थे आज मेरे पिता नही है तो आपही मेरे पिता भाई चाचा चाची है ।उन्होंने कहा कि मेरे कई अपनो ने साथ छोड़ दिया तो आपही लोग मेरे चाचा चाची भाई बहन बन कर मेरा साहस बढ़ाया है ।उन्होंने कहा कि आप हमें पिता से दो कदम आगे ही पाएंगे। अपने पिता के अधूरे कार्य को पूरा करने का वादा करते है और आपकी समस्या को चुन चुन कर पूरा करेंगे। उन्होंने राजद पर कटाक्ष करते हुए कहा कि विपक्ष के कई नेता बड़ी बड़ी बात करते है। ये वही लोग है जो 90 के दशक में लाठी में तेल पिला कर हमलोगों का शोषण करते थे ।ये वही लोग है जो नौकड़ी के बदले हमारा जमीन हड़प लेते थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली में बैठ कर गांव की महिला का दर्द समझते है और उनके खाने के लिए अनाज उज्ज्वला योजना के तहत गैस, इलाज के लिए हमारा गहना जमीन न बिके इसके लिए आयुष्मान योजना के तहत मुफ्त में इलाज, शौचालय आदि की सुविधा प्रदान कर रहे है। कहा कि लोग झूठ बोल कर हमें डरा रहे है बोलते है आरक्षण खत्म हो जाएगा,लोकतंत्र की हत्या हो जाएगी, संविधान बदल जायेगा ।ये बोलने वाले कोंग्रेस 1975 में इमरजेंसी लगा कर लोकतंत्र की हत्या कर दिए थे। उन्होंने कहा कि खतरा है राजद और कोंग्रेस से जो गरीब के कल्याण योजनाओ को खत्म कर देंगे मुफ्त के राशन आयुष्मान योजना, किसान सम्मान योजना बंद कर देंगे। ये लोग गरीब को गरीब बना कर बंटवारे की राजनीति करते है और एक तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी है जो हिन्दू मुस्लिम जाति पाती का भेद न करते हुए सबको समावेशी तरीके से योजनाओ का लाभ दे रहे है ।उन्होंने लोगो से चिराग पासवान बन कर घर घर चुनाव चिन्ह पहुचाने और शत प्रतिशत मतदान करने का वादा लिया। चिराग पासवान हाजीपुर न्यायालय परिसर में जाकर हाथ जोड़कर अधिवक्ताओं से आशीर्वाद लिया तो अधिक वक्ताओं ने भी उन्हें भरोसा दिलाया साथ में जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा भी थे। वही रोड शो में बड़ी संख्या में समर्थक चिराग पासवान का जय-जयकारा लगाते हुए चल रहे थे। पार्टी के मीडिया प्रभारी संतोष शर्मा और गुड्डू जायसवाल ने यह जानकारी दी।

किसानों से गेहूं क्रय की धीमी रफ्तार, विभाग सक्रिय

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिले में किसानों से गेहूं क्रय करने को सहकारिता विभाग अब तेजी से सक्रिय हुई है। पैक्स अध्यक्ष और व्यापार मंडल को 50-50 किसानों का गेहूं बेचने को लेकर निबंधन कराने का निर्देश जारी किया है। मालूम हो कि जिले भर में किसानों से गेहूं क्रय करने को लेकर 151 क्रय केंद्र खोले गए हैं। क्रय केंद्रों का संचालन व्यापार मंडल के अध्यक्ष और पैक्स अध्यक्षों के द्वारा किया जा रहा है। गेहूं क्रय को लेकर क्रय केंद्र के संचालकों को सहकारिता विभाग के द्वारा सहकारी बैंक से कैश क्रेडिट भी उपलब्ध कराया जा चुका है। लेकिन क्रय केंद्र से अधिक दर बाजार में मिलने की वजह से किसान क्रय केंद्रों की जगह अपना गेहूं बाजार में व्यवसायी के हाथों बेच रहें हैं। यही वजह है कि 15 मार्च से किसानों से शुरू हुई गेहूं खरीद को गति नहीं मिल पा रही है। अभी तक सिर्फ 41 किसानों से मात्र 58.74 एमटी ही गेहूं की खरीद हो सकी है। गेहूं खरीद की धीमी रफ्तार को देखते हुए अब सहकारिता विभाग पूरी तरह से सक्रिय हो चुकी है। विभाग की ओर से सभी क्रय केंद्र के संचालकों को 50 50 किसानों का निबंधन कराने के साथ साथ ही क्रय केंद्र पर गेहूं बेचने को लेकर जागरूक करने का निर्देश दिया गया है। बिचौलिया के हाथों नहीं बेचे गेहूं सहकारिता विभाग की ओर से जारी किए गए निर्देश में क्रय केंद्र संचालकों को कहा गया है कि ग्रमिण इलाकों में किसानों को जागरूक करने की जगरूत है। ग्रामिण इलाकों में किसानों अधिक रुपया देने की बात कह कर बिचौलिया गेहूं का क्रय कर किसानों का भुगतान लंबित रख रहा है। ऐसे में क्रय केंद्रों पर गेहूं बेचने वाले किसानों को 48 घंटे के अंदर उनके खाते में भुगतान हो रहा है। इस वजह से किसानों को जागरूक करने को कहा गया है। सरकारी क्रय केंद्रों पर किसानों से प्रति क्विंटल गेहूं 2275 रुपया की दर से लिया जा रहा है। गेहूं बेचने को 323 किसानों ने कराया निबंधन क्रय केंद्रों पर गेहूं बेचने के लिए 323 किसानों ने अभी तक निबंधन कराया है। सहकारिता विभाग के कहना है कि गेहूं का क्रय रैयत और गैर रैयत दोनों तरह के किसानों से होना है। विभाग के अधिकारी का कहना है कि गेहूं क्रय को लेकर विभागीय स्तर पर पूरी सक्रियता दिखाई जा रही है। क्रय कार्य लारपवाही बरतने वाले पैक्स अध्यक्षों को चिन्हित किया जा रहा है। गेहूं के क्रय में तेजी लाने का निर्देश दिया गया है। क्रय केंद्र पर गेहूं बेचने वाले किसानों का भुगतान 48 घंटे के अंदर उनके बैंक खाते में हो रहा है। किसानों को बिचौलिये के हाथों गेहूं बेचने से बचना चाहिए। इसके लिए किसानों को जागरूक किया जा रहा है।

जमीनी विवाद में मारपीट कर किया गंभीर रूप से घायल, दो गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर प्रखण्ड व थाना क्षेत्र अंतर्गत पतसंडा पंचायत में जमीनी विवाद के मामले में हुई जानलेवा मारपीट में एक महिला और उसके पुत्र को गिद्धौर थाना की पुलिस द्वारा शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया गया। मामले को लेकर मिली जानकारी के अनुसार गिद्धौर प्रखंड के पतसंडा पंचायत निवासी नंदकिशोर रावत के पुत्र मनीष कुमार रावत को जमीनी विवाद में स्थानीय निवासी दुर्गा रावत की पत्नी क्रांति देवी एवं पुत्र राहुल कुमार ने बुरी तरह से मारपीट कर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। इसमें उक्त व्यक्ति के सर, कान, पैर सहित शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोटें आई हैं। घायल मनीष कुमार रावत को परिजनों द्वारा दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में उपचार के लिए ले जाया गया। जहां गंभीर रूप से घायल व्यक्ति का उपचार किया गया। इसे लेकर पीड़ित द्वारा गिद्धौर थाना में लिखित आवेदन देकर गिद्धौर प्रखंड अंतर्गत पतसंडा पंचायत निवासी दुर्गा रावत की पत्नी क्रांति देवी एवं पुत्र राहुल कुमार पर 16 मई को मामला दर्ज कराया गया। जिसके बाद पुलिस ने करवाई करते हुए उक्त दोनों नामजद अभियुक्तों को शुक्रवार को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। गिरफ्तार करने वालों में गिद्धौर थानाध्यक्ष एवं एसआई हरेंद्र सिंह सहित सशस्त्र बल के जवान मौजूद थे।

विधायक श्रेयसी सिंह ने चिराग के पक्ष में किया प्रचार

प्रात : किरण संवाददाता

राजापाकर। राजापाकर बंघारा जहिगरा ग्राम एवं बेरई पंचायत में नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए जमुई बीजेपी विधायक ने कहा कि हमारा भारत विश्व में सर्वश्रेष्ठ देशों में एक है. यह हमारे मोदी सरकार की देन है।हम चंद्रमा पर चले गए जो कि किसी ने सोचा नहीं था।. आज विज्ञान के क्षेत्र में भी हम काफी विकास कर रहे हैं .15 साल की सरकार में लाभुक के किसी काम के लिए पैसे बिचौलिए खा जाते थे।अब मोदी सरकार में डिजिटल इंडिया के तहत सीधे लाभुक के खाते पर पैसे जा रहा है।यह हमारी अर्थव्यवस्था में सुधार है।राज्य और केंद्र सरकार की सहयोग से राज्य के सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज खोला जा रहा है। हमारे विधानसभा क्षेत्र जमुई में भी मेडिकल कॉलेज बन रहे हैं।यह केंद्र सरकार की उपलब्धि है।सड़क के क्षेत्र में भी काफी सुधार हुआ है . यह युवाओं का भारत है।खेलो इंडिया गेम के तहत हर खिलाड़ी को देश-विदेश में खेलने का मौका मिल रहा है।हम भारत से बाहर जाते हैं तो हमें काफी मान सम्मान मिलता है और हमें गर्व होता है कि हम भारतवासी हैं ।पिछले कोविड महामारी में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश के लोगों को निशुल्क वैक्सीन देने का काम किया जो की एक मिसाल है।आप सभी समझ सकते हैं की पूर्व के युपीए एवं आज के एनडीए सरकार में क्या अंतर है कहना जरूरी नहीं है।आप सभी माता भाई बहन आगामी 20 मई को एक नंबर हेलीकॉप्टर छाप पर बटन दबाकर चिराग पासवान को विजई बनाकर लोकसभा भेजने का कार्य करें ।वही जदयू प्रखंड अध्यक्ष अवधेश राय द्वारा विधायक श्रेयसी सिंह को फूल माला पहना कर एवं शाल भेंट कर स्वागत किया गया।

लोकसभा चुनाव के लिए प्रतिनियुक्त मतदान कर्मियों का तृतीय एवं अंतिम रेंडमाइजेशन संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 के मद्देनजर दिनांक 20 मई को हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र में होने वाले मतदान हेतु प्रतिनियुक्त होने वाले पीठासीन पदाधिकारियों, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय मतदान पदाधिकारियों तथा माइक्रो आब्जर्वर का तृतीय एवं अंतिम रेंडमाइजेशन सामान्य पर्यवेक्षक और जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी की उपस्थिति में एनआईसी वीसी कक्ष में डीआईओ द्वारा किया गया। इसमें हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत अवस्थित हाजीपुर, महुआ, राघोपुर, राजापाकर, लालगंज एवं महनार विधानसभा क्षेत्रों के लिए मतदान कर्मियों एवं माइक्रो ऑब्जर्वर को मतदान केंद्रों से टैग कर दिया गया। बैठक में अपर समाहर्ता (आपदा), जिला भू अर्जन पदाधिकारी, उप निर्वाचन पदाधिकारी , जिला पंचायती राज पदाधिकारी सहित अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

सम्पादकीय

चुनाव बहिष्कार की राजनीति इतिहास बनी

भारत के मुकुट कश्मीर के श्रीनगर संसदीय क्षेत्र में शांतिपूर्ण मतदान लोकतंत्र में आस्था की कहानी बयां कर रहा है। अपने बेहतर भविष्य की उम्मीदों को लेकर घरों से निकले मतदाताओं ने पिछले 28 वर्षों के मतदान का रिकॉर्ड तोड़ दिया। इस बार तीन फीसद मतदान हुआ जबकि 2019 में 14.43 और 2014 में 25.86 फीसद मतदान हुआ था। 1996 में 40.94 फीसद मतदान हुआ था और यह वह समय था जब आतंकवादियों और अलगाववादियों ने चुनाव के बहिष्कार की अपील की थी, लेकिन सेना की मदद से लोग मतदान केंद्रों पर आने में समर्थ हुए थे। लेकिन इस बार श्रीनगर के लोग बेखौफ होकर घरों से बाहर आए और मताधिकार का प्रयोग किया। जम्मू-कश्मीर में संविधान का अनुच्छेद 370 निरस्त किए जाने के बाद यह पहला आम चुनाव है। दशकों से यहां लोग चुनाव बहिष्कार, आतंक और हिंसा के डर से घरों से बाहर नहीं निकला करते थे। लेकिन अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद चुनाव बहिष्कार की राजनीति इतिहास बन गई है। श्रीनगर संसदीय क्षेत्र का दायरा पांच जिलों और 18 विधानसभा क्षेत्रों तक फैला है। हैरानी की बात यह है कि पुलवामा और शोपियां जैसे आतंकवादियों के गढ़ माने जाने वाले क्षेत्रों में पिछले चुनावों के मुकाबले इस बार मतदान अधिक हुआ। श्रीनगर संसदीय क्षेत्र के गंदरबल, बडगाम, पुलवामा, शोपियां और त्राल जैसे इलाकों में मतदान का प्रतिशत बढ़ा है जो एक नया ट्रेंड दशार्ता है। इसका साफ संकेत है कि कश्मीर घाटी के लोग अनुच्छेद 370 निरस्त करने के केंद्र सरकार के फैसले के समर्थन में हैं। यह इस बात से भी स्पष्ट होता है कि प्रतिकूल मौसम होने के बावजूद पोलिंग बूथ पर मतदाताओं की कतार लगी हुई थी। इससे यह भी साफ होता है कि यहां के लोगों ने विरोध के पक्ष में नहीं, बल्कि उम्मीद के पक्ष में वोट किया है। श्रीनगर में शांतिपूर्ण मतदान का होना और लोगों का उत्साहपूर्ण चुनाव प्रक्रिया में शामिल होने का यह भी अर्थ नहीं है कि यहां के क्षेत्रीय दलों और केंद्र सरकार के बीच विश्वास बहाली की प्रक्रिया पूरी तरह संपन्न हो गई है। नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी अनुच्छेद 370 और जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग कर रहे हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि लोक सभा के बाद विधानसभा के चुनाव में भी लोग इसी तरह उत्साह से वोट करते नजर आएंगे।

मोदी के चुनाव भाषण : झूठ और जहर का सैलाब

राम पुनियानी

इस (2024) के चुनाव में उम्मीद यह थी कि अयोध्या का राममंदिर भाजपा की नैया को किनारे लगा देगा। ज्ञानवापी का मुद्दा भी था। मगर जल्दी ही यह साफ हो गया कि राममंदिर-ज्ञानवापी जैसे मुद्दों से जनता थक चुकी है और उनका कोई खास असर पड़ने वाला नहीं है। लोगों को अपनी गिरती सामाजिक-आर्थिक स्थिति की चिंता ज्यादा है और भव्य राममंदिर की कम। भाजपा की प्रचार मशीनरी काफी मजबूत है और पार्टी का पितृ संगठन आरएसएस इस मशीनरी की पहुंच को और व्यापक बनाता है। आरएसएस-भाजपा के प्रचार अभियान का मूल आधार हमेशा से मध्यकालीन इतिहास को तोड़मरोड़ कर मुसलमानों का दानवीकरण और जातिगत व लैंगिक पदक्रम पर आधारित प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति का महिमामंडन रहा है। संघ परिवार समय-समय पर अलग-अलग थीमों का प्रयोग करता आया है। एक थीम यह है कि मुस्लिम राजाओं ने हिन्दू मंदिरों। को तोड़ा। राममंदिर आन्दोलन का मूल सन्देश यही था। फिर देश की सुरक्षा भी एक प्रमुख थीम है, जिसमें पाकिस्तान को भारत का दुश्मन बताया जाता है। बाबरी मस्जिद को ढहाए जाने के पहले वे अन्य मुस्लिम-विरोधी थीमों के अतिरिक्त, मुसलमानों के भारतीयकरण की बात भी किया करते थे।

पिछले एक दशक में उन्होंने अच्छे दिन की बात की और कई दूसरे जुमले भी उछाले, जैसे महिलाओं की सुरक्षा, हर व्यक्ति के खाते में 15 लाख आएंगे और हर साल दो करोड़ लोगों को रोजगार मिलेगा। कांग्रेस को भ्रष्ट पार्टी सिद्ध करने का प्रयास भी किया गया। आरएसएस से जुड़े संगठनों के समर्थन और उनके तत्वावधान में अन्ना आन्दोलन चलाया गया जिससे कई सालों तक लोगों के दिमाग में यह बैठा रहा कि कांग्रेस भ्रष्ट नेताओं की पार्टी है। फिर 2019 के चुनाव में पुलवामा-बालाकोट को मुद्दा बनाया गया और हमें बताया गया कि केवल भाजपा की सरकार ही देश की रक्षा कर सकती है। हालांकि इस पूरी अवधि में मुस्लिम-विरोधी प्रचार भी जारी रहा। कहने की जरुरत नहीं कि आरएसएस-भाजपा के प्रचारक सत्य और तथ्यों को बहुत महत्व नहीं देते। इस (2024) के चुनाव में उम्मीद यह थी कि अयोध्या का राममंदिर भाजपा की नैया को किनारे लगा देगा। ज्ञानवापी का मुद्दा भी था। मगर जल्दी ही यह साफ हो गया कि राममंदिर-ज्ञानवापी जैसे मुद्दों से जनता थक चुकी है और उनका कोई खास असर पड़ने वाला नहीं है। लोगों को अपनी गिरती सामाजिक-आर्थिक स्थिति की चिंता ज्यादा है और भव्य राममंदिर की कम। इसके बाद भाजपा-आरएसएस ने अपने पुरानी तरकीब एक बार फिर अपनाने का निर्णय किया। वह तरकीब है मुसलमानों की खिलाफत और समाज को धार्मिक आधार पर बांटना।

श्री मोदी ने मुसलमानों को अपना चुनावी मुद्दा बना लिया और इसके लिए समाज के कमजोर वर्गों (आदिवासी, दलित और धार्मिक अल्पसंख्यकों) के साथ न्याय, महिला सशक्तिकरण, युवाओं के लिए रोजगार और इंटर्नशिप आदि का वायदा करने वाले कांग्रेस के चुनाव घोषणापत्र का इस्तेमाल किया।

आरएसएस और उससे जुड़े संगठन, समाज के कमजोर वर्गों के साथ न्याय के पुराने विरोधी रहे हैं। सन् 1925 में आरएसएस की स्थापना ही इसलिए हुई थी क्योंकि दलित अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने लगे थे और महिलाओं की समाज में सक्रियता और हिस्सेदारी बढ़ने लगी थी। भाजपा को यह अहसास हो गया कि आरक्षण और सकारात्मक भेदभाव की नीतियों पर राहुल गांधी के जोर देने का जनता पर सकारत्मक प्रभाव पड़ रहा है। अब भाजपा खुल कर तो यह कह नहीं सकती थी कि वह आरक्षण की विरोधी है साथ ही, उसे राहुल गांधी के बढ़ते ग्राफ से भी निपटना था। इस दिशा में पहला कदम था संघ के मुखिया की यह गलतबयानी कि आरएसएस कभी आरक्षण का विरोधी नहीं रहा है। दूसरी ओर मोदी नई खिचड़ी पका रहे हैं। वे कह रहे हैं, ह्य...कांग्रेस दलितों और पिछड़ों के लिए निर्धारित कोटा को घटा कर मुसलमानों को आरक्षण देना चाहती है, जो संविधान के खिलाफ है। बाबा साहेब ने आरक्षण का जो अधिकार दलितों, पिछड़े वर्गों और आदिवासियों को दिया था, उसे कांग्रेस और इंडी गठबंधन धर्म के आधार पर मुसलमानों को देना चाहते हैं। मोदी ने कांग्रेस के घोषणापत्र में जाति जनगणना की बात और उसे समाज का एक्सरे बताए जाने का उपयोग भी अपने मुस्लिम-विरोधी प्रचार में किया। उन्होंने झूठ बोलने के नए रिकॉर्ड कायम करते हुए कहा कि कांग्रेस एक्सरे कर यह पता लगाएगी कि किस हिन्दू के पास सोना और धन है और फिर उसे घुसपैठियों (जो भाजपा का मुसलमानों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाले शब्द है) में बांट देगी। हिन्दुओं और विशेषकर हिन्दू महिलाओं को डराने के लिए उन्होंने कहा, ह्यमेरी माताओं और बहनों, वे आपके मंगलसूत्र भी नहीं छोड़ेंगे। कांग्रेस के घोषणापत्र में कहा गया है कि अगर उनकी सरकार बनती है, तो देश के हर व्यक्ति की संपत्ति का सर्वेक्षण किया जायेगा। यह पता लगाया जाएगा कि हमारी बहनों के पास कितना सोना है और सरकारी कर्मचारियों की कितनी संपत्ति है...उन्होंने यह भी कहा है कि हमारी बहनों के पास जो सोना है, उसे सब लोगों में बराबर-बराबर बांटा जाएगा। क्या सरकार को आपकी सम्पति आपसे छीनने का हक है? उन्होंने कहा कि हिन्दू महिलाओं का मंगलसूत्र छीन कर मुसलमानों को दे दिया जाएगा। यह सब कहकर वे एक तीर से कई निशाने लगाने का प्रयास कर रहे हैं। पहला, कांग्रेस के घोषणापत्र की आलोचना, दूसरा, मुसलमानों पर निशाना साधना और तीसरा, हिन्दू महिलाओं को डराना। आखिर कोई कितना झूठ बोल सकता है। उन्हें यह भरोसा है कि बड़ी संख्या में लोग उनके झूठ के पुलिंदे पर विश्वास कर लेंगे. वे जानते हैं कि संघ परिवार के प्रतिबद्ध कार्यकर्ता, उसका आईटी सेल और कॉर्पोरेट घरानों द्वारा नियंत्रित टीवी चैनल और अखबार यह सुनिश्चित करेंगे कि इस सफेद झूठ को आमजनों का एक बड़ा तबका गंभीरता से ले। यहां तक कि उन्होंने बेचारी भैंस, जिसे भाजपा के गौमाता-केन्द्रित नैरेटिव में कभी जगह नहीं मिली, को भी अपने प्रचार में घसीट लिया। ह्यअगर आपके पास दो भैंसे होंगीं, तो कांग्रेस उनमें से एक को आपके बाड़े से खोल ले जाएगी। और फिर भला यह कैसे संभव है कि भाजपा-मोदी के चुनाव अभियान में पाकिस्तान की चर्चा न हो। मोदीजी ने फरमाया कि पाकिस्तान चाहता है कि भारत में कमजोर सरकार बने। फहाद चौधरी नामक एक सज्जन, जो पाकिस्तान के पूर्व मंत्री हैं

भाजपा अखंड भारत का सपना पूरा करने में सक्षम होगा

तब न भीम राव अम्बेद्कर साहब का सपना साकार होता! मगर यहाँ तो बड़ी मछली छोटी मछलियों का हिस्सा भी खा रहा है है और कह रहा है कि हम तुम्हारे अधिकार के लिए लड़ रहे है। लडता ऊ अपने लिए ,अपने परिवार के लिए है और झांसा अपने ही जाति, समाज को डसता है।कैसे होगा देश समाज और गरीबों का कल्यान,दीन, हीन का उत्थान?क्या-क्या सपना सजोया था देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने,शहीदों ने,बलिदानियों ने , सबका सपना चूर-चूर हो गया।न गाँधीरहे,नसुभाष,न लोहिया ,न कपूर्री और न अटलजी ही रहे और न सम्पूर्ण क्रांति के लोकनायक जयप्रकाश ही! कोन सुनेगा,कौन उठायेगा दीन ,हीन वेसहारो की आबाज को? कौन लडेगा इनके हक की लड़ाई को?बस अब एक भाजपा ही बची है जिस पर जनताआशा भरी निगाहों से देख रही है 'देश के अधिकांस दल,नेताअपने - अपने वंश को बढानेकी लड़ाई लड़ रहे हैं। इस परिवारवाद,वंशवाद ,जाति वाद,धर्मवाद की लड़ाई में भारत और भारत की गरीब जनता पीछे हो गयी ।आगे हो गए चाटुकार,चोर ,उचक्के। कौन आगे आएगा ? सबको अपने बेटोंकोइन्जीनियर,डाक्टर आई एएस बनानेकी धुन सवार है तो कहाँ से आयेगा जेपी,सुभाष, अटल बिहारी वाजपेयी और विवेकाननद ? कौन अपनी जवानी देश के लिए कुर्बान करेगा? भारत का सौभाग्य सूर्य,हिमालय भाल का ज्योतिर्मय तिलक विन्दु,राष्ट्र का सबसे अनमोल दिवस, मुक्ति का अमर आलोक पर्व15 अगस्त 1947 स्वतंत्रता दिवस भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।

रवीन्द्र कुमार रतन
स्वतंत्र लेखन

काफी लम्बी लड़ाई,त्याग तपस्या और शहादत के बाद मिली भारत की आजादी क्या व्यवस्था बदल पाई। नहीं। गरीब और गरीब होते गए और अमीर और. अमीर होते गए।आरक्षण कुछ परिवारों मे सिमट कर रह गए।नेता हो या अभिनेता जो आरक्षण का लाभ लेकर एक बार आगे बढ़ गए उन्हे संपन्न की श्रेणी मे रख कर उन्हे समान्य कैट गोरी में आना चाहिए। फिर जो सही हक दार है उसे या उसके परिवार को आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए।तब न भीम राव अम्बेद्कर साहब का सपना साकार होता! मगर यहाँ तो बड़ी मछली छोटी मछलियों का हिस्सा भी खा रहा है है और कह रहा है कि हम तुम्हारे अधिकार के लिए लड़ रहे है। लडता ऊ अपने लिए ,अपने परिवार के लिए है और झांसा अपने ही जाति, समाज को डसता है।कैसे होगा देश समाज और गरीबों का कल्यान,दीन, हीन का उत्थान?क्या-क्या सपना सजोया था देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने,शहीदों ने,बलिदानियों ने , सबका सपना चूर-चूर हो गया।न गाँधीरहे,नसुभाष,न लोहिया ,न कपूर्री और न अटलजी ही रहे और न सम्पूर्ण क्रांति के लोकनायक जयप्रकाश ही! कोन सुनेगा,कौन उठायेगा दीन ,हीन वेसहारो की आबाज को? कौन लडेगा इनके हक की लड़ाई को?बस अब एक भाजपा ही बची है जिस पर जनताआशा भरी निगाहों से देख रही है 'देश के अधिकांस दल,नेताअपने - अपने वंश को बढानेकी लड़ाई लड़ रहे हैं। इस परिवारवाद,वंशवाद ,जाति वाद,धर्मवाद की लड़ाई में भारत और भारत की गरीब जनता पीछे हो गयी ।आगे हो गए चाटुकार,चोर ,उचक्के। कौन आगे आएगा ? सबको अपने बेटोंकोइन्जीनियर,डाक्टर आई एएस बनानेकी धुन सवार है तो कहाँ से आयेगा जेपी,सुभाष, अटल बिहारी वाजपेयी और विवेकाननद ? कौन अपनी जवानी देश के लिए कुर्बान करेगा? भारत का सौभाग्य सूर्य,हिमालय भाल का ज्योतिर्मय तिलक विन्दु,राष्ट्र का सबसे अनमोल दिवस, मुक्ति का अमर आलोक पर्व15 अगस्त 1947 स्वतंत्रता दिवस भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।इस दिन के आगमन में न जाने कितनीमाताओं के मांग के दमकतेसिन्दरों से, कितने बुढो के अन्धेरे घरों के चिराग से ,न जाने कितनी बहनों की लालराखी से इस आजादी के स्वागत की आरती सजी थी , ऐसा होता भी क्यों नही?अनय-भित्ति फिरंगींयो के शासन का उन्मूलन जो हुआ,जुल्म का जनाजा निकल गया। तब जाके उस दिन राष्ट्र के स्वर्णिम प्रभात से सुसज्जित उषा रानी स्वतंत्रता की मोहक किरणों को छिटकाती प्रकट हुई थी । जन जीवन ने मुद्दत के बाद नयी अन्गराई ली थी । एक नई ताजगी की लहर सर्वत्र लहरा रही थी । हमारे स्वतंत्रता संग्राम के 77 वर्षों का इतिहास स्मृति के वातायन से झांकने लगता है यदि हम इस इतिहास काअवलोकन करते हैं तो हमारे सामने उपलब्धियों एवं अभावों का धुपछाहीं परिधान निर्मित हो जाता है ।हम प्रगति की सीढियों पर चढे है याअगति के खण्डकों मे गिरे हैं।हमने मनःकामनाओं की मंजिल ही पायी है या मिला जुला कर यथास्थिति के परिधि की ही फेरी लगाई है । निर्णय कर सहसा कहना कठिन हो जाता है। भारत माँ अब मौन त्याग तुम ही बोलो! क्या यह वही आजादी है, जिसके लाने के लिए न जाने कितनी वीरांगनाएँ अपनी मांग के दमकते सिन्दरों से, वच्चों ने अपने खिलौने,बच्चियों ने अपनी राखियों से सजाकर आरती उतारी थी। अहा!क्या यह वही आजादी है जिसके लिए भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद,खुदी राम , विद्रोही सुवाष,जैसे वीर बान्कुरों ने अपनी- अपनी जान की बाजी लगा दी थी। कत्तई नहीं ,यह वह स्वतंत्रत्ता दिवस नहीं है जिसके लिए गोखले, तिलक गाँधी ने तपस्या की थी ?राम -कृष्ण,अल्ला,गुरुगोविन्द सिंह और ईषा मसीह के देश मेंजाति,धर्म,भाई-भतीजावाद,वंशवाद,परिवारवाद, दऔर पैसों के लिय लोग देश की आजादी को दाव पर लगा देते हैं। आज न आर्थिक आजादी है ना समाजिक ,ना भाषाई, ना धार्मिक !आजादी है । दल बदलने की, आजादी शोषण की,आजादी है भ्रश्टाचार की,आजादी है लुटने की, आजादी हैं माँ बहनो के अस्मत लुटने की।एसी आजादी से क्या जहाँ हम चैन की जिन्दगी भी न जी सकें। देश में गरिवी-अमीरी की, अल्प संख्यक बहुसंख्यक की। इतनी विषमताएं है कि इसे मिटाना और पाटना मुस्किल है इस देश का यदि कल्याण चाहते हो तो आपस मे मिल कर , स्नेह , प्रेम , प्यार से रहना सीखो। ऊंच नीचका भेद मिताओ। देश मे कड़े नियम की आवश्यकता है यह नहीं कि संविधान लिखे कोई और लेखक कहलाय कोई।देश में दो ही जाति हो-गरीब-अमीर ।हर गरीब को शिक्षा, सुरक्षा ,रोटी कपडा और मकान मिले। हर अमीर को मान सम्मान सुख शान्ति और स्वभिमान की रक्षा हो। सबका विकास, सबकी रक्षा , सबको इज्जत मिले, सबका भारत इसका विधान बने।सबके लिए समान नियम कायदा कानुन बने। धरा जब -जब विकल होती मुसिवत का जब समयआता। किसी भी रुप मे तब कोई महामानव निकल आता। किन्तु आज हमारे राष्ट्र पर संकट के इतने कालेह्न बादल मडरा रहें है कि हमारी आजादी खतरे मे पड़ी है तब भी हे! मोहन तुम फिर मोहन दास के रुप में जन्म क्यों नही लेते। भारत की एसी दुर्दशा देख परोसियों के मन में हमारी आजादी खटक रही है। तभी तो कोई सोना तो कोई सेना दिखाकर हमारी आजादी को हड़पने की कोशिश कर रहा है , पर मैं तो कविवर नेपाली जी के स्वर में स्वर मिला कर यही कहूंगा की तुमको नही पहचान है यह क्रांति क्या तुफान है? फौलाद की दीवाल,अब यह आजाद हिन्दोस्तान है। मगर घबराने और हाथ पर हाथ रखने से देश का कल्याण नही होने वाला है।हम हिम्मत न हारे, हमे जागरण का संदेश देकर विकास की सुन्दर लहर उठनी है निष्ठा की नयी सारणी बनानी है कर्मठ्ता की नई डगर निकाल कर वह स्वर्णिम प्रभात वाला भविष्य दुर नहीं जबकि हमारा भारत पुनःआर्थिकसांस्कृतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का शिरोमणि राष्ट्र बनने जा रहा है।और भारत की खोई प्रतिष्ठा पुनः लौट जाय। राम कृष्ण का यह देश पुनः विश्वगुरु बन विश्व रंग मंच पर अपना परचम लहराएऔर भारत की आजादी निष्कंटक हो आगे बढे ।एक बार फिर सभी सेनानियो को शत बार प्रणाम । कोटि कोटि नमन। आज सबके सामने एक ही प्रश्न गुँज रहा है।आजादी तो हमे मिल गई , मगर क्या व्यवस्था बदली? नही! तो क्या इसी आजादी केलिए भगतसिंह, खुदीराम वोस,सुभाष चन्द्र वोस,मेरे पिताश्री विश्वनाथ प्र0 श्रीवास्तव,जे0 पी,गाँधी जैसे महान नेताओं ने लड़ाई लड़ी थी।क्या आज की युवापीढीहाथ पर हाथ रख कर तमाशा देखती रहेगी।जगो देश के नव जवानो, माता तुम्हे पुकार रही है, वीरो को ललकार रही है।जय हिन्द ,जय जवान,जय किसान,जय विज्ञान,जय भारत । लोहिया ,न कपूर्री और न रहे सम्पूर्ण क्रांति के लोकनायक जयप्रकाश !कोन सुनेगा,कौन उठायेगा दीन ,हीन वेसहारो की आबाज को? कौन लडेगा इनके हक की लड़ाई को?

झूठे वायदों एवं वादों से चुनाव को बचाना होगा

राजनीतिक दल चार चरणों के बाद जिस तरह के जीत के तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं, वह हास्यास्पद एवं अविश्वसनीय है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने दावा किया कि लोकसभा चुनाव के 4 चरण पूरा होने के बाद विपक्षी ह्यइंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंसह्न यानी इंडिया गठबंधन मजबूत स्थिति में है और चार जून के बाद सरकार बनाएगा। इसी तरह ममता बनर्जी, अरविन्द केजरीवाल एवं अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी की करारी हार की बात कही है। वर्ष 2019 के चुनाव के दौर भी इन नेताओं ने ऐसे ही बयान दिये थे, जो चुनाव परिणाम के बाद झूठे साबित हुए। इस तरह के अतिश्योक्तिपूर्ण, आधे-अधूरे, सत्यता से परे के बयानों से राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता अपने निचले पायदान पर पहुंच चुकी है और तेजी से घट रही है। जिस प्रकार विभिन्न दलों के नेताओं की भाषा, बयान एवं लोकलुभावन वायदे निम्न स्तर पर पहुंच रहे है, उसे देखकर कहा जा सकता है कि हमारे लोकतंत्र का स्वास्थ्य कहीं-ना-कहीं खराब जरूर हो रहा है। आम आदमी पार्टी (आप) के वादे और उनके काम के बीच फासला लगातार बढ़ता रहा है, देश की भोली भाली जनता को आपका बेटा, आपकी बेटी कहकर सहानुभूति पाने की उसकी कुचेष्ठाओं का पदार्पाश पहले ही हो गया है। ह्यआपह्न ने अपने कामकाज के तरीके में पूरी पारदर्शिता का वादा किया था, लेकिन लोकसभा के लिए उम्मीदवारों के चयन में इसका ख्याल नहीं रखा गया है। हाल ही में पंजाब की चुनावी सभाओं में पार्टी नेता अरविन्द केजरीवाल ने बृजभूषण पर तो गंभीर आरोप लगाते हुए भाजपा को दागगार घोषित किया लेकिन वे अपने ही मुख्यमंत्री निवास पर राज्यसभा सांसद एवं पूर्व दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाती मालीमाल के साथ हुई मारपीट एवं अशिष्टता को भूल गये। निश्चित ही आप की कथनी और करनी में गहरा फासला है। इन्हीं केजरीवाल ने जनता को गुमराह करने एवं ठगने के लिये पिछले गुजरात के विधानसभा चुनाव में प्रचार के दौरान एक सादे कागज पर अपने हस्ताक्षर करते हुए गुजरात में आप की सरकार बनने का दावा किया, जबकि उन चुनावों में आप के 4-5 सीटों पर जीत के अलावा सभी सीटों पर आप उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गयी थी। एक बार फिर इन लोकसभा चुनावों में वे ऐसा ही करते हुए झूठे दावे कर रहे हैं। इससे आप पार्टी की विश्वसनीयता एवं पारदर्शिता के दावों पर सवालिया निशान लग रहे हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हाल ही में दावा किया है कि उनकी पार्टी 2009 के आम चुनाव से बेहतर प्रदर्शन करेगी। यह दावा वास्तविकता से कोसों दूर है और राजनीतिक हलकों में उपहास का विषय बन गया है। जब कांग्रेस ने इन चुनावों में कोई लक्ष्य ही तय नहीं किया है तो कौन से लक्ष्य को पाने एवं जीत की बात कांग्रेस कर रही है? जैसे भाजपा ने 400 पार का लक्ष्य बनाया है, क्या कांग्रेस का ऐसा कोई लक्ष्य है? पार्टी के कार्यकर्ता बिना लक्ष्य के किसे अपना मिशन बनाये? कांग्रेस का एक दावा ये भी है कि वो लोकसभा में साफ सुथरी छवि वाले उम्मीदवारों को उतार रही है लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। कई उम्मीदवारों को भ्रष्टाचार के उन आरोपों के बाद भी टिकट दिए गए हैं जिसकी जांच सीबीआई कर रही है। हाल के दिनों में, प्रत्येक राजनीतिक दल के घोषणापत्र में वादों की लंबी चौड़ी फेहरिस्त सामने आयी है। जबकि अतीत में किए उनके काम बताते हैं कि सत्ता में आने के बाद वे अपने घोषणा पत्र के कुछ ही हिस्सों को लागू कर पाते हैं। जो सत्ता में नहीं आ पाते वो अपने घोषणापत्र को कूड़े के डब्बे में डाल देते हैं। विडम्बना तो यह भी है कि जिन दलों को चुनाव जीतने की आशा नहीं है, वे बेतूके वायदे एवं घोषणाएं करके आम मतदाता को भ्रमित करते हैं। शुरूआत से ही राजनीतिक दल वादे इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें सत्ता की चाभी सौंपें। लेकिन चुनावी मौसम में राजनीतिक दल और राजनेता अपने अपने कामों के बारे में बढ़ चढ़कर दावे करते हैं और उन्हें भरोसा रहता है कि मासूम और भोली जनता उनके दावों पर यकीन कर लेगी, इसलिए वे लुभावने वादों की झड़ी लगा देते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने उत्तरप्रदेश की एक सभा में चार चरण पूरे होने के बाद भाजपा के 5 किलो मुफ्त अनाज की जगह 10 किलो मुफ्त अनाज की घोषणा कर है। बेवक्त पर की गयी यह घोषणा भी पार्टी की अपरिपक्वता को उजागर कर रही है। हालांकि ऐसे वादे हमेशा खाली जाते हैं या अधूरे रहते हैं। वादे करने का मतलब उसे पूरा करना ही नहीं होता। अतीत में, कांग्रेस की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ के नारे के साथ 1971 का चुनाव जरूर जीता था। लेकिन लगातार दो बार सत्ता में आने के बाद भी देश से गरीबी नहीं हटी क्योंकि ज्यादातर सरकारी योजनाएं आम गरीबों तक पहुंची ही नहीं।

ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

लोकसभा चुनाव के चार चरण पूरे हो गये हैं, पांचवें चरण की ओर बढ़ते हुए चुनावी सरगर्मी बढ़ रही है। तमाम राजनीतिक दलों में वास्तविकता से दूर झूठे, तथ्य-आधारहीन, भ्रामक एवं बेबुनियाद वादे करने की आपसी होड़ बढ़ती जा रही है। राजनीतिक दल चार चरणों के बाद जिस तरह के जीत के तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं, वह हास्यास्पद एवं अविश्वसनीय है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने दावा किया कि लोकसभा चुनाव के 4 चरण पूरा होने के बाद विपक्षी ह्यइंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंसह्न यानी इंडिया गठबंधन मजबूत स्थिति में है और चार जून के बाद सरकार बनाएगा। इसी तरह ममता बनर्जी, अरविन्द केजरीवाल एवं अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी की करारी हार की बात कही है। वर्ष 2019 के चुनाव के दौर भी इन नेताओं ने ऐसे ही बयान दिये थे, जो चुनाव परिणाम के बाद झूठे साबित हुए। इस तरह के अतिश्योक्तिपूर्ण, आधे-अधूरे, सत्यता से परे के बयानों से राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता अपने निचले पायदान पर पहुंच चुकी है और तेजी से घट रही है। जिस प्रकार विभिन्न दलों के नेताओं की भाषा, बयान एवं लोकलुभावन वायदे निम्न स्तर पर पहुंच रहे है, उसे देखकर कहा जा सकता है कि हमारे लोकतंत्र का स्वास्थ्य कहीं-ना-कहीं खराब जरूर हो रहा है। आम आदमी पार्टी (आप) के वादे और उनके काम के बीच फासला लगातार बढ़ता रहा है, देश की भोली भाली जनता को आपका बेटा, आपकी बेटी कहकर सहानुभूति पाने की उसकी कुचेष्ठाओं का पदार्पाश पहले ही हो गया है। ह्यआपह्न ने अपने कामकाज के तरीके में पूरी पारदर्शिता का वादा किया था, लेकिन लोकसभा के लिए उम्मीदवारों के चयन में इसका ख्याल नहीं रखा गया है। हाल ही में पंजाब की चुनावी सभाओं में पार्टी नेता अरविन्द केजरीवाल ने बृजभूषण पर तो गंभीर आरोप लगाते हुए भाजपा को दागगार घोषित किया लेकिन वे अपने ही मुख्यमंत्री निवास पर राज्यसभा सांसद एवं पूर्व दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाती मालीमाल के साथ हुई मारपीट एवं अशिष्टता को भूल गये। निश्चित ही आप की कथनी और करनी में गहरा फासला है। इन्हीं केजरीवाल ने जनता को गुमराह करने एवं ठगने के लिये पिछले गुजरात के विधानसभा चुनाव में प्रचार के दौरान एक सादे कागज पर अपने हस्ताक्षर करते हुए गुजरात में आप की सरकार बनने का दावा किया, जबकि उन चुनावों में आप के 4-5 सीटों पर जीत के अलावा सभी सीटों पर आप उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गयी थी। एक बार फिर इन लोकसभा चुनावों में वे ऐसा ही करते हुए झूठे दावे कर रहे हैं। इससे आप पार्टी की विश्वसनीयता एवं पारदर्शिता के दावों पर सवालिया निशान लग रहे हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हाल ही में दावा किया है कि उनकी पार्टी 2009 के आम चुनाव से बेहतर प्रदर्शन करेगी। यह दावा वास्तविकता से कोसों दूर है और राजनीतिक हलकों में उपहास का विषय बन गया है। जब कांग्रेस ने इन चुनावों में कोई लक्ष्य ही तय नहीं किया है तो कौन से लक्ष्य को पाने एवं जीत की बात कांग्रेस कर रही है? जैसे भाजपा ने 400 पार का लक्ष्य बनाया है, क्या कांग्रेस का ऐसा कोई लक्ष्य है? पार्टी के कार्यकर्ता बिना लक्ष्य के किसे अपना मिशन बनाये? कांग्रेस का एक दावा ये भी है कि वो लोकसभा में साफ सुथरी छवि वाले उम्मीदवारों को उतार रही है लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। कई उम्मीदवारों को भ्रष्टाचार के उन आरोपों के बाद भी टिकट दिए गए हैं जिसकी जांच सीबीआई कर रही है। हाल के दिनों में, प्रत्येक राजनीतिक दल के घोषणापत्र में वादों की लंबी चौड़ी फेहरिस्त सामने आयी है। जबकि अतीत में किए उनके काम बताते हैं कि सत्ता में आने के बाद वे अपने घोषणा पत्र के कुछ ही हिस्सों को लागू कर पाते हैं।

झूठे वायदों एवं वादों से चुनाव को बचाना होगा

ललित गर्ग

संक्षिप्त खबरें

आलेख संग्रह फिकरो नजर का हुआ भव्य लोकार्पण

बेतिया मोहन सिंह । नगर के बड़ी मस्जिद स्थित,मदरसा इस्लामिया के सभागार में, स्वर्गीय सगीर हैदर की लिखी हुई आलेख संग्रह फिकरो नजर का भव्य लोकार्पण का आयोजन किया गया। इस मौके पर शहर के गणमान्य व्यक्ति अदीब,शायर,शुभचिंतक, ईस्टमित्र, सगे संबंधी सैकड़ो की संख्या में उपस्थित रहे। अदब इस्लामी हिंद बेतिया शाखा के बैनर तले इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस मौके पर सचिव, फहीम हैदर नदवी व अध्यक्ष, डॉक्टर कमरुज्जमा कमर ने महती भूमिका निभाई। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में ,मुजीब उल हक,अब्दुल खैर निशतर, जफर इमाम कादरी,सैयद शहाबुद्दीन अहमद,डॉ जाकिर हुसैन जाकिर,डॉ आरआजम, मोहम्मद अलाउद्दीन, इत्तेखार अहमद वसी साहब,अख्तर हुसैन अख्तर , अब्दुल मजीद खान एवं अन्य सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

श्यामचक मुहल्ले के निवासियों की बड़ी जीत

छपरा कार्यालय। शुक्रवार को शहर के श्यामचाक मे निमार्णाधीन आर ओ बी मे अंडर पास बनाने का चीर परिचित मांग पूरा होता हुआ नजर आया जब आर ओ बी के पैनल को एन एच आई के अधिकारियों द्वारा हटा दिया गया। ज्ञातव्य है कि श्यामचक के निवासी लंबे समय से अंडर पास की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे थे, इसके लिए धरना प्रदर्शन कर अपनी गुहार जिलाधिकारी सहित एन एच आई के आला अधिकारियों, केंद्रीय सड़क एवम परिवहन मंत्री, चुनाव आयोग आदि के पास लगाकर मतदान के बहिष्कार तक का अल्टिमेटम दिया था। अब सारण के जिलाधिकारी ने अंडर पास निर्माण हेतु एन एच आई के अपर मुख्य सचिव को अनुशंसा भी भेज दी है। श्यामचक निवासियों मे खुशी की लहर है। अंडरपास निर्माण संघर्ष मोर्चा के नेता और श्यामचक के कम्युनिस्ट नेता सुरेन्द्र सौरभ ने कहा है कि यह श्यामचक निवासियों के संघर्ष की जीत है। मतदान बहिष्कार वापस ले लिया गया है और यह अपील की गई है कि मतदान मे बढ़ चढ़कर हिस्सा लें।

कार पलटने से महिला की मौत, दो घायल

मशरक। मशरक के बंगरा पेट्रोल पंप के पास बाइक सवार को बचाने के दौरान स्विफ्ट कार अनियंत्रित हो गढ़े में पलट गई जिसमें कार में सवार एक महिला की मौत हो गई वहीं दो शख्स घायल हो गए। मृतक गोपालगंज जिले के बरौली थाना क्षेत्र के नधना गांव निवासी इंदू देवी उम्र 60 वर्ष पति मनोज सिंह और घायल मनोज सिंह उम्र 60 वर्ष पिता स्व रामनरेश सिंह व 35 वर्षीय पुत्र पियूष कुमार हैं। ग्रामीणों ने घायल तीनों को इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया जहां महिला को चिकित्सक डॉ कविता सिंह ने मृत घोषित कर दिया।

चुनाव से महत्तवपूर्ण दायित्व प्रशासन के लिए कोई कार्य नहीं:डीएम

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। सारण लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के छह विधान सभा के लिए प्रतिनियुक्त कुल 195 सेक्टर पदाधिकारी और पुलिस पदाधिकारियों की संयुक्त ब्रीफिंग शुक्रवार को जिला प्रेक्षा गृह में आयोजित की गयी। इस अवसर पर उन्हें रिपोर्टिंग संबंधी सभी प्रपत्रों, इवीएम स्टिकर और अन्य सामग्रियों की कीट उपलब्ध करायी गयी। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी अमन समीर ने अपने संबोधन में कहा कि चुनाव से महत्तवपूर्ण दायित्व प्रशासन के लिए कोई कार्य नहीं। उन्होंने इसे अति गंभीरता से लेते हुए आज से लेकर चुनाव के दो दिन पहले पार्टी मिलान, एक दिन पहले इवीएम रिसीविंग, मतदान दिवस को पोलिंग से लेकर मशीन जमा करने तक सभी कार्यों को फ्लो चार्ट के अनुसार समझाया। उन्होंने कहा कि ब्रीफिंग के बाद आप सभी वाहन प्राप्त कर सीधे आवंटित क्षेत्र में जाएंगे। लोगों से मिलेंगे और कॉन्फिडेंस बिल्डिंग करते हुए मतदान देने को प्रेरित करेंगे। थानों से निरोधात्मक कार्रवाई, भेद्यता चिह्नीकरण की सूची प्राप्त करेंगे। की गयी कार्रवाई से अवगत होंगे। ऐसे लोगों से जरूर संवाद करेंगे। 18 मई को पार्टी मिलान स्थल पर पहुंच कर सम्बद्ध सभी पोलिंग पार्टी से परिचय और नंबर का आदान प्रदान करते हुए ब्रीफिंग के बाद समान्य और स्पेशल थैले की सामग्री प्राप्ति में सहयोग करेंगे। पुनः क्षेत्र में जाकर अपना मूल कार्य करेंगे। 19 मई को डिस्पैच स्थल पर पोलिंग पार्टी को इवीएम प्राप्ति और संबद्ध वाहन से बूथ पर रवाना करने के बाद अपना रिजर्व इवीएम प्राप्त कर अधिक बूथ वाले भवन पर स्टैटिक हो जाएंगे। इवीएम के साथ बिल्कुल सतर्क और संवेदनशील रहेंगे। किसी भी कीमत पर किसी सार्वजनिक स्थल, दुकान, गुमटी या टपरी पर नहीं रुकेंगे। इस मामले में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनायी जाएगी और सीधे ऐक्शन होगा। 20 मई पोल डे को सबसे पहले वेब कास्टिंग वाले बूथ का सेटअप देखेंगे। यह सुनिश्चित करेंगे कि मतदान की गोपनीयता भंग ना हो। आयोग के निदेर्शानुसार सभी पोलिंग पार्टी के सदस्य बूथ के अंदर बैठेंगे। स्थान की उपलब्धता के अनुसार पोलिंग एजेंट के बैठने की व्यवस्था रहेगी। पीओ को छोड़ कर किसी भी कर्मी, एजेंट या मतदाता को बूथ के अंदर मोबाईल लेजाने की इजाजत नहीं होगी। मॉक पोल के समय ऐक्टिव मोड में रहेंगे। मशीनों में समस्या की सूचना अधिक उसी समय आएगी। तकनीकी समस्या दूर नहीं होने पर कंट्रोल रूम से सहायता के लिए कॉल करेंगे। इंजीनियर या अधिकारी की अनुशंसा मिलने पर अपने सुरक्षित मशीन से रिप्लेस करेंगे। इस संबंधी फॉर्मेट भरते ही तत्काल इसकी सूचना कंट्रोल रूम को देंगे। वास्तविक मतदान, या अन्य रिपोर्ट भरते समय पीओ के डाटा से मिलान करना सुनिश्चित करेंगे। शाम चार से छह का प्रोटोकॉल अति महत्वपूर्ण है। इस समय विशेष सतर्कता बरतना है। जहां मतदाता के अधिक भीड़ जमा होने की सूचना हो वहां स्टेशंड होते हुए सीएपीएफ, पुलिस, जोनल या कंट्रोल रूम को सूचना देंगे। पोल समाप्ति पर अपने पास मौजूद अनयूज्ड और खराब इवीएम लेकर सीधे सदर प्रखंड के निकट अवस्थित वेयरहाउस जाएंगे। भूल से भी मशीन के साथ बाजार समिति नहीं जाएंगे। वहां केवल पीओ के पोल्ड इवीएम जमा होंगे। वेयरहाउस से लौट कर बाजार समिति पहुंच अपने सभी पोलिंग पार्टी का इवीएम जमा होने के बाद ही प्रस्थान करेंगे।

एसपी डॉ गौरव मंगला ने अपने संबोधन में कहा कि चुनाव शुरू होते ही सबसे ज्यादा आपको कॉल आएंगे। आप कोई कॉल मिस नहीं करेंगे और प्रॉपर रिस्पॉन्ड करेंगे। फिल्ड से भी समस्या का कॉल आएगा। आप पहले रिस्पॉन्डर की तरह ऐक्ट करते हुए ऐक्शन लेंगे। जरूरत पड़ने पर थाना, कंट्रोल रूम या क्युआरटी को सूचित करेंगे। अफवाहें भी तेजी से फैलेंगी। ऐसी स्थिति में स्थिति समान्य का छोटा वीडियो बना कर भेजेंगे।

चुनाव की तिथि नजदीक आते ही लड़ाई हुई दिलचस्प

प्रात: किरण, संवाददाता

दरियापुर।स्थानीय प्रखण्ड क्षेत्र में लोकसभा चुनाव की तिथि जैसे-जैसे नजदीक आ रही है वैसे- वैसे लड़ाई दिलचस्प होती जा रही है।एक तरफ जहां मतदाताओं को अपने पक्ष में एकजुट रखने के लिए एनडीए गठबंधन के द्वारा प्रत्येक गांव में पूर्व सांसद शाहनवाज हुसैन,पूर्व मंत्री चंद्रिका राय,विधान पार्षद सचिदानंद राय,मंत्री जनक राम,राकेश सिंह समेत अलग अलग बिरादरी के नेता अपने अपने समाज में जनसंपर्क कर रहे हैं।इसके साथ ही डेरनी खेल मैदान में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक विशाल जनसभा को संबोधित कर मतदाताओं को काफी हद तक अपने पक्ष में करने में सफल रहे है, वहीं राजद गठबंधन के द्वारा भी अपने कोर वोटरों को एकजुट कर लेने का दावा किया जा रहा है। यहां तक की आगामी एक दो दिनों में डेरनी में पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव की सभा भी आयोजित होने की बात बताई जा रही है। वहीं निर्दलीय प्रत्याशी पूर्व विधायक चोकर बाबा भी लगातार रोड शो तथा जनसंपर्क कर लड़ाई को त्रिकोणीय बनाने में जुटे हुए हैं।चुनाव को लेकर भाजपा कार्यकर्ता पंकज सिंह,विनय शर्मा,मोनू सिंह,रंजीत सिंह आदि ने कहा की राजीव प्रताप रूढ़ी के किए गए विकास कार्यों तथा नरेंद्र मोदी के नितियो के कारण समाज के सभी वर्गो का पूरा समर्थन मिल रहा है।जिससे एनडीए प्रत्यासी की जीत निश्चित है। वहीं राजद के कई नेताओं ने भी लालू प्रसाद द्वारा सारण के लिए किए गए विकास कार्यों तथा गरीबों का हितैषी बताते हुए जीत निश्चित होने का दावा कर रहे है।जबकि चोकर बाबा के समर्थक भी समाज के सभी वर्गो का समर्थन मिलने का दावा कर रहे है ऐसे में दरियापुर में लड़ाई काफी दिलचस्प हो गई है।अब देखना यह होगा की ऊंट किस करवट बैठता है।

हार्ट अटैक से पूर्व सरपंच भूषण का निधन

प्रात: किरण, संवाददाता

इसुआपुर। आतानगर पंचायत के पूर्व सरपंच तथा वर्तमान सरपंच कांति सिन्हा के 72 वर्षीय रिटायर्ड फौजी पति ब्रजभूषण कुमार सिन्हा का असामयिक निधन शुक्रवार को हार्ट अटैक होने से हो गया। उन्होंने 2011 से 5 वर्षों तक पंचायत के सरपंच के रूप में सेव किया। वहीं यह सीट महिला आरक्षित हो जाने पर उनकी धर्मपत्नी कान्ति सिन्हा पिछले दो टर्म से सरपंच के रूप में पंचायत की सेवा कर रही हैं । दिवंगत पूर्व सरपंच भूषण सिंह ईमानदार, मृदुभाषी, विद्वान, व्यवहार कुशल प्रशासक, कर्तव्यनिष्ठ, स्वच्छ छवि तथा आदर्श व्यक्तित्व के धनी थे। उनके निधन की खबर सुनते ही क्षेत्र में शोक की लहर व्याप्त हो गई। तरैया के बीजेपी विधायक सह बिहार विधानसभा में सत्तारूढ़ दल के मुख्य सचेतक जनक सिंह, सारण विकास मंच के सयोजक वरीय नेता शैलेंद्र प्रताप सिंह, प्रखंड प्रमुख मितेंद्र प्रसाद यादव, स्थानीय मुखिया प्रतिनिधि तथा पूर्व प्रखड प्रमुख हरेंद्र सिंह, मुखिया धनंजय पांडेय,विजय सिंह, बद्री नारायण सिंह, किशोर सिंह, शिवमंगल सिंह, बसंत सिंह, डॉक्टर उपेंद्र, डॉक्टर केसु राय, सरपंच संघ के प्रखंड अधक्ष हरेराम तिवारी, सरपंच संजय ओझा, बसंत सिंह , शिवमंगल सिंह,श्याम प्रसाद, सिकंदर राउत, लंकेश बाबा समेत सैकड़ों लोगों ने उनके पैतृक आवास बासदेव नगर गांव पहुंचकर पूर्व सरपंच के पार्थिव शरीर पर फूल माला चढ़ाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतप्त परिजनों का ढ़ाढस बंधाया।

किरण आंखा अस्पताल के सहयोग से एसएवी स्कूल द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का हुआ आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

रक्सौल। स्थानीय शहर के लक्ष्मीपुर स्थित एसएवी स्कूल के द्वारा बच्चो के स्वास्थ जांच के लिए आंख जांच कैंप का आयोजन किया गया। इस जांच कैंप में लगभग एक हजार से ज्यादा बच्चों की आंख जांच कर के परामर्श दिया गया। यह कैंप किरण आँखा अस्पताल के सहयोग से आयोजित किया गया। बच्चो की आंखों की जांच डॉ. अमर कयाल तथा उनकी टीम द्वारा की गई। इस दो दिवसीय जांच कैंप में आंखों की सुरक्षा के लिए बच्चो को मोबाइल तथा टीवी से दूरी बना के रखने की सलाह दी गई।

डॉ. कयाल तथा उनकी टीम ने बच्चो को अच्छी दृष्टि के लिए हरी सब्जी साग तथा सलाद को खाने में प्रमुखता से शामिल करने की बात कही । जांच टीम की सदस्या पुष्पा साह ने बताया की विद्यालय के अनुशासन से पूरी टीम प्रभावित हुई। प्राचार्य साइमन रेक्स ने बताया कि बच्चो में शिक्षा के साथ साथ अच्छा स्वास्थ्य होना भी जरूरी है। बच्चो के अच्छे स्वास्थ्य के लिए विद्यालय इस तरह का कैंप हर समय आयोजित करता रहा है और आगे भी करता रहेगा। इस अवसर पर व्यवस्थापक अरविंद कुमार सिंह तथा अशोक कुमार सिंह ने कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चो तथा अभिभावकों में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ती है, जो स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज के लिए जरूरी है। इस अवसर पे शिक्षक विक्टर डेका, ई. कुंदन राज, मंदीप गुप्ता, कृष्णा कुमार, एसपी यादव,विकाश सिंह, नवल प्रसाद ,अतुल सर्राफ,नसीम अख्तर, रामभरोश कुमार, प्रीति गुप्ता, वीना सिंह आदि ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डब्ल्यूआईआई के सौजन्य से एक दिवसीय जलज शार्दूल और जैव विविधता संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया।वन्यजीव संस्थान, देहरादून (वाइल्डलाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया) के अधीन देशव्यापी नमामि गंगे और जलज शार्दूल परियोजना के तहत वाल्मीकिनगर स्थित वनस्थली पब्लिक स्कूल में शुक्रवार को कार्यक्रम कर बच्चों को जागरूक किया गया। बतादें की जैव-विविधता संरक्षण,जलज परियोजना ,प्लास्टिक के कारण नदी तंत्र में होने वाले प्रदूषण और जलीय जीव को होने वाले नुकसान के बारे में जागरूक करने के लक्ष्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया । उक्त कार्यक्रम में भारतीय वन्यजीव संस्थान के जलज फील्ड असिस्टेंट मुकेश कुमार के नेतृत्व में उपस्थित सभी शिक्षकगण और छात्र छात्राओं से अपील की। नदी में प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए अपनी सहभागिता को आगे बढ़ाए और देश की आगामी पीढ़ी होने के नाते समस्त जलीय जीव और पर्यावरण की रक्षा हेतु आगे आए। इसके अलावा राष्ट्रीय जलीय जीव गैंगेटिट अर्थात गांगेय सोंस के बारे में भी जानकारी दी । मौके पर स्कूल के संचालक सुरेश प्रसाद, प्रधानाध्यापक राजन कुमार,सहायक शिक्षक सन्नी कुमार,आदित्य कुमार,बिहारी सर, संध्या कुमारी, अंजली कुमारी, शालिनी कुमारी, अमीषा कुमारी उपस्थित रहे।

भंगहा थाना अंतर्गत 09 किलोग्राम मादक पदार्थ (चरस) के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया मोहन सिंह । भारत नेपाल के सीमावर्ती थाना भंगहा पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर एस एस बी के सहयोग से एक नेपाली तस्कर को 6 किलो चरस के साथ धर दबोचा है। उक्त जानकारी देते हुए बेतिया पुलिस अधीक्षक अमरकेश डी ने बताया है कि भंगहा पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि एक व्यक्ति मोटरसाइकिल से मादक पदार्थ लेकर आने वाला है। सूचना के आलोक में भंगहा पुलिस ने थाना अध्यक्ष के नेतृत्व में एस एस बी की सहयोग से नेपाल के सीमावर्ती गांव विजय बस्ती के पास नाका डाला गया। तभी जंगल के रास्ते एक व्यक्ति मोटरसाइकिल से आते दिखा, जो पुलिस को देखते ही भागने लगा। तभी पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया ।जांच पड़ताल के क्रम में पुलिस ने उसके पास से 6 किलो चार एस बरामद किया है और उसकी मोटरसाइकिल भी जप्त कर लिया है । इस संबंध में पुलिस ने भंगहा थाना में एक प्राथमिक की दर्ज करते हुए गिरफ्तार तस्कर को जेल भेज दिया है। गिरफ्तार तस्कर नेपाल निवासी परसा जिला के शेरवा थाना के पुड़ारी ग्राम के बाल कन्हाई राउत कुर्मी 40 वर्ष पिता रामाज्ञा कुर्मी बताया गया है।

15 फिट किंग कोबरा समेत वन सुंदरी सांप का किया रेस्क्यू

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया।वीटीआर क्षेत्र से सटे रिहायशी इलाकों में गर्मी के मौसम शुरू होते ही जंगली जीवों के निकल आने का सिलसिला बदस्तूर जारी है। बतादें की जलसंसाधन विभाग के ऊपरी शिविर 3 नम्बर पहाड़ स्थित कॉलोनी निवासी सुरेश मधेशिया के घर से 6 फिट लंबे वन सुंदरी सांप का रेस्क्यू किया गया। वन चिकित्सा पदाधिकारी मनोज कुमार टोनी ने बताया कि फोन पर इसकी सूचना मिली तो फौरन स्नैक एक्सपर्ट के साथ घटनास्थल पर पहुंचा। सांप घर के अंदर बने पूजा घर मे था जिसे पकड़ लिया गया। इस सांप का नाम वनसुन्दरी है जो पहाड़ी इलाके में पाया जाता है और यह विष हीन सांप होता है। बतातें चलें कि गत दिनों लक्ष्मीपुर चौक स्थित दवा दुकान के पीछे डीलर मैनुद्दीन अंसारी के बुआ के घर से विशालकाय किंग कोबरा का रेस्क्यू किया गया था।इस किंग कोबरा की लम्बाई 15 फिट बताई जा रही है। यह काफी विषधर माना जाता है। बतादें की जब किंग कोबरा का रेस्क्यू किया जा रहा था तो उस समय किंग कोबरा को देखने वालों की भीड़ लग गई थी । एक्सपर्ट्स की माने तो गर्मी के बढ़ते ही सरीसृप जीव रेंगते हुए ठंढे जगह और भोजन की तलाश में ये अक्सर रिहायशी इलाके की तरफ चले आते हैं।

सुशील मोदी को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

प्रात: किरण, संवाददाता

इसुआपुर । इसुआपुर बाजार स्थित बाबा लाल दास के मठिया परिसर में प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेता दिवंगत राज्यसभा सांसद तथा बिहार सरकार के पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। तरैया के भाजपा विधायक सह बिहार विधानसभा में सत्तारूढ़ दल के मुख्य सचेतक जनक सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों भाजपा-जदयू कार्यकताओं, व्यवसायियों तथा आम लोगों ने दिवंगत नेता के तैल चित्र पर फूल माला चढ़ाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वहीं शत शत नमन लिखे दिवंगत मोदी की तस्वीर का कट आउट लिए सैकड़ों लोगों ने सुशील मोदी अमर रहें के नारे लगाए। वही दो मिनट का मौन रखकर मृतात्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई। विधायक श्री सिंह ने सुशील मोदी के व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा करते हुए उनके द्वारा बिताए गए क्षणों को याद किया। साथ ही उनके असामयिक निधन को पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति बताया। शोक सभा में बीजेपी के जिला उपाध्यक्ष शारदानंद सोनी, अनुमंडल उपाध्यक्ष अजय कुमार सिंह, मंडल अध्यक्ष सत्यदेव साह, उप प्रमुख प्रतिनिधि डब्लू ओझा, जदयू के प्रखंड अध्यक्ष अनवर हुसैन, बिहार प्रदेश वैश्य महासभा के प्रधान महासचिव राजन प्रसाद गुप्ता, अखिल भारतीय साहू महिला महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष मंजू गुप्ता, बीजेपी के वरीय नेता बद्री नारायण सिंह,रेणु तिवारी, शेख आजाद,सलीम अंसारी, हरिकिशोर सिंह, मिथिलेश पांडेय, अनिरुद्ध सिंह, महादेव साह, अमीर साह, ललन ओझा, बच्चा सिंह, अनारमा पांडेय समेत एनडीए के सैकड़ों कार्यकर्ता थे।

ठाकुर राम बहुमुखी कैंपस के संस्थापक स्व. महावीर प्रसाद एवं स्व. रघुबीरराम की प्रतिमा का अनावरण संपन्न

भव्य कार्यक्रम के बीच त्रिभुवन विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने किया अनावरण

प्रात: किरण, संवाददाता

रक्सौल। पड़ोसी देश नेपाल में बीते गुरुवार को सीमावर्ती नगर वीरगंज स्थित ठाकुर राम बहुमुखी कैम्पस में स्थापित कैंपस के संस्थापक स्व. महावीर प्रसाद एवं स्व. रघुबीरराम की प्रतिमा का अनावरण एक भव्य कार्यक्रम के बीच त्रिभुवन विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. (डा.) केशरजङ्ग बराल के द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कैंपस प्रमुख प्रो. रंजीत प्रसाद यादव ने की। कार्यक्रम में वीरगंज महानगरपालिका के उप प्रमुख इम्तियाज आलम, एसपी कुमुद ढुङ्गेल, दाता परिवार के सभी सदस्यगण, उद्योग वाणिज्य संघ के सुबोध गुप्ता, अशोक टेमानी, नेपाल भारत सहयोग मंच के अध्यक्ष अशोक बैद, उद्योगपति गणेश लाठ, दिलीप जैन समेत पूर्व कैंपस प्रमुख, अवकाश प्राप्त प्राध्यापक समेत संपूर्ण कैंपस परिवार और नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन सहायक क्याम्पस प्रमुख प्रो. दिनेश प्रसाद ने किया। कार्यक्रम के दौरान उपकुलपति ने कैंपस परिसर में स्थित माता सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि की और दोनों संस्थापकों की प्रतिमा का विधिपूर्वक अनावरण किया। कैंपस प्रमुख ने उपकुलपति को पुष्पगुच्छ, स्मृति चिह्न और दोशाला के साथ अभिनंदन किया। वहीं संस्थापक परिवार के सदस्यों को उपकुलपति ने पुष्पगुच्छ और दोशाला देकर सम्मानित किया। मंच पर उपस्थित अतिथियों को संस्थापक परिवार सदस्य संजय कुमार उर्फ बबलू, शशिरंजन, रोहित कुमार और प्राध्यापक डॉ. स्वयंभू शलभ ने सम्मानित किया। कैंपस के गौरवशाली इतिहास और संस्थापक परिवार के योगदान के बारे में बताते हुए पूर्व कैम्पस प्रमुख प्रो. ललन द्विवेदी ने कहा कि वि.सं. 2009 में स्थापित ठाकुर राम कैंपस काठमांडू उपत्यका के बाहर पहला और देश का दूसरा कैंपस है, जो त्रिभुवन विश्वविद्यालय से भी सात वर्ष पूर्व स्थापित हुआ। शुरू में यह कैंपस पटना विश्वविद्यालय के संबंधन के साथ संचालित होता था जो बाद में त्रिभुवन विश्वविद्यालय से संबद्ध हुआ। उपमेयर इम्तियाज आलम ने कहा कि इस कैंपस ने प्रधानमंत्री, परराष्ट्र मंत्री, वाईस चांसलर समेत अनेक राजनीतिज्ञ, विद्वान, साहित्यकार, कलाकार, समाजसेवी, उद्योगी, चिकित्सक और प्राविधिक जनशक्ति का उत्पादन कर देश के विकास में उल्लेखनीय योगदान किया है। मैं भी इसी कैंपस का छात्र रहा। वहीं उप कुलपति डॉ. बराल ने कहा कि जिस समय देश में शिक्षा का अभाव था, उस समय दोनों भाइयों ने शिक्षा की अलख जगाई जिसका प्रकाश पूरे देश में फैला। करीब सात दशक बाद उनकी प्रतिमा के स्थापना का यह क्षण अत्यंत गौरव और खुशी का क्षण है। शिक्षा जगत में उनका योगदान युग युग तक अमर रहेगा और हमारी युवा जनशक्ति को प्रेरणा देगा। संस्थापक परिवार सदस्य संजय कुमार ने इस कार्य में सहयोग देने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह एक भावुक क्षण है। हम सबों को आज इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने का सौभाग्य मिला। वर्षों का सपना आज साकार हुआ।पूर्वजों की यह कृति हमारी वर्तमान पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी को त्याग और सेवाभावना के साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहेगी।

कार्यक्रम के दौरान इस कैंपस में अपनी सेवा देने वाले पूर्व कैंपस प्रमुख और प्राध्यापक पद पर प्रोन्नति पाने वाले सह प्राध्यापकों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन कैंपस प्रमुख प्रो. रंजीत प्रसाद यादव ने किया। इस अवसर पर आयोजित रात्रिभोज में सम्पूर्ण कैंपस परिवार के साथ सभी गणमान्य अतिथि उपस्थित हुए।

गांव छोड़कर एक दिन के लिए वनवास पर चले जातें है

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया। बगहा के नौरंगिया गांव में एक अनोखी परंपरा का पालन ग्रामिणों द्वारा किया जाता है।इस गांव के सभी लोग एक दिन के लिए वनवास पर चले जाते हैं।कहा जाता है कि यह परंपरा करीब 100 वर्षों से चली आ रही है।

लोग अपने साथ-साथ अपने पालतू जानवरों को भी साथ ले जाते हैं।गांव के स्थानीय लोगों द्वारा यह कहा जाता है कि नौरंगिया गांव में 100 साल से भी अधिक समय से वनवास की परंपरा चली आ रही है।ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से उन्हें देवी के प्रकोप से छुटकारा मिलता है।कहा जाता है कि यह गांव बीते कई सालों पहले प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों का शिकार था। यहां हैजा और चेचक से सभी लोग पीडित थे। गांव में कई बार आग भी लग जाया करती थी।

मान्यता है कि इस गांव के एक बाबा परमहंस साधू ने देवी माता को अपने सपने में देखा, जिसमें उन्होंने लोगों के कष्ट निवारण हेतु सभी गांव वालों को वनवास ले जाने के लिए कहा था। तब से लेकर आज तक यहां हर साल इस प्रथा का पालन किया जाता है। नवमी के दिन लोग अपने घरों को छोड़ देते हैं और पूरा दिन भजनी कुट्टी, वाल्मीकि टाइगर रिजर्व में बिताते हैं, जहां वे मां देवी दुर्गा की पूजा-अर्चना करते हैं। सूत्रों की मानें तो वन प्रशासन ने शुरू में जंगल में इतने लोगों देखकर रोकने की कोशिश की थी, लेकिन बाद में, उन्होंने अपने असफल प्रयासों के कारण हार मान ली

संकुल स्तरीय संघ ने विभिन्न गावों मे जीविका संघ ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

प्रात: किरण, संवाददाता

बनियापुर। बनियापुर प्रखंड स्थित सुहानी जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ द्वारा भिठ्ठी गांव के आस-पास रैली निकाली गई। साथ ही संकुल संघ में जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत मेंहदी, रंगोली तथा संकल्प सभा का आयोजन किया गया। संकुल संघ में हुए कार्यक्रम में संकुल संघ की अध्यक्ष रेणु देवी, जीविका के बीपीएम, राजू कुमार, क्षेत्रीय समन्वयक, शैलेश कुमार, सामुदायिक समन्वयक, अशोक कुमार एवं उमेश कुमार तथा प्रबंधक संचार, दीपक कुमार के साथ जीविका दीदियों ने बडी संख्या में भाग लिया। इस संकुल स्तरीय संघ के अंतर्गत 27 ग्राम संगठन जुड़े हुए हैं। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का उद्देश्य मतदाताओं को 25 मई को होने वाले मतदान के लिए प्रेरित करना है ताकि मतदान प्रतिशत को और बढ़ाया जा सके। साथ ही सभी दीदियों ने संकल्प लिया कि मत प्रतिशत बढ़ाने हेतु वो लोग जीविका समूह की दीदियों के साथ साथ अपने आस पास के लोगों को भी जागरूक करेंगी। जीविका दीदियां विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से लोगों को मतदान के दिन घर से निकल कर मतदान करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। घर घर दस्तक अभियान चला लोगों के घर-घर जाकर मतदान के लिए प्रेरित कर रही हैं। सामुदायिक संगठनों की बैठक में जीविका दीदियां मतदान के महत्व पर चर्चा कर रही है। इन बैठकों में मतदान हेतु सामूहिक शपथ का आयोजन किया जा रहा है। वे लोगों को बिना लोभ और भय अपने मताधिकार का प्रयोग करने लिए प्रेरित कर रही हैं। जीविका दीदियां मेहंदी के माध्यम से मतदाता जागरूकता का संदेश लिख, बैनर, तख्तियों आदि का उपयोग कर मतदाता जगरूकता अभियान चला रही हैं। जीविका दीदियां मतदान में भाग लेने हेतु लोगों से आह्वान कर रही हैं। इसके लिए जीविका दीदियों द्वारा दैनिक स्तर पर प्रभात फेरी, जन जागरूकता रैली, विशेष सभा, रंगोली निर्माण, हथेलियों पर मतदाता जागरूकता अभियान से संबंधित मेंहदी रचना एवं संध्या चौपाल आदि का भी आयोजन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातःकिरण
नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

मां बंगला स्थान में भव्य रूप से मनाई गई मां की जंयती

गया ।वैशाख शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि बगलामुखी जयंती के रूप में जानी जाती है।बगलामुखी 10 महाविद्या की आठवीं देवी है, वैशाख के शुक्ल पक्ष के आठवें दिन इनका प्राकट्य सौराष्ट्र के हरिद्रा सरोवर में हुआ था ।इसको लेकर मंदिर को हजारो गेंदे के मालो से सजाया गया है।मंदिर सुबह पट खुलने के साथ ही मंदिर में भक्तों की उमड़ पड़ी है। वही संध्या काल मे मंदिर में भव्य भंडारे की व्यवस्था है ।पंडित सौरभ मिश्र, पंडित नागेंद्र मिश्र, सूर्यानन्द मिश्र, आचार्य अजित मिश्र, आचार्य अशोक मिश्र, आचार्य गणेश मिश्र, आचार्य गणेश मिश्र, प्रवीण मिश्र, अजित मिश्र, राकेश ,राजीव आदि श्रद्धालु उपलब्ध थे।

आर्म्स एक्ट में हुई सजा

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एसीजेएम कोर्ट 07 माधवी सिंह ने नवीनगर थाना कांड संख्या -74/05, जी आर -1634/05,टी आर -514/23 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एकमात्र अभियुक्त लल्लू सिंह देवराज विगहा, पोखराहा, नवीनगर को सजा सुनाईहै।अनुमंडलीय अभियोजन पदाधिकारी संजय सिंह ने बताया कि अभियुक्त को आर्म्स एक्ट की धारा 25 (1-बी) में दो वर्ष की सजा और एक हजार जुमार्ना लगाया है। धारा-26 में दो वर्ष की सजा और एक हजार जुमार्ना लगाया है तथा 17 सी. एल. ए . में भी एक वर्ष की सजा सुनाई है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक विजय कुमार पुलिस अवर निरीक्षक ने 07 सितंबर 2005 को प्राथमिकी दर्ज कराई थी, जिसमें कहा था कि गुप्त सूचना के सत्यापन करते हुए अभियुक्त के आवास पर तलाशी की गई। तलाशी के दौरान एक टिन के बक्से से तीन देशी ग्रेनेड और दो जिंदा कारतूस बरामद किया गया था।

बाइक चोरी कर भाग रहे चोर को पकड़ किया पुलिस के हवाले

बिक्रमगंज(रोहतास)। बिक्रमगंज शहर के थाना चौक के पास से बाइक की चोरी कर भाग रहे चोर को लोगों ने पकड़कर पुलिस को सौंप दिया है । घटना के संबंध में बताया जाता है कि सासाराम के लश्करीगंज मोहल्ला निवासी सुनील कुमार शर्मा अपनी बाइक थाना चौक पर विजय मेडिकल में दवा खरीदने के लिए गए ।इसी बीच एक चोर उनकी बाइक लेकर भागने लगा ।चोर को बाइक लेकर जाते देख हो-हल्ला किए तो आसपास के लोग उसे खदेड़ कर घुसियां कला मोड़ के पास पकड़ लिया और पकड़े गए चोर को पुलिस के हवाले कर दिया । थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि चोर के पास से एक मास्टर चाभी बरामद किया गया है ।इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर मेडिकल जांच के बाद चोर को जेल भेज दिया गया ।

पैक्स गोदाम में चोरी की प्राथमिकी दर्ज

बिक्रमगंज(रोहतास) : बिक्रमगंज थाना क्षेत्र के बसगीतिया में स्थित जमोढ़ी पैक्स गोदाम का शटर काट कर एक मोटर और कुछ आवश्यक कागजात की चोरी कर ली गई है । इस संबंध में पैक्स अध्यक्ष बलवंत सिंह द्वारा अज्ञात चोरों के विरुद्ध बिक्रमगंज थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है । थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि मामले की छानबीन की जा रही है ।

मोबाइल मांगने पर मारपीट कर किया जख्मी

बिक्रमगंज(रोहतास) : बिक्रमगंज शहर के नटवार रोड में जबरन मोबाइल ले लेने और मांगने पर मोबाइल धारक को मारपीट कर जख्मी किए जाने की एक प्राथमिकी दर्ज कराई गई है ।दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है कि भोजपुर जिला के हसनबाजर निवासी शिवपरसन मुसहर अपने कुछ साथियों के साथ नटवार रोड में नाच का साटा कर वापस घर लौट रहे थे कि धनगाईं निवासी भोला यादव पहले उनसे मोबाइल मांगा । जब वह अपनी मोबाइल वापस मांगने लगा तो उसके साथ मारपीट करने लगे ।

49.5 लीटर देशी शराब के साथ दो कारोबारी गिरफ्तार

बिक्रमगंज(रोहतास) : मद्य निषेध अधिनियम के तहत बिक्रमगंज पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दो कारोबारी को देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया है ।गिरफ्तार कारोबारी थाना क्षेत्र के घुसियां कला निवासी बीर बहादुर सिंह एवं बिश्वम्भरपुर निवासी उमेश कुमार सिंह बताया जाता है ।थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि पुलिस को पूर्व से लगातार शराब बिक्री करने की सूचना मिल रही थी । उन्होंने कहा कि गिरफ्तार दोनों कारोबारी के पास से कुल मिलाकर 49.5 लीटर देशी शराब बरामद किया गया ।उन्होंने कहा कि गिरफ्तार दोनों कारोबारी को जांच के उपरांत जेल भेज दिया गया ।

ऑटो सवार आलू व्यवसायी की गोली मारकर हत्या

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जगदीशपुर थाना क्षेत्र अन्तर्गत बिहिया -पीरो स्टेट हाइवे पर त्रिमूर्तिया व देवघर गांव के बीच गुरूवार की रात हथियार बंद अपराधियों ने ऑटो में सवार एक आलू व्यवसायी की गोली मारकर हत्या कर दी। मृतक 55 वर्षीय मुनमुन साह जगदीशपुर थाना क्षेत्र के जगदीशपुर नगर स्थित कोतवाली मुहल्ला निवासी स्व हीरालाल साह के पुत्र थे , जो करीब 40 वर्षो से बिहिया जज बाजार में आलू का व्यवसाय करते थे।

मृतक को काफी करीब से बाएं साइड पीठ और कंधा के नीचे गोली मारी गई है। घटना को अंजाम देने के बाद बाइक सवार अपराधी हथियार लहराते हुए मौके से फरार हो गए। वही अपराधियों की संख्या तीन बताई जा रही है।

घटना की सूचना मिलते ही जगदीशपुर थानाध्यक्ष पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। पुलिस अपराधियों की पहचान करने एवं मामले की छानबीन में जुट गई है।

मृतक छोटे बेटे विक्की कुमार में बताया कि वह अपने बड़े बेटे सोनू के साथ दुकान पर रहते थे और रोज की तरह गुरुवार की रात बिहिया जज बाजार से दुकान बंद कर ऑटो से उसके बड़े भाई सोनू के साथ वापस घर लौट रहे थे।

लौटने के क्रम में ऑटो के बाएं साइड किनारे बैठे हुए थे। जैसे ही उनकी ऑटो जगदीशपुर त्रिमूर्ति टोला के पास पहुंची। तभी एक बाइक पर सवार तीन हथियारबंद अपराधी उनके ऑटो का पीछा करते आए और उन्हें गोली मार दी। गोली लगते ही वह ऑटो से गिर पड़े। इसके बाद परिजन द्वारा उन्हें दुलौर स्थित अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सक ने देख उन्हें मृत घोषित कर दिया।

भगवान श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने में जानकी मां की अहम भूमिका

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में सनातनी परंपरा का महान पर्व जानकी नवमी धूमधाम से मनाई गई ।सर्वप्रथम माता जानकी जी के चित्र पर उपस्थित लोगों द्वारा पंचोपचार विधि से पूजन अर्चन किया गया ।तत्पश्चात माता जानकी के जीवन वृत्त पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह,उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा,महामंत्री धनंजय जयपुरी,संरक्षक मंडल ज्योतिर्विद शिवनारायण सिंह के आह्वान पर जन्मोत्सव समारोह की अध्यक्षता विधायक प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह ने किया ।भगवान श्री राम को मयार्दा पुरुषोत्तम बनाने में जानकी माता की अहम भूमिका विषयक विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने कहा कि जनक नंदिनी जानकी मां भूमि से जन्म ली थीं ।भगवान श्री राम के साथ

परिणय सूत्र में बंधने के बाद वन गमन में उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चली ।उनके आदर्श चरित्र में एक साथ नारी के सभी रिश्तों की व्याख्या हो जाती है ।पुत्री के रूप में पिता जनक के साथ,बहु के रूप में सासु मां कौशल्या के साथ,पत्नी के रूप में श्री राम के साथ,भाभी के रूप में देवर लक्ष्मण के साथ,माता के रुप में सेवक हनुमान के साथ ऐसे चरित्र का प्रस्तुतीकरण किए गए हैं जो आज वर्तमान परिवेश में समाज के एक उदाहरण के रूप में व्याख्यायित हैं ।मौके पर सुजीत कुमार सिंह,राणा सुनील,शिक्षक सतीश कुमार सिंह,स्वच्छता पर्यवेक्षक नंदजी यादव, विकास कुमार यादव,गायक अमित कुमार सिंह, सोमप्रकाश रविकर, सौरभ राज सहित अन्य उपस्थित थे।

भोजपुर जिला में सभी नोडल पदाधिकारी एवं वरीय पदाधिकारी की किया गया समीक्षात्मक बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। मुख्य निवार्चन पदाधिकारी बिहार द्वारा जिला भोजपुर में सभी नोडल पदाधिकारी एवं वरीय पदाधिकारी की समीक्षात्मक बैठक किया गया । इस बैठक में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी बिहार ने लोकसभा निर्वाचन चुनाव 2024,को लेकर विभिन्न पहलुओं पर चर्चा किया और उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जिस तरह से स्वीप कोषांग भोजपुर के द्वारा जन जागरूकता के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है जो सराहनीय पहल है और मुझे उम्मीद है कि इस बार जिला प्रशासन भोजपुर के द्वारा किए गए प्रयास जिले में वोट परसेंटेज को बढ़ाएंगे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, बिहार द्वारा LOW VTR बूथों पर विशेषकर मतदान बढ़ाने हेतु निदेश दिया गया ।सभी कोषांगों के वरीय पदाधिकारी एवं नोडल पदाधिकारी के साथ की गई समीक्षात्मक बैठक में सभी । AROs को अपने-अपने AC में VTR Target को पूर्ण करने हेतु वैसे Pollig Booth जहाँ लोकसभा चुनाव 2019 में 30% से कम मतदान रहा वहाँ सीनियर टीम भेज कर थाना एवं चौकिदारों के माध्यम से कम मतदान के कारण जानने हेतु एवं वोटरों को प्रेरित करने हेतु निदेश दिया गया, हर घर में मतदाता पर्ची बॉटते हुए वोटरों को जागरूक करने हेतु कम से कम दो बार घर-घर ४२३ कर वोटरों को अपने मताधिकार प्रयोग करने हेतु सभी अफ्ढ२ को निदेश दिया गया। मतदान प्रतिशत बढ़ाने हेतु CEO Bihar द्वारा door to door visit विशेषकर बल दिया गया। इसके अलावा जिला शिक्षा पदाधिकारी के माध्यम से सभी स्कूलों में Letter Writig to Prefts द्वारा मतदाताओं को जागरूक करने हेतु नोडल पदाधिकारी स्वीप कोषांग को निदेश दिया गया। साथ ही Letter Writifg से संबंधित Pics/ Videos/ Whatspp पर भेजने का निदेश दिया गया। CEO Bihr द्वारा LOW VTR Result को लेकर चिंता व्यक्त की गई, तथा Booth Level Commitee द्वारा बूथवार मतदान प्रतिशत बढ़ाने पर जोऱ दिया गया। इसके साथ ही मुख्य निवार्चन पदाधिकारी, बिहार, उप मुख्य निवार्चन पदाधिकारी, बिहार, जिला पदाधिकारी, भोजपुर के द्वारा मतदाता जागरूकता रथ चलाने हेतु हरी झंडी भी दिखाई गई।

कोइलवर में बीजेपी चुनाव कार्यालय का पूर्व सभापति ने किया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जिले के कोइलवर नगर पंचायत के प्रखण्ड कार्यालय के समीप भारतीय जनता पार्टी का चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया गया। कार्यालय का उद्घाटन बिहार विधान परिषद के पूर्व सभापति अवधेश नारायण सिंह ने विधिवत पूजा अर्चना कर व फीता काट कर किया। इस दौरान पंडित अशोक कुमार मिश्र ने मंत्रोच्चार के साथ कार्यालय का उद्घाटन कराया।

उपस्थित कार्यकताओं को सम्बोधित करते हुए अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि हमलोगो को प्रधानमंत्री मोदी जी के हाथों को मजबूत करना है ।इसके लिए हमलोगों को हमारे एनडीए के प्रत्याशी आरके सिंह को भारी

बहुमत से विजयी बनाना होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमलोग भारी बहुमत के साथ पुनः भाजपा की सरकार बनाएंगे।

इस मौके पर भाजपा नगर अध्यक्ष राकेश शर्मा, ओबीसी जिला मोर्चा अध्यक्ष ऋतुराज, शेखर गुप्ता, सरवन कुमार, नीरज, श्याम प्रकाश विंद,अरविंद सिंह, विवेक समेत दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जिला पदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने संयुक्त रूप से किया प्रेस कॉन्फ्रेंस

आराः जिला पदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक महोदय की संयुक्त प्रेस ब्रीफिंग जिला समाहरणालय के सभागार में आयोजित की गई। जिसमें प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लोग शामिल हुए । जिला पदाधिकारी द्वारा आज नाम वापसी के दिन इस प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया । जिला पदाधिकारी महोदय ने अब तक के निर्वाचन कार्यो में किए जा रहे कार्यों की विस्तृत विवेचना की। उन्होंने अभी तक आरा लोक सभा निर्वाचन 2024 में अभ्यर्थी के रूप में चुनाव लड़ने के योग्य 14 लोगों के नाम मीडिया के सामने बताया। इसके अतिरिक्त विधानसभा उप चुनाव में प्रत्याशी के रूप में चुनाव मैदान में खड़े कुल नौ लोगों के बारे में भी विस्तृत तौर पर बताया ।

एसडीएवी में नये सत्र के छात्र-पार्षदों ने लिए शपथ

स्टूडेंट्स कॉउंसिल बच्चों के भीतर नेतृत्व व दायित्व बोध के लिए जरूरी : डॉ.कुमार जीतेंद्र

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। स्थानीय बी.एस. डीएवी. प.स्कूल में नये सत्र के लिए नव-निर्वाचित विद्यार्थी परिषद(स्टूडेंट्स कॉउंसिल) के सभी प्रतिनिधियों को पद व गोपनीयता की सपथ दिलाई गई। सत्रारंभ के ठीक एक माह बाद इस नये अकादमिक वर्ष के सफल संचालन में विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी परिषद का गठन किया गया।

गायत्री मंत्रोच्चार , द्वीप प्रज्जवलन तथा अतिथियों के स्वागत के साथ समारोह आरंभ हुआ। सपथग्रहण समारोह को संबोधित करती हुई प्रधानाचार्या श्रीमती नीशू जायसवाल ने कहा कि किसी भी विद्यालय के कुशल संचालन में वहाँ के स्टूडेंट्स कॉउंसिल की अहम भूमिका होती है। इससे विद्यालय की आंतरिक शासन व्यवस्था अनुशासित व सक्रिय बनी रहती है। इसके सहारे विद्यार्थियों में नेतृत्व की

भावना सशक्त होती है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए शहर के प्रसिद्ध हड्डी रोग चिकित्सक डॉ.कुमार जीतेंद्र ने कहा कि छात्र-छात्राओं में नेतृत्व के साथ-साथ दायित्व बोध की समझ को विकसित करने में स्टूडेंट्स कॉउंसिल उपयोगी होता है। आज के आधुनिक समय में नेतृत्व की आरंभिक सीख बच्चोऔ के लिए बेहद जरूरी है। ए.डी.जे श्री आदित्य सुमन , हरिनंदन प्रसाद, विमल किशोर सिंह तथा विद्यालय के विशिष्ट अतिथि श्री राम मूर्ति प्रसाद जी ने भी कॉउंसिल के लिए चयनित सभी बच्चों को विद्यालय के नये सत्र के संचालन के प्रति उनके कर्तव्यों व दायित्वों की ओर इशारा करते हुए भविष्य की शुभकामनाएँ दी।

चयनित बच्चों में अनुष्का सिंह को हेड गर्ल व आशीष अंजन को हेड ब्यॉय (क्रमशः आठवीं बी व सी) के रूप में शपथ लिया। इसके अतिरिक्त साम्भवी , सातवीं 'एफ' को डिप्टी हेड गर्ल तथा आर्यन मिश्र , सातवीं 'बी' को डिप्टी हेड ब्यॉय ,शशांक पाण्डेय तथा मानसी चौधरी स्पोर्ट्स कैप्टन , हर्षित कुमार व साक्षी ठाकुर , डिप्टी स्पोर्ट्स कैप्टन , आश्वी श्री तथा गार्गी , हर्षित व मोहित को क्रमशः कल्चरल हेड गर्ल/ हेड ब्यॉय तथा डिप्टी हेड गर्ल/ ब्यॉय के रूप में सपथ दिलाई गई। इसके साथ-साथ खुशी, सत्या, पलक,दीप्ति, राधे, प्राची, सुदीप्ति आदि ने भी अपने-अपने हाउस के कैप्टन का पदभार ग्रहण करते हुए सपथ लिया। इस समारोह के साथ-साथ विद्यालय की नर्सरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए आज 'पुल डे' का भी आयोजन हुआ। नर्सरी के सभी बच्चों ने कृत्रिम रूप से बनाये गए पानी-पुल में भिगने-भिगाने का खूब आनंद लिया।

इस समारोह में विगत वर्ष के सभी टॉपर तथा सर्वाधिक उपस्थिति वाले विद्यार्थियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया। समारोह का कुशल संचालन वरिष्ठ शिक्षिका सुनीता द्विवेदी ने तथा समारोह को सफल बनाने में सभी शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मियों ने अपनी सक्रिय भूमिका अदा की। सभी उपस्थित अभिभावकों तथा अतिथियों का स्वागत-सत्कार व धन्यवाद प्रधानाचार्या नीशू जायसवाल ने किया।

बिहार राज्य किसान सभा एवं भारतीय किसान यूनियन ने की संयुक्त प्रेस सम्मेलन

प्रात : किरण संवाददाता

बक्सर। अशोक प्रसाद सिंह महासचिव, बिहार राज्य किसान सभा एवं दिनेश कुमार सिंह भारतीय किसान यूनियन टिकैत के बिहार झारखंड प्रभारी ने संयुक्त प्रेस सम्मेलन कर निम्नलिखित ब्यान प्रसारित किया है।

बक्सर जिला प्रशासन के किसान विरोधी दमनात्मक रवैया से हजारों किसान आज आतंकित होकर घर छोड़कर गांव से पलायन गए है ।मतदान के अधिकार से उन्हें वंचित करने हेतु जिला प्रशासन सुनियोजित साजिश के तहत गाँव मे जाकर लोगो में भय पैदा कर रहे है ।लोकतंत्र के इस महापर्व में वे लोग भाग ले,इसके लिए चुनाव आयोग विशेष पहल करें और उन्हें वोट देने का मौलिक अधिकार दिलाए।

बक्सर जिला प्रशासन के जुल्मो-सितम एवंअत्याचार से प्रताड़ित किसान न्याय पाने के लिए गुहार लगाने न्यायालय की शरण में गए। मगर वहां भी उन्हें न्याय नहीं मिल रहा है। महिनों से जेल में बंद बेकसूर तीन दर्जन से ज्यादा पुरुष एवं महिला किसानों को अभी तक जमानत नहीं मिली ।जमानत रद्द हुआ गर्मी छुट्टी से ठीक पहले ताकि आगे भी जल्दी नही जा सके। 5 अप्रैल 2024 को नंदलाल,15 अप्रैल 2024 को मुन्ना तिवारी सहित 31 लोगों ने तथा 16 अप्रैल 2024 को कामेश्वर सिंह ने बक्सर न्यायालय में अग्रिम जमानत की अर्जी दाखिल की। कोर्ट ने उसे पर त्वरित कार्रवाई करने के बजाय लटकाए रखा। अग्रीम जमानत की अर्जी देने वाले मुन्ना तिवारी घटना के दिन एक अन्य मुकदमा में जमानत के लिए न्यायालय में हाजिर है ।कमाल है कि उन्हें भी इस काण्ड का मुजरिम बनाया गया है और उन्हें भी कुर्की की नोटिस ढोल बाजा के साथ घर पर चिपकाया गया है। नागेंद्र तिवारी पिता चंद्रदीप तिवारी महिनों से जेल में बंद है। उनके दरवाजे पर ढोल बाजा के साथ 14 मई 2024 को नरेंद्र तिवारी पिता स्व जग नारायण तिवारी नाम का कुर्की जप्ति का नोटिस चिपकाया गया है। जो हास्यास्पद है। जबकि नरेंद्र तिवारी पिता स्व जगनारायण तिवारी नाम का कोई व्यक्ति उस गांव में है ही नहीं ।मगर कोर्ट से उनका भी कुर्की निकला है ।इससे संदेह होता है कि इस घटना का दोषी जिला प्रशासन के दबाव में न्यायपालिका है और गलत सूचना के आधार पर न्यायपालिका गलत फैसला दे रही है ।पटना हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एवं पटना उच्च न्यायालय के इंस्पेकटिंग न्यायाधीश से चौसा की घटना और बक्सर न्यायालय की एक पक्षीय कार्रवाई का स्वतः संज्ञान लेकर जांच करने के लिए संयुक्त किसान मोर्चा लिखित निवेदन करेगी। ताकि अन्नदाता किसानों को न्याय मिल सके। 20 मार्च2024 को बनारपुर, कोच्चाढी और मोहनपुरवा गांव पर जिला प्रशासन द्वारा सुनियोजित साजिश के तहत किए गए हमले, लूटपाट, तोड़फोड़ एवं भीषण लाठी चार्ज पर मोदी नीतीश की डब्ल इंजन की सरकार अभी तक खामोश है। जिला प्रशासन की गुंडागर्दी के खिलाफ मुकदमा करने के लिए सरकार एनओसी नहीं दे रही है। संयुक्त किसान मोर्चा बक्सर से लेकर संपूर्ण बिहार में किसानों के बीच अभियान चलाकर सरकार की किसान विरोधी रवैया को उजागर करते हुए,उन्हें खबरदार भी करेंगे। किसानों को सरकार मजबूर नहीं समझे ।किसान सिर्फ अन्नदाता ही नहीं वोट दाता भी हैं। संयुक्त किसान मोर्चा अभियान चलाकर किसानों को संगठित करेंगे। यदि अविलंब सरकार चौसा की घटना पर संज्ञान नहीं लिया तो मोदी जी को बक्सर की धरती पर काला झंडा से किसान स्वागत करेंगे।

एनडीए सर्वाधिक जातियों का गठबंधन : जयकुमार

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास)।बिक्रमगंज अनुमंडल क्षेत्र के दिनारा प्रखंड अंतर्गत विभिन्न गांव का भ्रमण करते हुए पूर्व मंत्री जयकुमार सिंह ने बक्सर लोकसभा क्षेत्र से एनडीए समर्थित बीजेपी उम्मीदवार मिथिलेश तिवारी के पक्ष में मतदान करने का अपील किया। उन्होंने यह कार्यक्रम दिनारा विधानसभा क्षेत्र के नटवार बाजार से प्रारंभ करते हुए विशंभरपुर, भलुनी एवं भानस गांव का दौरा किया। दिनारा प्रखंड के हरिवंशपुर पंचायत अंतर्गत भलुनी गांव में दलितों के बीच पहुंच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रशंसा करते हुए जनहित में किए गए उनके कार्यो को रखने का काम किया। साथ ही जात-पात एवं परिवारवाद की राजनीति पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि एनडीए मात्र एक ऐसी पार्टी है जहां सभी जातियों के मान-सम्मान

एवं स्वाभिमान की रक्षा होती है। दूसरी पार्टियों जात-पात की बात कर लोगों को गुमराह करने की काम कर रही है। पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी, लोजपा के चिराग पासवान एवं पशुपति पारस,उपेंद्र कुशवाहा, सम्राट चौधरी, नित्यानंद राय, रामकृपाल यादव, जमा खान सहित अन्य कई कद्दावर नेताओं का नाम लेते हुए जयकुमार सिंह ने कहा कि सभी समाज के नेतृत्व कताओं को एनडीए गठबंधन में पूरे सम्मान के साथ स्थान प्राप्त है। यहां किसी वर्ग अथवा जाति के साथ कोई भेदभाव होता नजर नहीं आता। इसके अलावे बिहार में अगड़ा - पिछड़ा की राग अलापने वाले लोग सिर्फ और सिर्फ इस नाम पर आम जनों को ठगने का काम करते हैं। ऐसे लोगों से सचेत होने तथा एनडीए के पक्ष में वोट करने का उन्होंने अपील किया। मौके पर संजय तिवारी, मनोज सिंह, मदनपाल, विद्यानंद पांडे, हृदय कुशवाहा, रवि भेलारी, भूटान सिंह, रौशन सिंह एवं शंभू राम कई लोग उपस्थित थे।

बिजली विभाग के खिलाफ आंदोलन किया जाएगा : डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा

प्रात : किरण संवाददाता

गया जी में भीषण गर्मी पड़ रही है और बिजली विभाग आंख मिचोली कर रही है। लगातार दिन तो दिन रात में भी दो-दो घंटे बिजली काट दी जा रही है। भारतीय जनता पार्टी के किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने कहा की बिजली विभाग लगातार मेंटेनेंस के नाम पर दिन तो दिन रात में भी बिजली काट लेता है जिससे आम जनता को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। रात में बिजली कट

हो जाने के कारणआम जनता गर्मी से सो नहीं पाते है, जिससे बच्चे और बुजुर्ग बीमार पड़ रहे हैं। गया शहर में देश-विदेश के पर्यटक भी आते हैं फिर भी बिजली की समस्या का सामधन नहीं निकाला जा रहा है ।साउथ पावर इंडिया के द्वारा सिर्फ चेकिंग के नाम पर दोहन किया जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीटर कभी प्रीपेड मीटर के नाम पर खाना पूर्ति किया जा रहा है। जबकि कानून का पालन करने वाले आम जनता,बिजली विभाग के द्वारा जो भी निर्देश दिया जाता है उसे सत प्रतिशत पूरा करते हैं। गया शहर में अभी भी पुराना काला मीटर जो बिजली विभाग के द्वारा लगाया गया था बिना किसी रोक टोक के लगा हुआ है, जिसकी जानकारी बिजली विभाग को पूरी तरह है, लेकिन फिर भी वहां मीटर बदलने का काम नहीं किया जाता है,ना चेकिंग किया जाता है सिर्फ सीधे -साधे कमजोर को परेशान किया जा रहा है ।बिजली विभाग आंख मिचोली करना छोड़,गया शहर में भीषण गर्मी देखते हुए 24 घंटा बिजली देने की व्यवस्था करें नहीं तो बाध्य होकर जन आंदोलन कर साउथ पावर इंडिया का भी दोहरा चरित्र के बारे में जानकारी दि जाएगी ।सीधे -साधे कंस्यूमर को कभी स्मार्ट मीटर तो कभी इलेक्ट्रॉनिक मीटर लगाने के लिए परेशान किया जा रहा है, जबकि गया शहर में 80% घरों में पुराने मीटर ही लगे हैं।

पीएम को भाजपा नेता ने एयरपोर्ट पर दी शुभकामनाएं

गया। गया के अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शांति निकेतन एकेडमी के चेयरमैन एवं शिक्षाविद सह भाजपा नेता हरिपप्रन्न उर्फ पप्पू जी ने प्रधानमंत्री से गया एयरपोर्ट पर मिलकर वाराणसी चुनाव में नामांकन करके गया जी आए वाराणसी लोकसभा में प्रचंड बहुमत से जीतने की अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं दीए इसके साथ ही गया जिला में इंजीनियरिंग कॉलेज एवं मेडीकल कॉलेज और उच्च शिक्षा के लिए आई टी आई और एम्स जैसे उच्च गुणवत्ता वाले चिजो को गया मे खोलने का अनुरोध किया ।हरि प्रपन्न ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अलोकिक शक्ति है।

पीएम से गया में इंजीनियरिंग, मेडीकल कॉलेज,आई टी आई और एम्स खोलने की मांग

गया। गया के अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शांति निकेतन एकेडमी के चेयरमैन एवं शिक्षाविद सह भाजपा नेता हरिपप्रन्न उर्फ पप्पू जी ने प्रधानमंत्री से गया एयरपोर्ट पर मिलकर वाराणसी चुनाव में नामांकन करके गया जी आए वाराणसी लोकसभा में प्रचंड बहुमत से जीतने की अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं दीए इसके साथ ही गया जिला में इंजीनियरिंग कॉलेज एवं मेडीकल कॉलेज और उच्च शिक्षा के लिए आई टी आई और एम्स जैसे उच्च गुणवत्ता वाले चिजो को गया मे खोलने का अनुरोध किया।

आओ गांव चले अभियान के अंतर्गत आईएमए द्वारा कैंप लगाकर 55 मरीजों का स्वास्थ्य जांच कर दी गई दवा

प्रात : किरण संवाददाता

रामगढ़। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन राष्ट्रीय की महत्वाकांक्षी योजना ' आओ गांव चलें ' अभियान के अंतर्गत आईएमए कैमूर शाखा द्वारा गोद लिए गांव ' अकोढ़ी में आज विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर जागरूकता सह निशुल्क चिकित्सा का आयोजन किया गया। शिविर मे लगभग 55 मरीजो का रक्तचाप परीक्षण कर निःशुल्क दवा वितरित किया गया । शिविर में लोगों को रक्तचाप के प्रति आईएमए बिहार राज्य शाखा के सचिव डॉ संतोष कुमार सिंह द्वारा जागरूक किया गया। दुनिया भर में लगभग 1 अरब से ज्यादा

लोग उच्च रक्तचाप से पीड़ित हैं। उच्च रक्तचाप हृदय रोग और असमय मौत का कारण है। ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर लोगों को यह पता ही नहीं होता कि उन्हें हाई बीपी की समस्या है। ऐसे लोगों को जागरूक करने के लिए ही विश्व रक्तचाप दिवस मनाया जाता है। अपना ब्लड प्रेशर नियमित जांच कराएं। बीपी होने पर बीपी की दवा नियमित खाएं। धूम्रपान से बचें। नियमित व्यायाम करें। रोजाना कम से कम 3 किलोमीटर पैदल चलें। शरीर से फैट कम करें। तनाव से बचें। आईएमए कैमूर शाखा द्वारा गोद लिए गए गांव ' अकोढी ' आईएमए की महत्वाकांक्षी परियोजना " आओ गांव चलें " के अंतर्गत हर माह कैंप लगाया जा रहा है । और जरूरत मंद मरीजों का मार्गदर्शन भी किया जा रहा है । इस परियोजना को सफल बनाने के लिए एसोसिएशन सरकारी अस्पतालों और स्थानीय सेवा संगठनों की मदद ली जा रहा है । प्राथमिक उपचार और विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव के बारे में शिक्षित करने के लिए डॉक्टर ग्राम स्तर पर काम भी कर रहे हैं । आजकल छोटे-छोटे गाँवों से बहुत से लोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों और उनकी समस्याओं के इलाज के लिए शहरों में आते हैं। जिनके लिए महंगा इलाज एक बड़ी चुनौती है इसलिए यह अभियान आने वाले दिनों में गांवों के लिए वरदान साबित होगा। शिविर मे शामिल आईएमए कैमूर के जिला सचिव सह प्रदेश सचिव डॉ संतोष कुमार सिंह के अलावा मनोज, प्रमोद, मंगल, विपुल सिंह इत्यादि पैरामेडिकल स्टाफ मौजूद थे । शिविर को सफल बनाने में प्रमोद यादव और जय प्रकाश पांडेय का योगदान सराहनीय रहा ।

छपरा में चुनाव को ले हुई कायस्थ महासभा की बैठक

छपरा कार्यालय। शहर के अशोका ग्रांड होटल में शुक्रवार को अखिल भारतीय कायस्थ महासभा एवं श्री चित्रगुप्त समिति से जुड़े चित्रांशों की बैठक लोकसभा चुनाव के मद्देनजर अध्यक्ष नागेंद्र कुमार वर्मा की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में राष्ट्रहित में मतदान करने का आह्वान किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए। भाजपा जिला प्रभारी अनुप श्रीवास्तव ने नरेन्द्र मोदी को विकास पुरुष बताया, और जमकर मतदान करने आह्वान किया। सभा को संबोधित करते हुए मंत्री नितीन नवीन ने कहा कि अगर भारत को विश्वगुरु बनाना है, तो नरेन्द्र भाई मोदी को प्रधान मंत्री बनाना होगा, और इसके लिए कायस्थ समाज को आगे आकर मतदान में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना होगा और छपरावासी को जमकर मतदान करना होगा। उन्होंने विगत 2014 के पूर्व एवं उसके बाद के केंद्र की सरकार के कामकाजों को तुलनात्मक तरीके से शेयर किया ।मंत्री ने भाजपा प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी के कार्यो की तारीफ करते हुए उन्हें पुनः मौका देने का आग्रह किया। भाजपा छपरा सदर के महामंत्री अंकुर श्रीवास्तव ने साहेबगंज चौक पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आदमकद प्रतिमा लगाने की मांग की। सभा को संबोधित करते हुए जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष राज सिन्हा ने देशहित में मतदान करने की अपील की।

पीएम के कार्यक्रम को लेकर हुई समीक्षा

छपरा कार्यालय। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गोरिया कोठी प्रखंड के आज्ञा क्रीडा मैदान में होने वाले कार्यक्रम की तैयारी हेतु बैठक प्रदेश संगठन मंत्री भीखूभाई दलसानिया प्रदेश मंत्री संतोष राय क्षेत्रीय सह प्रभारी क्रांति यादव तैयारी बैठक में सभी कार्यकताओं के बीच में काम का बंटवारा किया गया अधिक से अधिक संख्या में प्रतीक भूत से गाड़ी कैसे खुले और वहां निश्चित समय अवधि पर पहुंचना होगा आदरणीय प्रधानमंत्री जी का प्रत्येक बुथ से गाड़ी बड़ी गाड़ी अर्थात बस से जाना है इस कार्यक्रम के माध्यम से संदेश देना है प्रधानमंत्री का कार्यक्रम केवल शहरी इलाका सफल अपितु ग्रामीण इलाका में ऐतिहासिक और सफल उद्देश्य तैयारी की जा रही है।

बेटी की शादी के बजट पर बोले अनुराग कश्यप

फिल्ममेकर अनुराग कश्यप की बेटी आलिया जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाली हैं। अनुराग कश्यप बेटी की शादी की तैयारियों में जुट गए हैं। बेटी आलिया के पॉडकास्ट यंग, डंब एंड एंक्सियस पर अनुराग कश्यप ने बेटी की शादी के बजट पर बात की। उन्होंने कहा आलिया की शादी ठीक से हो और उसे किसी भी चीज की कमी ना हो इसके लिए उन्होंने अभी से मेहनत करना शुरू कर दिया है। अनुराग का कहना है कि आलिया की शादी का बजट उनकी लो बजट फिल्मों के बराबर है। शादी में होने वाले खर्चे का बिल समय-समय पर भरा जाता रहे, इसके लिए उन्हें लगातार काम करते रहना होगा। पिता की ऐसी बातें सुनकर आलिया हंसने लगती हैं।

खुद को टेरिबल पिता बताया

अनुराग ने बेटी से बात करते हुए अपने आपको टेरिबल पिता बताया। उन्होंने कहा- मुझे लगता है मैं तुम्हारे लिए एक पिता की तुलना में दोस्त ज्यादा बेहतर रहा हूं। मैं ये बात जानता हूं कि तुम्हें इन सबके बीच पिता की कमी बहुत खली होगी। लेकिन तुम्हारी मां ने अपना पूरा फर्ज निभाया है। पिता की बातें सुनकर आलिया इमोशनल हो गईं। आलिया ने कहा- आप हमेशा मेरे बहुत अच्छे दोस्त बनकर रहे हैं। इससे यह साफ पता चलता है कि आप कितने बेहतर इंसान हैं।

पिछले साल हुई थी आलिया की सगाई

पिछले साल आलिया कश्यप ने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड शेन ग्रेगोइर से सगाई की थी। आलिया कश्यप फिल्ममेकर अनुराग कश्यप और उनकी पहली पत्नी आरती बजाज की बेटी हैं। आलिया पेशे से यूट्यूबर हैं। आलिया और उनके बॉयफ्रेंड शेन ग्रेगोइर लंबे समय से डेट कर रहे थे। शेन ने इंडोनेशिया के बाली में आलिया को प्रपोज किया था। उन्होंने अपने यूट्यूब वीडियो में बताया कि शेन ने चुपके से उन्हें प्रपोज करते हुए वीडियो रिकॉर्ड कर लिया था। शेन का ऐसा करना आलिया को काफी रोमांटिक लगा। आरती और अनुराग की शादी 2003 में हुई थी और 2009 में दोनों ने तलाक ले लिया था। तब से अनुराग अपनी बेटी आलिया की परवरिश अकेले ही कर रहे हैं। अनुराग ने एक्ट्रेस कल्कि कोचलिन से 2011 में शादी की, लेकिन ये शादी भी लम्बे वक्त तक नहीं चल पाई और 2015 में दोनों अलग हो गए।

माया वन मूवी टीजर में चमकीं आकांक्षा रंजन कपूर

आकांक्षा रंजन कपूर सिनेमा की दुनिया में धूम मचा रही हैं, और उनका नवीनतम प्रोजेक्ट माया वन पहले से ही चर्चा पैदा कर रहा है। फिल्म का हाल ही में जारी किया गया टीज़र आकांक्षा की प्रतिभा और करिश्मा को दर्शाता है, जिससे दर्शक और अधिक उत्सुक हैं। छोटे से वीडियो में आकांक्षा अपनी जबरदस्त एक्टिंग से सबका ध्यान खींचती हैं. वह आत्मविश्वास से भरी दिखती हैं और उनके चेहरे के भावों में बहुत सारी भावनाएँ झलकती हैं, जिससे जब वह स्क्रीन पर होती हैं तो लोगों का ध्यान वास्तव में उन पर केंद्रित हो जाता है। माया वन एक सम्मोहक कहानी होने का वादा करती है, और आकांक्षा का उसके चरित्र का चित्रण कहानी में एक दिलचस्प परत जोड़ता है। विभिन्न प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करने की उनकी क्षमता एक सूक्ष्म और बहुआयामी प्रदर्शन का संकेत देती है जिसका दर्शक इंतजार कर रहे थे। आकांक्षा के लिए, माया वन उनके बढ़ते करियर में एक और मील का पत्थर है। प्रत्येक प्रोजेक्ट के साथ, वह अपनी बहुमुखी प्रतिभा और अपनी कला के प्रति समर्पण को साबित करती रहती है। यादगार प्रदर्शन देने की उनकी प्रतिबद्धता टीज़र के हर फ्रेम में स्पष्ट है। एक उभरते सितारे के रूप में, आकांक्षा रंजन कपूर फिल्म उद्योग में एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए तैयार हैं। उनकी प्रतिभा, कहानी कहने के जुनून के साथ मिलकर, उन्हें अलग करती है और आने वाले वर्षों में उन्हें देखने लायक एक व्यक्ति के रूप में स्थापित करती है। माया वन का टीज़र सिनेमा में आकांक्षा के आशाजनक भविष्य की एक झलक पेश करता है। फिल्म रिलीज होने पर दर्शकों को इस प्रतिभाशाली अभिनेत्री से आकर्षक और मनमोहक प्रदर्शन की उम्मीद है। ऐसी दुनिया में जहां आम तौर पर प्रसिद्ध अभिनेताओं को सारा ध्यान मिलता है, आकांक्षा रंजन कपूर एक नए सितारे के रूप में सामने आती हैं। ऐसा लगता है कि उनकी आने वाली फिल्म माया वन लोगों को उनसे और भी ज्यादा प्यार कराएगी और फिल्म प्रशंसकों के दिलों में उनकी जगह पक्की कर देगी।

निर्देशकों को किरण राव की सलाह, कहा- कुछ ऐसा बनाएं जो आपको खुद पसंद आए

लापता लेडीज की सफलता का आनंद लेते हुए फिल्म निर्माता किरण राव ने सभी महत्वाकांक्षी पटकथा लेखकों के लिए एक संदेश देते हुए कहा है कि आप अपने पेशे में शीर्ष पर रहें।

15वें कशिश प्राइड फिल्म फेस्टिवल के मौके पर मीडिया से बात करते हुए राव ने कहा, ‘‘मुझे हमेशा लगता है कि कुछ फिल्में ऐसी होती हैं जो अच्छा प्रदर्शन करती हैं और कुछ नहीं कर पाती। प्रासंगिक होने के लिए आपको कुछ ऐसा बनाना होगा जो एक दर्शक के दिल में उतर जाय। राव के अनुसार एक अच्छी कहानी वह है जिसके साथ आप जुड़ते हैं, कुछ ऐसा जिसके बारे में बात करना आपको दिलचस्प और महत्वपूर्ण लगता है।दर्शकों के बारे में बात करते हुए किरण ने कहा, लोगों के पास अब कई सारे ऑप्शन हैं। कई तरह के कंटेट तक उनकी पहुंच आसान हो गई है। एक फिल्म निर्माता के रूप में मुझे लगता है कि आपको अपने पेशे में शीर्ष पर रहने की जरूरत है। यदि आप अच्छे हैं और ऐसी कहानियां बनाते हैं जो दिलचस्प हो, तो आप एक अच्छे कहानीकार होंगे। फिर चाहे आप ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए काम कर रहे हों या फिल्म बना रहे हों।लापता लेडीज के निर्माण के लिए आमिर खान की सराहना करते हुए राव ने कहा, इस तरह की फिल्म केवल आमिर खान जैसे निर्माता ही बना सकते थे। वह सर्वोत्तम फिल्में बनाना चाहते हैं। फिल्म की कास्टिंग के बारे में राव ने कहा, आमिर को एहसास हुआ कि यह फिल्म साधारण कलाकारों के साथ सबसे अच्छा काम करेगी। बहुत कम निर्माता इसे महसूस करेंगे और आपको उस तरह का समर्थन देंगे। आमिर वह व्यक्ति हैं जिन्होंने इसकी कहानी ढूंढी, उनके बिना फिल्म नहीं बनाई जा सकती थी।

अर्जुन कपूर ने पूरी की 'सिंघम अगेन' की शूटिंग

रोहित शेट्टी की अपकमिंग फिल्म 'सिंघम अगेन' है। इस फिल्म में अजय देवगन, करीना कपूर, अक्षय कुमार, रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण जैसे कलाकार पहली बार एक साथ नजर आएंगे। फिल्म में अर्जुन कपूर विलेन के रोल में होंगे। हाल ही में अर्जुन ने इस फिल्म की शूटिंग पूरी की। आखिरी दिन सेट से एक फोटो शेयर करते हुए एक्टर ने इस फिल्म को अपने करियर के लिए मील का पत्थर बताया है। अर्जुन ने यह भी बताया कि यह उनके करियर की 20वीं फिल्म है। अर्जुन ने लिखा- 'रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स का विलेन। मैंने सिंघम अगेन की शूटिंग पूरी कर ली है। मैं खुशनसीब हूं जो इंडियन सिनेमा की इस सबसे ज्यादा एंटरटेनिंग फ्रेंचाइजी का हिस्सा बना। मेरी 20वीं फिल्म और मेरे करियर की सबसे बड़ी माइलस्टोन में से एक।'

अगले साल 15 अगस्त को रिलीज होगी

अर्जुन ने जो तस्वीर शेयर की उसमें वो वेष्टि पहने नजर आ रहे हैं। फिल्म में उनका किरदार साउथ इंडियन विलेन का हो सकता है। कुछ रिपोर्ट्स की मानें तो 'सिंघम अगेन' रामायण की थीम पर बेस्ड हो सकती है। यह फिल्म अगले साल 15 अगस्त को रिलीज हो सकती है।

जैकलीन फर्नांडीज भी करेंगीं कांस के रेड कारपेट पर वॉक

ऐश्वर्या राय, कियारा आडवाणी, अदिति राव हैदरी और शोभिता धुलिपाला के बाद अब जैकलीन फर्नांडीज और छाया कदम भी कांस फिल्म फेस्टिवल अटैंड करने जा रहे हैं। जैकलीन ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि वो फेस्टिवल में रेड कारपेट पर वॉक करेंगी। उन्होंने कहा कि वो कांस में साउथ ईस्ट एशिया को ग्लोबली प्रेजेंट करने के लिए एक्साइटेड हैं। इससे पहले भी जैकलीन ने 2015 में कांस फिल्म फेस्टिवल अटैंड किया था।

फिल्म डबल इस्मार्ट में संजय दत्त फिर बनेंगे विलेन

संजय दत्त को बॉलीवुड के साथ-साथ साउथ में भी खूब प्यार मिलता है। वो साउथ के फेमस एक्टर यश की फिल्म में विलेन बने थे। अब वो फिर से खलनायक वाले अवतार में नजर आने वाले हैं। उनकी अगली फिल्म है डबल इस्मार्ट, जो दक्षिण भारत की चार भाषाओं सहित हिंदी में भी रिलीज होगी। पुरी जगन्नाध के डायरेक्शन में बनी इस साइंस फिक्शन एक्शन मूवी में वो राम पोथिनेनी संग जबरदस्त एक्शन करते नजर आएंगे। ये साल 2019 में रिलीज हुई इस्मार्ट फिल्म का सीक्वल है। टीजर में राम पोथिनेनी और संजय दत्त, दोनों ने ही गर्दा उड़ा दिया है। दो गुटों की लड़ाई है। खूब गाली-गलौज, बंदूक की गोलियां, और लड़की। इसी के इर्द-गिर्द घूमती है डबल इस्मार्ट की कहानी। मालूम हो कि इससे पहले पुरी जगन्नाध ने विजय देवरकोंडा की लाइगर फिल्म बनाई थी, जो बुरी तरह से फ्लॉप साबित हुई। 2022 में रिलीज हुई उस फिल्म के दो साल बाद अब उनकी डबल इस्मार्ट रिलीज होगी।

तीसरी बार टली कंगना स्टारर 'इमरजेंसी' की रिलीज

कंगना रनोट की अगली फिल्म इमरजेंसी की रिलीज डेट फिर एक बार टल गई है। मेकर्स ने एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अनाउंसमेंट करते हुए यह जानकारी दी।

14 जून को रिलीज होने वाली थी फिल्म

मेकर्स ने लिखा, 'चूंकि कंगना इन दिनों देश सेवा में व्यस्त हैं ऐसे में हम फिल्म इमरजेंसी की रिलीज डेट आगे बढ़ा रहे हैं। हम जल्द ही आपको इस बारे में अधिक जानकारी देंगे।' बता दें कि इससे पहले यह फिल्म पिछले साल 24 नवंबर और फिर इस साल 14 जून को रिलीज होने वाली थी। कंगना इन दिनों अपना पूरा वक्त चुनाव प्रचार को ही दे रही हैं। वो लोकसभा चुनाव 2024 में मंडी से प्रत्याशी हैं। ऐसे में वो इस फिल्म के प्रमोशन पर अपना वक्त नहीं दे पा रही हैं। इमरजेंसी में कंगना के अलावा अनुपम खेर, श्रेयस तलपडे, महिमा चौधरी और मिलिंद सोमण जैसे कलाकार भी नजर आएंगे। यह दिवंगत एक्टर-डायरेक्टर सतीश कौशिक की भी आखिरी फिल्म है। खुद कंगना ने किया फिल्म का निर्देशन फिल्म 'इमरजेंसी' की कहानी पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी पर आधारित है। फिल्म में इंदिरा के जीवन के कई अहम पड़ावों को दिखाया जाएगा। खुद कंगना ने इस फिल्म में एक्टिंग करने के साथ ही इसका निर्देशन भी किया है।

अपनी अदाकारी से दर्शकों का दिल जीतने वाले एक्टर श्रेयस तलपड़े पिछले दिनों जब दिल का दौरा पड़ने के कारण अस्पताल में भर्ती हुए, तो उनके फैंस सन्न रह गए। उनके चाहने वालों के लिए वह बड़ा झटका था, लेकिन अब वह दोगुने जोश के साथ सिल्वर स्क्रीन पर लौट आए हैं। जल्द ही कर्तम भुगतम, कंपकंपी, इमरजेंसी, वेलकम टू जंगल जैसी फिल्मों में नजर आने वाले श्रेयस का मानना है कि उनका असल टाइम अब आया है।

बॉलीवुड में अपने काम का ढिंढोरा पीटना जरूरी, मेरा असली टाइम अब आया है

अब आपकी तबीयत कैसी है? आपके चाहने वालों के लिए आपके हार्ट अटैक की खबर बहुत सदमे भरी थी। लोगों को हैरत भी हुई कि आप तो इतने फिट हैं, फिर ऐसा कैसे?

मैं अब ठीक हूं। वो मेरे लिए भी बहुत शॉकिंग बात थी, क्योंकि अचानक ऐसा कुछ हो जाएगा वो तो मैंने भी कभी सोचा नहीं था। हम ये सोचते हैं कि हम फिट हैं। सारी सावधानी बरत रहे हैं लेकिन आपके शरीर के अंदर क्या चल रहा है, वो आप नहीं जानते। खास तौर पर कोविड के बाद सेहत को लेकर मामला गड़बड़ा गया है। कोविड में कई लोगों को खून पतला करने की दवाएं/इंजेक्शन दिए थे क्योंकि खून गाढ़ा हो रहा था। अब ये कोविड का असर है या वैक्सीन का है, आखिर वैक्सीन में भी तो वही वायरस है, ये वजह तो हमें पता नहीं लेकिन हां, कोविड के बाद चीजें बदल गई हैं। इसलिए जरूरी है कि हम ज्यादा एहतियात रखें।

आपको हमेशा बढ़िया एक्टर का दर्जा मिला है, मगर आपको नहीं लगता कि जितनी बढ़िया फिल्में और रोल आप डिजर्व करते थे, वो शायद नहीं मिला। इसकी क्या वजह मानते हैं?

इन सवालों के टेक्निकली कोई जवाब नहीं होते। कभी-कभी लगता है कि शायद हममें कोई कमी होगी। जैसे मैं मानता हूं कि उस वक्त जितना अच्छा एक्टर मुझे माना गया, मुझे उतनी अच्छी मार्केटिंग भी करनी चाहिए थी। जो फिल्में चलीं, उनकी सफलता भुनानी चाहिए थी, जो मैंने नहीं किया। वो होता है न, खुद का ढिंढोरा पीटना, हमारे प्रफेशन में वो भी जरूरी होता है लेकिन हम थिएटर बैकग्राउंड से आते हैं तो हमें झिझक होती है कि खुद का ढिंढोरा क्या पीटें? हमें सिखाया गया है कि काम करो, अच्छा काम होगा तो चार लोग बोलेंगे पर ये पूरा सच नहीं है। पूरा सच ये है कि काम तो करो ही लेकिन उसकी मार्केटिंग भी उतनी ही जरूरी है। वैसे, कभी-कभी मुझे ये भी लगता है कि कुछ फूल देर से खिलते हैं, उन्हें वह वक्त देना चाहिए। शायद अब मेरा वक्त है। अब मैं कुछ चीजें सही तरीके से कर रहा हूं। मेरी जो फिल्में रिलीज पर हैं, वो चाहे कर्तम भुगतम हो, कंपकंपी हो, इमरजेंसी हो, वेलकम टू जंगल हो या पुष्पा हो, जो लाइन अप हैं, उनमें मैं खुद को नए तरीके से पेश करने की कोशिश कर रहा हूं।

कर्तम भुगतम ग्रहों की चाल और ज्योतिष पर आधारित है। आप निजी जिंदगी में इन चीज़ों पर कितना यकीन करते हैं?

मैं आपको एक वाकया बताता हूं। 2005 में जब इकबाल रिलीज हुई थी। तभी मेरी शादी भी हुई थी तो मुझे और दीप्ति (पत्नी) को एक शो कॉस्मिक चैट में बुलाया गया था। उसमें टैरो कार्ड रीडर सुनीता मेनन से हमने अपने पहले घर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि दो साल बाद होगा। जबकि, मुझे यकीन था कि जैसी फिल्में मुझे मिल रही हैं, मैं अगले साल घर ले लूंगा। मैंने उन्हें गलत साबित करने का ठान लिया। अगले साल हमने घर देख लिया, बुकिंग अमाउंट दे दिया, लोन पास हो गया, जब फाइनल चेक देने गए तो वहां बंदा बदल गया, नया वाला बंदा रेट बढ़ाकर बताने लगा तो हमारी बहस हो गई और वो एकदम फाइनल घर हमें नहीं मिला। मैंने दूसरा घर फाइनल किया पर हमारे वास्तु वाले ने मना कर दिया और अंत में हमारा घर 2007 में ही हुआ, तो हम मानें या न मानें लेकिन ऐसी चीजें होती हैं तो आपको यकीन करना पड़ता है कि कुछ तो विज्ञान या शक्ति है।

आपके हार्ट अटैक के वक्त आपकी पत्नी डटकर खड़ी रहीं। वह आपकी जिंदगी के लिए कितनी बड़ी संबल हैं?

असल में, उसके लिए यह सदमा बहुत ज्यादा है, इसलिए उसे यह सब भूलने में वक्त लगेगा। अब भी बेचारी डरी रहती है। हर दस मिनट में फोन करके पूछती है कि तुम ठीक हो, खाना खाया या नहीं, दवा ली या नहीं। वो सदमा उसके लिए गहरा है। दीप्ति हमेशा से बहुत मजबूत महिला रही हैं। जब हमारी शादी हुई थी, तभी मैं इकबाल करने चला गया तो तीन महीने वो मेरे पैरंट्स के साथ ही घर पर थी। किसी भी लड़की के लिए शादी के तुरंत बाद पति से दूर रहना मुश्किल होता है लेकिन उसने कभी किसी चीज के लिए शिकायत नहीं की। अब मैं सोचता हूं कि मैं उसे किसी भी रूप में थोड़ी खुशी दे पाऊं तो मैं खुद को बहुत भाग्यवान समझूंगा।

संक्षिप्त समाचार

पोको वनप्लस को पछाड़कर भारत का नं.6 एंड्रॉयड स्मार्टफोन ब्रांड बना

नई दिल्ली, एजेंसी। स्मार्टफोन उद्योग में तीव्र वृद्धि के लिए मशहूर, पोको इंडिया ने एक बार फिर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इनोवेशन की अपनी प्रतिबद्धता के साथ पोको ने 2024 की पहली तिमाही में 72.2% की शानदार साल-दर-साल वृद्धि दर्ज करते हुए वनप्लस को पीछे छोड़ दिया है। आईडीसी की नई रिपोर्ट के अनुसार पोको 5.9% बाजार हिस्सेदारी के साथ 2024 की पहली तिमाही में जबरदस्त वृद्धि करते हुए स्मार्टफोन शिपमेंट के मामले में वनप्लस से आगे निकल गया है। यह सफलता जैन ज़ी आबादी पर ध्यान केंद्रित करने की पोको की प्रभावशाली रणनीति का प्रमाण है, जिसके अंतर्गत यह बेहतरीन परफ़ॉर्मेंस वाले स्मार्टफोन के विस्तृत पोर्टफोलियो और मजबूत आफ्टर-सेल्स सर्विस एवं सपोर्ट नेटवर्क की मदद से ग्राहकों के अनुभव में सुधार लाता है। 2024 की पहली तिमाही के लिए जारी आईडीसी की रिपोर्ट में पोको की मजबूत विकास दर का खुलासा हुआ है, जिसने इसे भारत में सर्वोच्च एंड्रॉयड स्मार्टफोन ब्रांडों में नंबर 6 के स्थान पर पहुँचा दिया है। 2024 की पहली तिमाही में इस असाधारण वृद्धि के बारे में पोको इंडिया के कंट्री हेड, श्री हिमांशु टंडन ने कहा, पोको की इस उल्लेखनीय प्रगति से इनोवेशन की हमारी प्रतिबद्धता और अपने ग्राहकों की जरूरतों के प्रति हमारी गहरी समझ प्रदर्शित होती है। आगे बढ़ते हुए, अपनी प्रगति की यह गति बनाए रखने और उद्योग में नए मानक स्थापित करने का हमारा दृढ़ निश्चय मजबूत हुआ है। हमारी इस उपलब्धि का श्रेय अपने पोको परिवार से मिले भारी स्नेह और सहयोग को जाता है। हमारा मानना है कि 2024 हमारे लिए विशाल संभावनाएं लेकर आया है। अत्यधिक सफल पोको एक्स6 सीरीज़ और पोको सी61 सहित पोको के नए लॉन्च अपनी बेहतरीन वैल्यू और परफ़ॉर्मेंस के कारण ग्राहकों को बहुत पसंद आए। मार्केटिंग के क्षेत्र में पोको इंडिया ने अपने अलग दृष्टिकोण की मदद से जैन ज़ी ग्राहकों के साथ एक मजबूत संबंध विकसित किया।

अमीरों की लिस्ट में फिसले मुकेश अंबानी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी दुनिया के अमीरों की लिस्ट में एक पायदान फिसल गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलिनेयर इंडेक्स के मुताबिक रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन की नेटवर्थ में बुधवार को 37 करोड़ डॉलर की तेजी आई। इससे अंबानी की नेटवर्थ 108 अरब डॉलर रह गई है और वह दुनिया के अमीरों की लिस्ट में एक स्थान फिसलकर 12वें नंबर पर पहुंच गए हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ में 12 अरब डॉलर की तेजी आई है। अमेरिका के माइकल डेल अब उनसे आगे निकल गए हैं। डेल की नेटवर्थ में बुधवार को 6.76 अरब डॉलर की उछाल आई और वह दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 11वें नंबर पर पहुंच गए। इस साल उनकी नेटवर्थ में 34.6 अरब डॉलर की तेजी आई है। डेल इस साल सबसे ज्यादा कमाई करने वाले अमीरों की लिस्ट में तीसरे नंबर पर हैं। फेसबुक की पेरेंट कंपनी मेटा प्लेटफॉर्म्स के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने इस साल सबसे ज्यादा 43.1 अरब डॉलर कमाए हैं। उसके बाद एनवीडिया के फाउंडर और सीईओ जेनसन हुआंग का नंबर है जिनकी नेटवर्थ इस साल 39.3 अरब डॉलर बढ़ चुकी है। फ्रांस के बर्नार्ड अरनॉल्ट 222 अरब डॉलर की नेटवर्थ दुनिया के सबसे बड़े रईस हैं। जेफ बेजोस (208 अरब डॉलर) दूसरे और एलन मस्क (187 अरब डॉलर) तीसरे नंबर पर है।

भारत के उपभोक्ता बाजार का आकार 2031 तक दोगुना हो सकता है, वित्त मंत्री ने जताया अनुमान

नई दिल्ली, एजेंसी। वित्त मंत्री ने सीआईआई कार्यक्रम के दौरान कहा कि कई लोगों का सुझाव है कि भारत के पास सेवाओं में एक बड़ा अवसर है, लेकिन हम विनिर्माण को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। वित्त मंत्री ने शुक्रवार को दिल्ली में सीआईआई वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन 2024 के दौरान अनुमान जताया कि भारतीय उपभोक्ता बाजार का आकार 2031 तक दोगुना हो सकता है। इसके अलावे, भारत पांच वर्षों में वैश्विक विकास में 18 प्रतिशत तक का योगदान दे सकता है। इस दौरान वित्त मंत्री ने विनिर्माण क्षेत्र को और अधिक बढ़ावा देने पर जोर दिया।

वित्त मंत्री ने सीआईआई कार्यक्रम के दौरान कहा कि कई लोगों का सुझाव है कि भारत के पास सेवाओं में एक बड़ा अवसर है, लेकिन हम विनिर्माण को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। इसे अधिक निवेश और सरकारी नीतियों की मदद से आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

सीतारमण ने कहा, '' मैं कुछ अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई इस सलाह के विपरीत कुछ रेखांकित करना चाहती हूं कि भारत को अब विनिर्माण पर ध्यान नहीं देना चाहिए या विनिर्माण में तेजी नहीं लानी चाहिए... । मैं इस तथ्य पर जोर देना चाहती हूं कि विनिर्माण में वृद्धि होनी चाहिए। भारत को नीतियों की मदद से वैश्विक मूल्य श्रृंखला में

अपनी (विनिर्माण) हिस्सेदारी भी बढ़ानी चाहिए।'' भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन सहित कुछ अर्थशास्त्रियों ने राय व्यक्त की है कि भारत को विनिर्माण के बजाय सेवा क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए क्योंकि उसने वह अवसर गंवा दिया है। उनका कहना है कि चीन के विनिर्माण-आधारित वृद्धि मॉडल को अब और दोहराया नहीं जा सकता। हालांकि, सीतारमण ने कहा कि विनिर्माण के विस्तार से भारत को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

उन्होंने उम्मीद जतायी कि भारत के पास अब भी अपनी विनिर्माण क्षमता बढ़ाने का अवसर है क्योंकि दुनिया कोविड-19 वैश्विक महामारी के बाद 'चीन प्लस वन' रणनीति पर ध्यान दे रही है।

'कैपजेमिनी रिसर्च इंस्टीट्यूट' की मई में जारी रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि यूरोप और अमेरिका में वरिष्ठ अधिकारियों के लिए निवेश स्थलों की सूची में भारत शीर्ष पर है, जो चीन पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं और अपनी विनिर्माण क्षमता का कुछ हिस्सा उभरते बाजारों में स्थानांतरित करना चाहते हैं।

सर्वेक्षण में शामिल करीब 760 अधिकारियों में से 65 प्रतिशत ने कहा कि वे भारत में उल्लेखनीय रूप से निवेश बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने कहा, '' यह अपने आप में हमारे भारतीय उद्योग को काफी बड़ा दायरा प्रदान करता है। पीएलआई (उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन) योजना मोबाइल तथा इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्रों में भी बदलाव ला रही हैं।''

उन्होंने कहा कि 2014 में 78 प्रतिशत आयात से निर्भरता तक, आज भारत में बिकने वाले 99 प्रतिशत मोबाइल भारत में निर्मित हैं। सीतारमण ने उदाहरण देते हुए कहा कि भारत पिछले साल 1.1 अरब अमेरिकी डॉलर के निर्यात के साथ चीन के बाहर आईफोन के लिए एप्पल का दूसरा सबसे बड़ा विनिर्माण केंद्र बन गया।

सेवा क्षेत्र पर उन्होंने कहा कि दुनिया के 50 प्रतिशत से अधिक वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसी) पर भारत का कब्जा है और यह महत्वपूर्ण घरेलू तथा वैश्विक अवसर उत्पन्न करने वाला सबसे पसंदीदा गंतव्य बना हुआ है। भारत में जीसीसी की संख्या इस समय 1,580 से अधिक हो गई है। मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नीत सरकार भारत की वृद्धि में निजी क्षेत्र को एक भागीदार के रूप में देखती है। उन्होंने कहा, '' हम निजी क्षेत्र की एक बहुत बड़ी भूमिका देखते हैं। हम वृद्धि में उनके साथ साझेदारी करना चाहेंगे। सरकार एक सुविधाप्रदाता व समर्थक के रूप में काम करेगी।''

देश के शीर्ष आठ शहरों में जनवरी-मार्च में घरों की कीमतें औसतन 10 प्रतिशत बढ़ीं : रिपोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। देश के आठ प्रमुख शहरों में घरों की औसत कीमतों में जनवरी-मार्च तिमाही में सालाना आधार पर 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। बेंगलुरु में सबसे अधिक 19 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। रियल एस्टेट सलाहकार कोलियर्स इंडिया और डेटा एनालिटिक कंपनी लियासेस फोरास ने एक संयुक्त रिपोर्ट में कहा कि इन आठ शहरों में कीमतें चार प्रतिशत से 19 प्रतिशत तक बढ़ी हैं। आंकड़ों के अनुसार, जनवरी-मार्च, 2024 में बेंगलुरु में औसत आवास की कीमतें सालाना आधार पर 19 प्रतिशत बढ़कर 10,377 रुपए प्रति वर्ग फुट हो गईं। यह पिछले साल की समान अवधि में 8,748 रुपए प्रति वर्ग फुट थी। लियासेस फोरास के प्रबंध निदेशक पंकज कपूर ने कहा, ''भारत के शीर्ष आठ शहरों में मजबूत बिक्री और नई आपूर्ति की शुरुआत के साथ संपत्ति की कीमतों में सालाना आधार पर 10 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। उन्होंने बताया कि आवास कीमतों में 19 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ बेंगलुरु सबसे आगे रहा। मध्यम मुद्रास्फीति और ब्याज दरों के साथ रियल एस्टेट क्षेत्र में यह मांग बनी रहने की उम्मीद है। क्रेडाई के अध्यक्ष बोमन ईरानी ने कहा, ''आवास की कीमतों में वृद्धि देश भर में मकान खरीदारों द्वारा मजबूत आवास मांग का प्रत्यक्ष परिणाम है, खासकर प्रीमियम तथा लक्जरी खंड में...। आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में कीमतें में 16 प्रतिशत, अहमदाबाद तथा पुणे में 13 प्रतिशत, हैदराबाद में नौ प्रतिशत, मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) में छह प्रतिशत, कोलकाता में सात प्रतिशत और चेन्नई में चार प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

बिना गारंटी वाले कर्ज पर ज्यादा निर्भरता एनबीएफसी के लिए ठीक नहीं : डिप्टी गवर्नर

मुंबई, एजेंसी। भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर स्वामीनाथन जे ने आगाह किया है कि असुरक्षित माने जाने वाले यानी बिना गारंटी वाले कर्ज और पूंजी बाजार वित्तपोषण पर अत्यधिक निर्भरता लंबे समय में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के लिए समस्या खड़ी कर सकती हैं। स्वामीनाथन ने आरबीआई के बुधवार को आयोजित एक सम्मेलन में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के आश्वासन कार्यों (अनुपालन, जोखिम और आंतरिक ऑडिट) प्रमुखों को संबोधित करते हुए उधार के बारे में निर्णय लेने के लिए 'एल्गोरिदम पर अत्यधिक निर्भरता को लेकर भी चेतावनी दी। उन्होंने 'नियमों की अनदेखी करने के लिए नियमों के 'बुद्धिमतापूर्ण विश्लेषण के रुख पर आरबीआई की निराशा को भी सार्वजनिक किया। उन्होंने इसे वित्तीय

प्रणाली के लिए 'महत्वपूर्ण जोखिम बताया। स्वामीनाथन ने कहा कि कुछ उत्पादों या असुरक्षित ऋण जैसे क्षेत्रों के लिए जोखिम काफी ज्यादा हैं और यह लंबे समय तक टिकने वाला नहीं है। उन्होंने कहा, ÷ऐसा लगता है कि ज्यादातर एनबीएफसी में एक ही काम करने की इच्छा है। जैसे कि खुदरा असुरक्षित ऋण, 'टॉप अप ऋण अथवा पूंजी बाजार वित्तपोषण। ऐसे उत्पादों पर अत्यधिक निर्भरता बाद में समस्या खड़ी कर सकती है। स्वामनाथन ने 'एल्गोरिदम आधारित कर्ज देने के मुद्दे पर कहा कि कई संस्थाएं बही-खातों में तेजी से वृद्धि के लिए नियम-आधारित 'क्रेडिट का रुख कर रही हैं।

उन्होंने कहा, ''हालांकि, स्वचालन दक्षता को बढ़ा सकता है, पर एनबीएफसी को ऐसे मॉडल से खुद को बांधना नहीं चाहिए। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि नियम-आधारित कर्ज देने की व्यवस्था केवल उतने ही प्रभावी हैं जितने कि आंकड़े और मानदंड जिनपर वे बनाए गए हैं। स्वामीनाथन ने कहा, ''विशेष रूप से उभरती बाजार स्थितियों में ऐतिहासिक आंकड़े या एल्गोरिदम पर अत्यधिक निर्भरता से कर्ज मूल्यांकन में चूक हो सकती है। उन्होंने एनबीएफसी को अपनी क्षमताओं और सीमाओं पर स्पष्ट दृष्टिकोण बनाए रखने और निगरानी व्यवस्था पर ध्यान देने को कहा। उन्होंने एनबीएफसी से साइबर सुरक्षा जोखिमों पर भी पर्याप्त ध्यान देने को कहा।

मार्च तिमाही में पर्सनल कंप्यूटर बाजार 2.6% बढ़ा, एचपी का वर्चस्व: रिपोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में डेस्कटॉप और नोटबुक जैसे पर्सनल कंप्यूटर (पीसी) का बाजार मार्च तिमाही में 2.6 प्रतिशत बढ़कर 30.7 लाख इकाई का हो गया। एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। बाजार अनुसंधान फर्म इंटरनेशनल डेटा कॉरपोरेशन (आईडीसी) ने बृहस्पतिवार को कहा कि बिक्री में 8.8 प्रतिशत की गिरावट के बावजूद एचपी 30.1 प्रतिशत

हिस्सेदारी के साथ पर्सनल कंप्यूटर बाजार में अग्रणी बनी हुई है। जनवरी-मार्च तिमाही में एचपी की पीसी बिक्री एक साल पहले के 10.12 लाख से घटकर 9.23 लाख इकाई रह गई। डेल टेक्नोलॉजीज और एसर ग्रुप की दोनों की पीसी बाजार में हिस्सेदारी 28.8 प्रतिशत बढ़कर क्रमशः 17.5 और 15.4 प्रतिशत हो गई। हालांकि, आलोच्य तिमाही में लेनोवो और आसुस की बाजार हिस्सेदारी घटकर क्रमशः 15.1 और 5.9 प्रतिशत रह गई। सालाना आधार पर लेनोवो की हिस्सेदारी 4.7 लाख इकाई से 1.3 प्रतिशत घटकर 4.64 लाख इकाई रह गई, जबकि आसुस की हिस्सेदारी 1.98 लाख इकाई से 8.3 प्रतिशत घटकर 1.82 लाख इकाई हो गई।

आईडीसी इंडिया के एसोसिएट उपाध्यक्ष (ग्राहक उपकरण) नवकेंदर सिंह ने कहा, ''आईटी एवं आईटीईएस क्षेत्र और वैश्विक स्तर से खरीद कम होने से पीसी बाजार को वाणिज्यिक क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

अनमोल इंडिया लिमिटेड ने फाइनेंशियल ईयर 24 के लिए शानदार आय की घोषणा की

लुधियाना, एजेंसी। सप्लाई चेन मैनेजमेंट इंडस्ट्री, कमोडिटी ट्रेडिंग और कोल इम्पोर्ट में अग्रणी खिलाड़ियों में से एक, अनमोल इंडिया लिमिटेड ने 14 मई, 2024 को आयोजित अपनी बोर्ड मीटिंग में 31 मार्च 2024 को समाप्त तिमाही और वर्ष के लिए कंपनी के ऑडिटेड फाइनेंशियल रिजल्ट्स को मंजूरी दे दी है। 31 मार्च 2024 को समाप्त तिमाही के लिए, कंपनी ने ऑपरेशनल रेवेन्यू से 402.88 करोड़ रुपये रिपोर्ट किए, जिसमें सालाना 8.85 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। एबिटा 7.14 करोड़ रुपये पर रिपोर्ट किया गया था, जबकि शुद्ध लाभ 3.91 करोड़ रुपये प्राप्त हुआ। 31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के लिए, ऑपरेशनल रेवेन्यू सालाना आधार पर 6.45% बढ़कर 1410.24 करोड़ रुपये (फाइनेंशियल ईयर 23), से 1501.24 करोड़ रुपये हुआ।

म्यूचुअल फंडों ने कोटक-एचडीएफसी के 10 हजार करोड़ रुपये के शेयर खरीदे, एचडीएफसी के शेयर एफआईआई ने बेचे

नई दिल्ली, एजेंसी। कोटक बैंक के शेयरों को खरीदने वालों में निप्पॉन, बिड़ला सनलाइफ, एचडीएफसी, कोटक और एसबीआई म्यूचुअल फंड हैं। आरबीआई की सख्ती से कोटक का शेयर अप्रैल में 9 फीसदी तक टूटा था।

निजी क्षेत्र के दो प्रमुख बैंकों एचडीएफसी और कोटक महिंद्रा के शेयरों में भारी गिरावट का फायदा म्यूचुअल फंडों ने उठाया है। फंड हाउसों ने इन दोनों बैंकों के अप्रैल में करीब 10,000 करोड़ के शेयर खरीदे हैं। यह दोनों शेयर इस साल निफ्टी में सर्वाधिक गिरावट वाले रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों ने कोटक महिंद्रा बैंक के 4.65 करोड़ शेयर 7,884 करोड़ रुपये में खरीदे हैं। एचडीएफसी बैंक के 1.22 करोड़ शेयर 1,859 करोड़ में खरीदे हैं। जिन फंड हाउसों ने एचडीएफसी बैंक के शेयरों को खरीदा है उनमें एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, एसबीआई, एक्सिस म्यूचुअल फंड, निप्पॉन, फ्रैंकलिन टेंपल्टन और कोटक म्यूचुअल फंड हैं। कोटक बैंक के शेयरों को खरीदने वालों में निप्पॉन, बिड़ला सनलाइफ, एचडीएफसी, कोटक और एसबीआई म्यूचुअल फंड हैं। आरबीआई की सख्ती से कोटक का शेयर अप्रैल में 9 फीसदी तक टूटा था। दूसरी ओर, फंड हाउसों ने एसबीआई के 1,634 करोड़, बजाज फाइनेंस के 1,140 करोड़ और जियो फाइनेंशियल के 1,271 करोड़ रुपये के शेयर बेचे हैं।

सैमको म्यूचुअल फंड ने सैमको स्पेशल अपॉर्चुनिटी फंड पेश किया, पोटेंशियल ग्रोथ का लाभ उठाने का प्रभावी तरीका

मुंबई । 02सैमको एसेट मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड, एक प्रतिष्ठित निवेश प्रबंधन फर्म, स्पेशल अपॉर्चुनिटीज फंड यानी विशेष अवसर निधि (एसओएफ) के लॉन्च की घोषणा करते हुए रोमांचित है। इस अनूठे फंड को बाजार के अवसरों की पहचान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसका लक्ष्य कम मूल्य वाले या उपेक्षित अवसरों के माध्यम से दीर्घकालिक पूंजी वृद्धि दर्ज करना है। इस फंड के खुलने की तारीख 17 मई, 2024 है और 31 मई, 2024 को क्लोज होगा।

सैमको म्यूचुअल फंड का स्पेशल अपॉर्चुनिटीज फंड एक डिस्रप्शन स्ट्रेटेजी पर तैयार किया गया है जिसमें डिजिटलीकरण, इनसाइडर मिरर ट्रेडिंग, स्पिन ऑफ और कॉर्पोरेट एक्शंस, सुधार-नियामक, सरकार, अंडरवैल्यूड होल्डिंग कंपनियां, प्रीमियमाइजेशन, ट्रेंड्स सस्टेनेबल, इनोवेशन और टेक्नोलॉजिकल डिस्रप्शन, संगठित बदलाव, नए और उभरते क्षेत्र सहित 10 अलग-अलग उप-रणनीतियां शामिल हैं। इस मॉडल में 10 उप-रणनीतियां निवेशकों के लिए संभावित

SAMCO MUTUAL FUND

विकास और मूल्य की तलाश करने के लिए जोखिम और विशेष परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए, विविध प्रकार के निवेश विचारों को सामने लाते हुए व्यवस्थित दृष्टिकोण को सक्षम बनाती हैं। डायनेमिक फ्लेक्सिबिलिटी फंड की एक प्रमुख विशेषता है, जो इसे सभी क्षेत्रों और विषयों में निर्बाध रूप से घूमने की अनुमति देती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि यह उभरते रुझानों को पकड़ने और बाजार की बदलती गतिशीलता को भुनाने के लिए तैयार है।

सैमको म्यूचुअल फंड के सीईओ विराज गांधी ने कहा, सैमको म्यूचुअल फंड में, हमारा मिशन निवेशकों को अत्याधुनिक और विश्वसनीय वित्तीय समाधानों के साथ सशक्त बनाना है। गतिशीलता और अनुकूलनशीलता सैमको स्पेशल अपॉर्चुनिटीज फंड के मूल में हैं। हमारा फंड डायनेमिक फ्लेक्सिबिलिटी का उदाहरण है, जो निवेश जगत में क्षेत्रों और विषयों के लगातार बदलते परिदृश्य को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। सैमको SOF को यूनिवर्सल निर्देशित होता है, जिसका अर्थ यह है कि यह अपने निवेश के दायरे को एक विशिष्ट बाजार पूंजीकरण वाली कंपनियों तक सीमित नहीं करता है। यह रणनीति फंड को लार्ज-कैप से लेकर माइक्रो-कैप कंपनियों तक, पूरे मार्केट स्पेक्ट्रम में विशेष स्थितियों को जांचने और उससे लाभ उठाने की अनुमति देती है। खुद को एक विशेष सेगमेंट तक सीमित न रखते हुए, फंड निवेश के सभी संभावित अवसरों की एक विस्तृत श्रृंखला का पीछा करने में सक्षम बनाता है, साथ ही बाजार के विविध और कभी-कभी कम खोजे गए क्षेत्रों का दोहन करके पूंजीगत प्रशंसा की अपनी क्षमता को बढ़ाता है।

सैमको म्यूचुअल फंड के सीआईओ उमेशकुमार मेहता कहते हैं, कर दक्षता सैमको स्पेशल अपॉर्चुनिटीज फंड की एक और आधारशिला है। आंतरिक रूप से थेमेटिक इन्वेस्टमेंट्स का प्रबंधन करके, हमारा लक्ष्य निवेशकों द्वारा विभिन्न थेमेटिक फंडों की लगातार खरीद और बिक्री से जुड़े कर निहितार्थों को रोकना है। यह दृष्टिकोण अतिरिक्त कर बोझ को कम करता है, संभावित रूप से थेमेटिक फंडों में व्यक्तिगत लेनदेन के साथ होने वाले कर के बोझ से बचकर समग्र रिटर्न को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, फंड विभिन्न सेक्टर्स और थीम्स में निवेश फैलाकर विविधीकरण लाभ प्रदान करता है ।

सैमसंग ने भारत में अगली पीढ़ी के एआई इन्वर्टर कंप्रेसर वाले तीन नए रेफ्रिजरेटर को लॉन्च किया

गुरुग्राम, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े कंज़्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज तीन नए रेफ्रिजरेटर को लॉन्च कर दिया है, जो उपभोक्ताओं को उनकी पसंद को जरूरतों के मुताबिक ढालने में मदद करते हुए भारतीय घरों के लिए स्मार्ट लिविंग का विकल्प मुहैया कराते हैं। नए रेफ्रिजरेटर्स सैमसंग की अगली पीढ़ी के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-संचालित इन्वर्टर कंप्रेसर से लैस है। एआई इन्वर्टर कंप्रेसर, सैमसंग के नए रेफ्रिजरेटर की बुनियाद है जो बिजली का खर्च कम करेंगे और मोटर और ऊर्जा दक्षता को बेहतर बनाकर पारंपरिक इंटरनल डिजाइन को बिलकुल नए आकार में लेकर सामने आता है।सैमसंग की आठवीं पीढ़ी का कंप्रेसर एआई को सामने लाता है - जो 27 साल पहले पेश किए गए अपने पहले कंप्रेसर के बाद क्रांतिकारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है । एआई इन्वर्टर कंप्रेसर सेगमेंट-फर्स्ट होने के साथ 20 साल की वारंटी के साथ आता है, जो लंबे समय तक चलने वाले प्रदर्शन और ऊर्जा बचत की गारंटी देता है।नया एआई रेफ्रिजरेटर तीन मॉडल - 809 लीटर 4 डोर फ्लेक्स फ्रेंच डोर बीस्पोक फैमिली हब रेफ्रिजरेटर क्लीन चारकोल + स्टेनलेस स्टील कलर में और 650 लीटर 4 डोर कनवर्टिबल फ्रेंच डोर मॉडल्स क्लीन व्हाइट ग्लास फिनिश और ब्लैक कैवियार स्टील फिनिश में आता है।सैमसंग इंडिया में डिजिटल एप्लाएंसेज बिजनेस के सीनियर डायरेक्टर सौरभ बैशाखिया ने कहा, सैमसंग बीस्पोक एआई के साथ घरेलू उपकरणों के नए युग में प्रवेश कर रहा है, जो उच्च दक्षता वाले एआई इन्वर्टर कंप्रेसर से युक्त असाधारण प्रदर्शन वाले रेफ्रिजरेटर की पेशकश कर

रहा है। एआई एनर्जी मोड का उपयोग करके उपभोक्ता 10% तक की ऊर्जा बचत कर सकते हैं। सैमसंग एआई इन्वर्टर कंप्रेसर और संबंधित तकनीकों को विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि हमारे रेफ्रिजरेटर लंबे समय तक चलने वाली विश्वसनीयता के साथ कम ऊर्जा खपत करें। एआई इन्वर्टर कंप्रेसर एक सामान्य ऑपरेशन के दौरान 35 डीबी/ए से कम शोर करता है, जो एक शांत लाइब्रेरी की तरह है।

संक्षिप्त समाचार

आरसीबी और सीएसके मैच पर बारिश का साया

बेंगलूर (एजेंसी)। लगातार पांच जीत दर्ज कर चुकी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू आईपीएल प्लेआफ में चौथी टीम के निर्धारण के लिए शनिवार को यहां करो या मरो के मुकाबले में पांच बार की चैम्पियन चेन्नई सुपर किंग्स के सामने होंगी। इस मैच पर मौसम की गाज गिरने की आशंका भी है। मैच के दौरान बारिश की भविष्यवाणी की गई है। हैदराबाद में सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस का मैच बारिश में धुलने के कारण अब कोलकाता नाइट राइडर्स और राजस्थान रॉयल्स के बाद सनराइजर्स प्लेआफ में पहुंच गई है। अब सिर्फ एक स्थान के लिए रस्साकशी है और दो टीमें सीएसके तथा आरसीबी दौड़ में हैं। बेहतर रनरेट और अधिक अंक (13 अंक और 0.528 रनरेट) होने से चेन्नई का दावा मजबूत है। इस मैदान पर वह आठ मैचों में आरसीबी से एक ही बार हारी है। वहीं आरसीबी के 12 अंक है और उसका नेट रनरेट 0.387 है। अगर मैच नहीं हो पाता है तो चेन्नई प्लेआफ में पहुंच जाएगी। वहीं आरसीबी को कम से कम 18 रन से या 11 गेंद बाकी रहते जीत दर्ज करनी होगी।

मौसम विभाग ने 18 मई को बारिश की भविष्यवाणी की है। मैच शाम 7ः30 बजे शुरू होने वाला है और शनिवार के लिए शाम का पूर्वानुमान है कि क्षेत्र के कुछ हिस्सों में बादल छाए रहेंगे और बारिश होगी। पूर्वानुमान में 100 प्रतिशत बादल छाए रहेंगे और 7.2 मिमी बारिश होने का भी अनुमान है, साथ ही सूर्यास्त के बाद तापमान 20 के आसपास रहने का अनुमान है।

संभावित प्लेइंग 11

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु - विराट कोहली, फाफ डु प्लेसिस (कप्तान), रजत पाटीदार, ग्लेन मैक्सवेल, कैमरून ग्रीन, दिनेश कार्तिक (विकेट कीपर), महिपाल लोमरोर, कर्ण शर्मा, यश दयाल, मोहम्मद सिराज, स्वप्निल सिंह

चेन्नई सुपर किंग्स - राचिन रवींद्र, रुतुराज गायकवाड़ (कप्तान), डेरिल मिशेल, शिवम दुबे, समीर रिजवी, रवींद्र जडेजा, एमएस धोनी (विकेट कीपर), मिशेल सेंटनर, शार्दुल ठाकुर, तुषार देशपांडे, सिमरजीत सिंह

सुनील छेत्री के संन्यास पर बोले विराट कोहली, उन्होंने इसके बारे में बताया था

बेंगलुरू (एजेंसी)। राष्ट्रीय फुटबॉल कप्तान सुनील छेत्री के अच्छे दोस्त और भारत के स्टार क्रिकेटर विराट कोहली ने कहा कि अगले महीने विश्व कप क्वालीफाइंग मैच के बाद संन्यास के फैसले से छेत्री संतुष्ट हैं और इसकी घोषणा करने से पहले उन्होंने इसके बारे में उन्हें बताया था। भारत के लिए सर्वाधिक 150 मैच खेलकर सबसे ज्यादा 94 गोल कर चुके छेत्री ने बृहस्पतिवार को ऐलान किया कि वह कोलकाता में छह जून को कुवैत के खिलाफ मैच के बाद संन्यास लेंगे।

कोहली ने आईपीएल में अपनी टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के एक्स पेज पर शॉर्ट वीडियो इंटरव्यू में कहा, 'छेत्री महान खिलाड़ी है। उसने मुझे मैसेज करके बताया था कि वह संन्यास लेने जा रहा है। मुझे लगता है कि वह इस फैसले से संतोष महसूस कर रहा है। उन्होंने कहा, 'पिछले कुछ साल में हम काफी करीब आए और मैं उसे शुभकामनायें देता हूं। वह बहुत प्यारा इंसान है।

पेरिस 2024

शरत, मनिका ओलंपिक टीम पदार्पण में भारत का नेतृत्व करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनुभवी शरत कमल और दुनिया की 24वें नंबर की खिलाड़ी मनिका बत्रा पेरिस खेलों में क्रमशः भारतीय पुरुष और महिला टीम का नेतृत्व करेंगे जहां देश टीम स्पर्धाओं में ओलंपिक में पदार्पण करेगा। भारतीय टेबल टेनिस महासंघ (टीटीएफआई) की सीनियर चयन समिति ने ओलंपिक मानदंडों के अनुसार छह सदस्यीय टीम (प्रत्येक वर्ग में तीन) का चयन किया। इसके अलावा एकल स्पर्धाओं में प्रतिस्पर्धा करने वाले खिलाड़ियों का भी चयन किया गया।

शरत, हरमीत देसाई और मानव ठक्कर को तीन सदस्यीय पुरुष टीम में जगह मिलेगी जबकि मनिका, श्रीजा अकुला और अर्चना कामथ महिला वर्ग में टीम के सदस्य होंगे। प्रत्येक वर्ग में 'वैकल्पिक खिलाड़ी जी साथियान और आयहिका मुखर्जी होंगे। पुरुष एकल में शरत और हरमीत प्रतिस्पर्धा करेंगे जबकि महिला एकल में मनिका और श्रीजा चुनौती पेश करेंगी। यह निर्णय नवीनतम विश्व रैंकिंग के आधार पर लिया गया है।

वर्ष 2004 में ओलंपिक पदार्पण करने वाले 41 वर्षीय शरत का यहां पांचवां और अंतिम ओलंपिक होगा। टीमों और व्यक्तिगत स्पर्धाओं के लिए खिलाड़ियों का चयन टीटीएफआई के पहले से निर्धारित मानदंडों के अनुसार किया गया था। तीन खिलाड़ियों का चयन पिछले कुछ समय में उनके प्रदर्शन की निरंतरता और विश्व रैंकिंग के अनुसार 'स्वत=% हुआ। हालांकि महिला टीम की तीसरी खिलाड़ी को लेकर बहस चल रही थी।

मनिका और श्रीजा अकुला अपनी उच्च विश्व रैंकिंग (शीर्ष 50 के अंदर) के आधार पर टीम का हिस्सा बनीं जबकि अर्चना (103) ने तीसरे खिलाड़ी के रूप में टीम में जगह बनाई। बेंगलुरू की अर्चना ने अपनी रैंकिंग सहित कई मामलों में आयहिका (133) को पीछे छोड़ दिया। पुरुष टीम में 40वीं विश्व रैंकिंग के साथ शरत का चयन शीर्ष भारतीय खिलाड़ी के रूप में स्वत= हुआ जबकि हरमीत (63) और मानव (62) की विश्व रैंकिंग में सिर्फ एक नंबर का अंतर है। हालांकि दोनों ने टीम में जगह बनाई है लेकिन राष्ट्रीय चैंपियन हरमीत को उनके अंतरराष्ट्रीय (जीत-हार का बेहतर रिकॉर्ड) और राष्ट्रीय प्रदर्शन के आधार पर एकल वर्ग के लिए चयनकर्ताओं की मंजूरी मिली।

बैठक में मासिमो कोस्टेंटिनी विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में उपस्थित थे और उनकी सलाह उपयोगी रही होगी। कोस्टेंटिनी अगले सप्ताह तीसरी बार भारतीय टीम की कमान संभालेंगे। वह इस सप्ताह की शुरुआत में भारत पहुंचे। वैकल्पिक खिलाड़ी साथियान और आयहिका टीम के साथ पेरिस जाएंगे लेकिन आधिकारिक खेल गांव में नहीं रहेंगे। चोट लगने की स्थिति में उनकी सेवाओं की आवश्यकता होगी।

टीम इस प्रकार हैं

पुरुष - शरत कमल, हरमीत देसाई, और मानव ठक्कर; वैकल्पिक खिलाड़ी= जी साथियान।

महिला - मनिका बत्रा, श्रीजा अकुला और अर्चना कामथ; वैकल्पिक खिलाड़ी= आयहिका मुखर्जी।

नीरज चोपड़ा
ओस्ट्रावा गोल्डन स्पाइक 2024 एथलेटिक्स मीट में लेंगे भाग

भुवनेश्वर (एजेंसी)। मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा 28 मई को चेकिया में ओस्ट्रावा गोल्डन स्पाइक 2024 एथलेटिक्स मीट 63वें संस्करण में प्रतिस्पर्धा करेंगे। ओस्ट्रावा में नीरज चोपड़ा को पुरुषों के जैवलिन थ्रो में कठिन चुनौती है। इसमें घरेलू पसंदीदा वाडलेज्च और ग्रेनाडा के पूर्व विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स भी शामिल हैं। पीटर्स दोहा में वाडलेज्च और नीरज के बाद तीसरे स्थान पर रहे थे। नीरज के पिछले साल भी 62वें ओस्ट्रावा गोल्डन स्पाइक एथलेटिक्स मीट में प्रतिस्पर्धा करने की उम्मीद थी, लेकिन मांसपेशियों में चोट की वजह से उन्हें टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा। वाडलेज्च ने वर्ष 2023 में 81.93 मीटर के थ्रो के साथ गोल्डन स्पाइक पुरुषों का भाला फेंक खिताब जीता था। नीरज, वाडलेज्च और पीटर्स को छोड़कर, कई वैश्विक एथलीट भी इस साल के ओस्ट्रावा गोल्डन स्पाइक में एक्शन में होंगे। इस सूची में इटली के मार्सेल जैकब्स, मौजूदा 100 मीटर पुरुष ओलंपिक चैंपियन, जियानमाकर ताम्बरी, पुरुषों की हाई जंप में मौजूदा ओलंपिक सह-चैंपियन और स्वीडिश पोल वॉल्टर मोंडो डुप्लांटिस, एक विश्व रिकॉर्ड धारक और टोक्यो 2020 के स्वर्ण पदक विजेता शामिल हैं। ओस्ट्रावा के बाद नीरज चोपड़ा के यूरोप में 18 जून को फिनलैंड के तुकू में पावो नूरमी गेम्स में प्रतिस्पर्धा करेंगे। नीरज पेरिस में होने वाले ओलंपिक में खिताब को डिफेंड करने की राह पर है। उन्होंने 11 मई को दोहा डायमंड लीग में अपने सत्र की शुरुआत की और 88.36 मीटर के थ्रो के साथ दूसरे स्थान पर रहे। नीरज का यह थ्रो टोक्यो 2020 के रजत पदक विजेता जैकब वाडलेज्च के थ्रो से सिर्फ 2 सेमी कम था, जिन्होंने स्वर्ण पदक हासिल किया। उल्लेखनीय है कि नीरज ने बुधवार को भुवनेश्वर में फेडरेशन कप एथलेटिक्स मीट में भी हिस्सा लिया और 2021 के बाद भारत में पहली बार प्रतिस्पर्धा करते हुए स्वर्ण पदक जीता। भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी ने कलिंगा स्टेडियम में 82.27 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो करके मनु डीपी को पीछे छोड़ते हुए जीत हासिल की।

कौन जीतेगा टी20 विश्व कप 2024?

जय शाह ने भारत सहित इन चार टीमों पर खेला दांव

नईदिल्ली (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप 2024 के शुरू होने में अब कुछ ही दिन बचे हैं। भारतीय टीम के खिलाड़ी फिलहाल इंडियन प्रीमियर लीग में व्यस्त हैं। आईपीएल 2024 के प्लेऑफ से पहले ही अधिकतर बड़े खिलाड़ी फ्री होंगे। कप्तान रोहित शर्मा और उपकप्तान हार्दिक पंड्या की टीम मुंबई इंडियंस पहले ही प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है तो विराट कोहली की टीम पर बाहर होने की तलवार लटकी हुई है। मीडिया दिए इंटरव्यू में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सचिव जय शाह ने सबसे छोटे फॉर्मेट के महाकुंभ को जीतने के लिए अपनी पसंदीदा चार टीमों के बारे में बताया है।

जय शाह की पहली पसंद निसंदेह भारतीय टीम है, जिसके कप्तान रोहित शर्मा हैं। इस बारे में वह पहले ही बता चुके हैं कि इस बार रोहित शर्मा की टीम ट्रॉफी जीतकर भारतीय क्रिकेट फैंस का सपना पूरा करेगी। अन्य टीमों के बारे में बात करते हुए जय शाह ने कहा- भारत के अलावा ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और मेजबान वेस्टइंडीज फेवरिट हैं। उन्होंने आगे कहा- ये बड़ी टीमें हैं। बता दें कि वेस्टइंडीज 2 बार की चैंपियन है, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने 2021 में खिताब जीता था, जबकि न्यूजीलैंड को अपने पहले खिताब का इंतजार है।

भारतीय टीम अपने घरेलू मैदान पर पिछले साल यानी 2023 विश्व कप में भी पसंदीदा टीम थी, लेकिन उसे ऑस्ट्रेलिया के हाथों अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में हार मिली थी। टीम इंडिया लगातार 10 मैच जीतकर फाइनल में पहुंची थी, लेकिन रोहित शर्मा की टीम पैट कमिंस की टीम पर जीत नहीं दर्ज कर पाई। इस तरह 2011 के बाद विश्व विजेता बनने का सपना अधूरा रह गया।

दूसरी ओर, टी-20 विश्व कप को लेकर ब्रॉडकास्टर ने भी खूब तैयारी कर रखी है। इस दौरान बधिर और दृष्टिबाधित क्रिकेट प्रेमियों के लिए इंडियन साइन लैंग्वेज (आईएसएल) और ऑडियो वर्णन के साथ फीड उपलब्ध कराई जाएगी। आधिकारिक प्रायोजकों डिज्नी प्लस हॉटस्टार और स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क ने विशेष प्रसारण की व्यवस्था की है। विश्व कप के दस मैचों के लिए यह व्यवस्था रहेगी जिसमें भारत के सभी मैच, सेमीफाइनल और फाइनल शामिल हैं। प्रसारकों ने कहा कि पहली बार टी20 विश्व कप का प्रसारण आईएसएल और वर्णनात्मक कॉमेंट्री के साथ होगा जिससे बधिर और दृष्टिबाधित प्रशंसक भी खेल का मजा ले सकेंगे।

ब्राजील में होगा 2027 फीफा महिला फुटबॉल विश्व कप

बैंकॉक (एजेंसी)। ब्राजील में 2027 महिला फुटबॉल विश्व कप होगा चूंकि फीफा के पूर्णकालिक सदस्यों ने बेल्जियम, नीदरलैंड और जर्मनी के संयुक्त प्रस्ताव पर दक्षिण अमेरिकी देश को तरजीह दी है। फीफा कांग्रेस ने ब्राजील के पक्ष में 119 वोट दिए जबकि संयुक्त यूरोपीय बोली को 78 वोट मिले। अमेरिका और मैक्सिको ने संयुक्त प्रस्ताव पिछले महीने वापिस ले लिया था जबकि दक्षिण अफ्रीका ने नवंबर में अपनी दावेदारी वापस ले ली थी। पहली बार महिला फुटबॉल विश्व कप दक्षिण अमेरिका में होगा। टूर्नामेंट पहली बार 1991 में खेला गया था।

इसे कहते हैं परवरिश...

शुभमन गिल ने छुए अभिषेक शर्मा की मां के पांव, बहन के लिए उमड़ा स्नेह

नई दिल्ली (एजेंसी)। सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस के बीच आईपीएल 2024 का मैच भले ही बारिश की भेंट चढ़ गया हो, लेकिन दोनों टीमों के खिलाड़ियों और उनके परिवारों के बीच मुलाकात ने इसे खास बना दिया। स्त्रा के ऑलराउंडर अभिषेक शर्मा और जीटी के कप्तान शुभमन गिल ने हैदराबाद के राजीव गांधी स्टेडियम के स्टैंड में एक प्यारा सा पल साझा किया, जिसने इंटरनेट पर तहलका मचा दिया। बारिश के कारण खिलाड़ी मैदान पर नहीं उतर पाए, इसलिए अभिषेक गिल को स्टैंड पर ले गए, जहां उनकी मां मंजू और बहन कोमल मौजूद थीं।

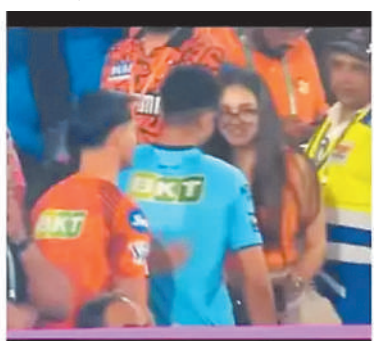

शर्मा परिवार गिल को देखकर बहुत खुश हुआ और उन्होंने जीटी कप्तान का स्वागत किया। गिल ने भी अपने शानदार हाव-भाव से सभी का दिल जीत लिया। जीटी ओपनर ने अभिषेक की मां के पैर छुए और फिर अभिषेक की बहन कोमल से हाथ मिलाया। मंजू शर्मा को प्यार से गिल के गाल थपथपाते हुए देखा गया। गिल और अभिषेक के परिवार के बीच यह पहली सार्वजनिक बातचीत हो सकती है, लेकिन दोनों युवा क्रिकेटरों और उनके परिवारों का एक-दूसरे से बहुत पुराना नाता है। गिल और अभिषेक पंजाब में एक ही एज ग्रुप में क्रिकेट खेलते हुए बड़े हुए और उन्हें घनिष्ठ मित्र के रूप में जाना जाता है।

दोनों ने 2017 में एक ही सत्र में पंजाब के लिए अपना प्रथम श्रेणी डेब्यू किया और फिर 2018 में अंडर-19 विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व किया और खिताब जीता। गिल ने उस टूर्नामेंट में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन बनाए और उसके बाद उनकी जिंदगी पहले जैसी नहीं रही। वह भारत की जीत के स्टार खिलाड़ी थे, लेकिन अभिषेक की ऑलराउंड प्रतिभा को भी अनदेखा नहीं किया जा सका।

बाएं हाथ के बल्लेबाज, जो एक बेहतरीन फिंगर स्पिनर से कहीं बढ़कर हैं। गिल को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपनी छाप छोड़ते देखकर बहुत खुश हैं। अभिषेक ने एक इंटरव्यू में कहा भी था- मैं उनके लिए बहुत खुश हूं। हम अच्छे दोस्त हैं। दोनों के गुरु भी एक ही हैं - भारत के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह।

विराट कोहली ने कहा कि मुझे पता है हर किसी के करियर का आखिरी दिन आता है। मेरी कोशिश सिर्फ इतनी है कि जब तक मैं खेलूं दिल से खेलूं। अगर निजी जिंदगी से इसे जोड़कर देखेंगे तो पाएंगे कि सबसे पहले आपको पता होना चाहिए कि आपका लक्ष्य क्या है और आप उसे हासिल करने के लिए कितना फोकस्ड हैं। अगर ये दोनों बातें साफ हैं तो समझिए आप जिंदगी की एक बड़ी मुश्किल हल कर चुके हैं।

विराट कोहली की बातों से लग रहा था कि उन्होंने अपने लिए सब कुछ प्लान कर रखा है। जैसे वह मैदान पर बैटिंग करते हैं और लक्ष्य का पीछा करते हुए उन्हें पता होता है कि कितने की औसत और स्ट्राइक रेट से उन्हें खेलना होगा उसी तरह से आपको किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए चीजों को बेहतर प्लान करने की जरूरत होती है। अगर आपका प्लान सॉलिड है तो उसे एग्जीक्यूट करना आसान थोड़ा आसान हो जाता है।

विराट कोहली को मैदान के बीच में फर्राटा दौड़ते आसानी से देखा जा सकता है। वह सिंगल को डबल और डबल को ट्रिपल यानी 3 रन बनाने में माहिर हैं। इसके पीछे हार्ड वर्क है। उन्हें पता है कि मैदान पर अगर आपको अपना शत प्रतिशत देना होगा तो इसके लिए एक लंबा हार्डवर्क लगेगा। आपको फिटनेस पर काम करना होगा और जो मैच में करते हैं उसे नेट पर बार-बार करना होगा। यही तो जिंदगी है। एक एग्जाम को क्रैक करने के लिए लंबा संघर्ष लगता है। एक इंटरव्यू को पास करने के लिए डमी इंटरव्यू से तैयारी की जा सकती है। सबसे बड़ी बात यह है कि हर मौके पर चौका लगाने के लिए उसे आखिरी समझना होगा। अगर आसानी से मौके को जाने दिया तो जिंदगी की डेथ रेस में शायद आप पीछे रह जाएंगे।

विराट कोहली ने कहा जब मेरा काम पूरा हो जाएगा तो मैं चला जाऊंगा। मैं कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ना चाहता ताकि बाद में कोई पछतावा नहीं हो। जब तक मैं खेल रहा हूं, अपना सब कुछ खेल को देना चाहता हूं। यही मेरी प्रेरणा है। यह उनकी सकारात्मक सोच को दर्शाती है। साथ ही काम अधूरा नहीं छोड़ना उनकी फाइटिंग स्पिरिट है। यह हर पॉजिटिव माइंडसेट से किया जाए तो उसके सफल होने की संभावना बढ़ जाती है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे अधूरा नहीं छोड़ना है।

कोहली ने कहा कि हर खिलाड़ी के करियर का अंतिम समय आता है। मैं भी हमेशा खेलता नहीं रहूंगा लेकिन मैं इस सोच के साथ विदा नहीं लेना चाहता कि अगर मैंने उस दिन ऐसा किया होता तो अच्छा होता। यह सही समय की बात है। अगर सही समय पर सही दिशा में काम नहीं किया जाए तो उसका पूरा होना मुश्किल है। जिंदगी की यह सबसे बड़ी सीख है। इसलिए तो कहते हैं समय सबसे बलवान होता है। टाइमिंग चूकने पर बल्लेबाज आउट होता है और परफेक्ट शॉट न हो तो सामान्य गेंद पर भी चौका-छक्का नहीं मिलता।

केएल राहुल की कप्तानी बेहतरीन रही, बल्लेबाजी से हो सकता है थोड़ा निराश : कोच लांस क्लूजनर

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जाइंट्स (एलएसजी) के सहायक कोच लांस क्लूजनर ने मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में अपने आखिरी आईपीएल 2024 मैच की पूर्व संध्या पर कहा कि केएल राहुल को लखनऊ ड्रेसिंग रूम में सम्मान प्राप्त है और उनकी कप्तानी बेहतरीन रही है। हालांकि क्लूजनर ने माना कि राहुल इस सीजन में बल्ले से अपने प्रदर्शन से थोड़ा निराश होंगे। एलएसजी प्लेऑफ की दौड़ से लगभग बाहर हो चुकी है। केएल राहुल की अगुवाई वाली टीम को अगर शीर्ष चार में अंतिम स्थान के लिए दावेदारी में बने रहना है तो उसे एमआई को लगभग 300 रनों के अंतर से हराना होगा जोकि संभव नहीं है। लगातार तीसरी बार प्लेऑफ में जगह बनाने की उनकी उम्मीदें धूमिल होती दिख रही हैं ऐसे में यह समय एक औसत अभियान के उतार-चढ़ाव पर विचार करने का है। क्लूजनर ने कहा, उसे समूह का सम्मान मिला है। उसकी कप्तानी के मामले में यह शानदार रही है। (लेकिन) अगर वह पीछे मुड़कर देखता है, तो वह अपने द्वारा बनाए गए रनों की मात्रा से थोड़ा निराश हो सकता है। राहुल का स्ट्राइक रेट पूरे आईपीएल 2024 में चर्चा का विषय रहा है। टी20 विश्व कप के लिए भारतीय टीम से बाहर किए जाने के बाद विकेटकीपर-बल्लेबाज का फॉर्म कम हो गया है। पिछले छह आईपीएल सीजन में से पांच में कम से कम 550 रन बनाने वाले राहुल 13 मैचों में 136.36 के स्ट्राइक रेट से 465 रन बनाकर शीर्ष 10 रन बनाने वालों की सूची में शामिल होने में सफल रहे हैं।

राहुल को स्वाभाविक खेल नहीं खेलने दिया गया - क्लूजनर ने राहुल का समर्थन करते हुए कहा कि एलएसजी कप्तान का बल्ले से यह सीजन अच्छा रहा है और वह टीम के अन्य बल्लेबाजों की असंगति के कारण इसे अगले स्तर तक नहीं ले जा सके। उसने पूरे टूर्नामेंट में कुछ बेहतरीन प्रदर्शन किए हैं। उसे कई बार फिर से अपनी स्थिति मजबूत करनी पड़ी है। हमने उसके आसपास विकेट गंवाए हैं। हमने उसे अपना स्वाभाविक खेल नहीं खेलने दिया।

उन्होंने आगे कहा, बस बैठकर सोचना आसान है, ओह, ठीक है, उसने टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। लेकिन अगर आप उसके नंबरों को देखें, तो वे वास्तव में बिल्कुल भी खराब नहीं हैं, उन परिस्थितियों को देखते हुए जिनमें उसे बल्लेबाजी करनी पड़ी।

पूर्व दक्षिण अफ्रीकी ऑलराउंडर ने प्लेऑफ में जगह बनाने में अपनी असमर्थता के लिए किसी विशेष कारण पर उंगली उठाने से इनकार किया। उन्होंने कहा, %यह समूह के रूप में निरंतरता है जिसने हमें इस साल नीचे गिरा दिया है। हमने पर्याप्त रन नहीं बनाए हैं और फिर से, हमने पर्याप्त विकेट भी नहीं लिए हैं। आप इन सभी को एक साथ जोड़ते हैं और यही कारण है कि आप लॉग पर उस स्थान पर पहुंचते हैं जहां हम हैं। एलएसजी के आईपीएल 2024 अंक तालिका में छठे या सातवें स्थान पर रहने की संभावना है।

संक्षिप्त समाचार

दारुल उलूम देवबंद परिसर में महिलाओं और लड़कियों की एंट्री पर बैन

सहारनपुर, एजेंसी। सहारनपुर के इस्लामिक सेमिनरी दारुल उलूम देवबंद महिलाओं और लड़कियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है। सेमिनरी के मोहतमिम मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नोमानी ने कहा कि देश भर से कई लोगों ने सेमिनरी के अंदर शूट किए गए रील्स के बारे में शिकायतें दर्ज कीं और सोशल मीडिया पर वायरल किया। मोहतमिम ने कहा कि इन शिकायतों पर संज्ञान लेते हुए सेमिनरी परिसर में महिलाओं और लड़कियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। मोहतमिम ने कहा कि रशीदिया मस्जिद में पहले से ही महिलाओं और लड़कियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, जिसे अब पूरे परिसर में लागू कर दिया गया है। मोहतमिम ने कहा कि गार्डों को महिलाओं और लड़कियों को प्रतिबंध के बारे में सूचित करने और उन्हें वापस जाने के लिए मनाने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने कहा कि मदरसे में बड़ी संख्या में महिलाएं आती थीं और उनमें से कई वीडियो बनाने में लगी रहती थीं और इसके बाद वे इन रीलों को सोशल मीडिया पर वायरल कर देती थीं। जिससे मदरसे की छवि भी खराब हो रही थी। दारुल उलूम एक स्कूल है और किसी भी स्कूल में इस तरह की हरकतें स्वीकार्य नहीं हैं। इतना ही नहीं दारुल उलूम में शिक्षा का नया सत्र शुरू हो गया है। भीड़भाड़ के कारण छात्रों की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही थी. इसकी शिकायत भी कई बार छात्रों द्वारा की जा चुकी है। दारुल उलूम की लाइब्रेरी और अन्य इमारतों की खूबसूरती देखने के लिए महिलाएं अक्सर वहां जाती थीं।

आजम खान और उनके पत्नी-बेटों समेत 12 लोगों पर आरोप तय, किसानों की जमीन कब्जा का मामला

लखनऊ , एजेंसी। जौहर विश्वविद्यालय के लिए किसानों की जमीनों पर जबरन कब्जा करने के पांच और मुकदमों में अदालत ने डिस्चार्ज एप्लीकेशन खारिज करते हुए सपा के राष्ट्रीय महासचिव मोहम्मद आजम खान और उनके पत्नी-बेटों समेत 12 लोगों पर आरोप तय कर दिए हैं। इनमें आजम के खास सपा विधायक नसीर अहमद खान, रिटायर्ड सीओ आले हसन और तत्कालीन इंस्पेक्टर कुशलवीर के नाम भी शामिल हैं। मुकदमों में अगली सुनवाई अब 23 मई को होगी। 2019 में किसानों ने तत्कालीन जिलाधिकारी आन्जनेय कुमार सिंह को प्रार्थना पत्र दिया था कि उनकी जमीनों पर आजम खान और उनके लोगों ने जबरन कब्जा कर लिया है, जमीनों को जौहर विवि में मिला लिया है। शिकायत जांच में सही पाए जाने पर किसानों और प्रशासन की ओर से 27 मुकदमे दर्ज किए गए थे, जिनका ट्रायल एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट में चल रहा है। अदालत में गुरुवार को पांच मुकदमों पर सुनवाई थी। जिसके लिए आजम खां, तजीन फातमा, अब्दुल्ला आजम आदि अलग-अलग जेलों से वीडियो कांफ्रेंसिंग से कनेक्ट हुए, वहीं अन्य आरोपी कोर्ट में पेश हुए।

देश की जनता पीएम मोदी के साथ : अनुराग ठाकुर

बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) , एजेंसी। केंद्रीय मंत्री एवं हमीरपुर से भारतीय जनता पार्टी के लोकसभा उम्मीदवार अनुराग ठाकुर ने कहा है कि देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम की गूंज है। हर कोई विकास के नाम पर उनके साथ खड़ा है। अपने चुनाव प्रचार अभियान को तेज करते हुए अनुराग ठाकुर ने गुरुवार को बिलासपुर सदर विधानसभा क्षेत्र के मेहरी काथला, लद्दा, तलवाड़ा सहित 12 पंचायतों में आयोजित जनसभाओं को संबोधित किया और जनता से वोट देने की अपील की। इस दौरान अपने संबोधन में अनुराग ठाकुर ने कहा कि लोकसभा चुनाव के चार चरणों में मतदाताओं ने पीएम नरेंद्र मोदी को अपार समर्थन दिया। हर ओर केवल उन्हीं के नाम की गूंज है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर लाने में कामयाब रही है। महंगाई पर लगाम लगाया गया और रोजगार के अवसर बढ़ाए गए। अनुराग ठाकुर ने यूपीए सरकार के 60 वर्षों के शासनकाल से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 10 वर्षों के कार्यकाल की तुलना करते हुए लोगो से भाजपा के पक्ष में मतदान की अपील की।

कांग्रेस और टीएमसी में इंडि गठबंधन को लेकर छिड़ी रार

ममता बोलीं- मेरा आइडिया था

कोलकाता, एजेंसी। सत्ता में आने पर विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' को बाहर से समर्थन देने की घोषणा के एक दिन बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने यू-टर्न ले लिया है। गुरुवार को ममता बनर्जी ने कहा कि उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा विरोधी गठजोड़ का हिस्सा है और आगे भी रहेगी। तमलुक में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए बनर्जी ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) पश्चिम बंगाल में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) और कांग्रेस के साथ गठबंधन में नहीं है। वहीं पश्चिम बंगाल कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी ने ममता बनर्जी पर हमला बोला है।

कांग्रेस पर ममता हुईं हमलावर

बनर्जी ने कहा, ''कुछ लोगों ने कल के मेरे बयान को गलत समझा है...अखिल भारतीय स्तर पर, मैं पूरी तरह से इंडिया गठबंधन का हिस्सा हूं। इंडिया गठबंधन का मैंने सुझाव दिया था। हम राष्ट्रीय स्तर पर साथ हैं और आगे भी साथ रहेंगे।'' बनर्जी ने आरोप लगाया कि 'इंडिया' गठबंधन में शामिल माकपा और कांग्रेस दोनों की पश्चिम बंगाल इकाइयां ने हाथ मिला लिया है और राज्य में भाजपा की मदद कर रही हैं।

भाजपा को लोग खारिज कर देंगे: ममता बनर्जी

उन्होंने रैली में कहा, ''बंगाल में माकपा और कांग्रेस पर भरोसा नहीं करें। वे हमारे साथ नहीं हैं, वे यहां भाजपा के साथ हैं...।'' बनर्जी ने बुधवार को कहा था कि उनकी पार्टी केंद्र में सरकार बनाने के लिए विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' को बाहर से समर्थन देगी। लोकसभा चुनाव में 400 सीटें हासिल करने के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के महत्वाकांक्षी लक्ष्य पर संदेह व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि लोग उन्हें खारिज कर देंगे।

बनर्जी ने कहा, ''पूरा देश जान गया है कि भाजपा चोरों से भरी पार्टी है। हम (तृणमूल) केंद्र में सरकार बनाने के लिए बाहर से इंडिया गठबंधन का समर्थन करेंगे। हम अपना समर्थन देंगे ताकि बंगाल में हमारी माताओं-बहनों को कभी दिक्कत न हो...और 100 दिन रोजगार योजना में काम करने वालों को भी दिक्कत न हो।''

टीएमसी ने पूर्व में कहा था कि वह राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी गठबंधन का हिस्सा बनी रहेगी हालांकि वह पश्चिम बंगाल में अलग लड़ेगी। टीएमसी प्रमुख तमलुक में एक रैली को संबोधित कर रही थीं, जिसके अंतर्गत नंदीग्राम विधानसभा क्षेत्र आता है। बनर्जी 2021 के विधानसभा चुनाव में नंदीग्राम में भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी से हार गई थीं। शुभेंदु ने बनर्जी को 1,956 मतों से हराया था। बनर्जी ने कहा, ''दो मई, 2021 को मतगणना के दिन मतगणना केंद्र पर बिजली की आपूर्ति काटकर भाजपा ने जीत हासिल की थी।'' उन्होंने कहा, ''भाजपा ने जनादेश चुरा लिया। उन्होंने मतगणना केंद्र की बिजली आपूर्ति काट दी। मैं इसके खिलाफ अदालत गई थी। लेकिन अब मैं अपनी हार का बदला लूंगी।''

कांग्रेस ने ममता पर लगाया प्रतिष्ठा बचाने का आरोप

कांग्रेस की पश्चिम बंगाल इकाई के अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी ने गुरुवार को दावा किया कि टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के पक्ष में बनते माहौल और राष्ट्रीय राजनीति में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए इसका समर्थन कर रही हैं। चौधरी ने बनर्जी को ''अवसरवादी राजनेता'' करार देते हुए कहा कि उन्होंने बदलते राजनीति को भांपकर अपना रुख बदल लिया है। कांग्रेस नेता ने संवाददाताओं से कहा, ''यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि 'इंडिया' गठबंधन बढ़त ले रहा है और सरकार बनाने के करीब है। यही कारण है कि एक चतुर और अवसरवादी नेता के रूप में ममता बनर्जी ने पहले ही अपना समर्थन देने का फैसला किया है।''

पांचवें चरण में लालू, रामविलास की सियासी विरासत पर लगेगी मुहर

पटना , एजेंसी। लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में यूं तो बिहार की पांच लोकसभा सीटों पर मतदान होना है, लेकिन लोगों की नजर सारण और हाजीपुर लोकसभा क्षेत्रों पर होगी, जहां मतदाता बिहार की राजनीति के दो दिग्गज राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव और लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के संस्थापक रहे स्वर्गीय रामविलास पासवान की सियासत की विरासत पर फैसला करेंगे। इस चुनाव में लालू प्रसाद के परिवार की परंपरागत सीट समझे जाने वाले सारण से लालू की विरासत संभालने के लिए विपक्षी दल के महागठबंधन ने उनकी बेटी रोहिणी आचार्य को चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं, एनडीए ने हाजीपुर लोकसभा क्षेत्र से लोजपा संस्थापक के पुत्र चिराग पासवान को अपना प्रत्याशी बनाया है। हाजीपुर क्षेत्र रामविलास की कर्मभूमि रही है। इस सीट पर सामाजिक आधार हो या वोट बैंक की राजनीति, देश के मुद्दे हों या राज्य के मुद्दे, मतदाताओं ने अधिकतर मौकों पर रामविलास पासवान को ही समर्थन दिया है। सारण से लालू यादव चार बार चुनाव जीतकर संसद पहुंचे हैं। सबसे पहले वर्ष 1977 में वह यहां से जीते थे। उसके बाद 1989, 2004 और 2009 में भी लालू प्रसाद ने इस सीट से जीत हासिल की। हालांकि लालू को यहां से हार का भी सामना करना पड़ा है। पहले इस संसदीय सीट का नाम छपरा था। माना जा रहा है कि इस बार लालू की विरासत संभालने के लिए चुनावी मैदान में उतरी रोहिणी आचार्य को यहां से जीताना न केवल लालू के लिए, बल्कि पूरी पार्टी के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न है। हालांकि रोहिणी की राह बहुत आसान नहीं है। उनका मुख्य मुकाबला निवर्तमान सांसद राजीव प्रताप रूडी से है। वह भी इस क्षेत्र से जीत का चौका लगा चुके हैं। हाजीपुर की राजनीति में चार दशकों तक वर्चस्व कायम रखने वाले पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान के भाई पशुपति कुमार पारस पिछला चुनाव यहां से जीते थे।

कमला बेनीवाल की अंत्येष्टि राजकीय सम्मान से नहीं होने पर विवाद

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान की पूर्व डिप्टी सीएम कमला बेनीवाल की अंत्येष्टि राजकीय सम्मान से नहीं होने पर विवाद गहरा गया है। पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा ने पूर्व डिप्टी सीएम कमला बेनीवाल की अंत्येष्टि राजकीय सम्मान से नहीं होने पर बीजेपी पर निशाना साधा है। डोटासरा ने कहा कि दिल्ली के इशारे पर ऐसा हुआ है। जबकि प्रशासन का कहना है कि स्वतंत्रता सेनानी की लिस्ट में नाम नहीं है। बता दें पूर्व राज्यपाल और राजस्थान की पूर्व डिप्टी सीएम रहीं वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ. कमला बेनीवाल का गुरुवार को अंतिम संस्कार किया गया। जयपुर के लालकोठी श्मशान घाट में बेटे आलोक बेनीवाल ने चिता को मुखाग्नि दी। वहीं, राजकीय सम्मान से अंतिम संस्कार नहीं करने कांग्रेस ने बीजेपी को घेरा है।

डोटासरा ने कहा कि सरकार ने राजकीय सम्मान से अंत्येष्टि नहीं करके प्रदेश की जनात का अपमान किया है। सवैधानिक पद रहे व्यक्तियों की अंत्येष्टी पर राजकीय सम्मान प्रदान करने की परंपरा का उल्लंघन किया है। गुजरात के पूर्व राज्यपाल नवलकिशोर शर्मा का राजकीय सम्मान से अंतिम संस्कार किया गया था। डोटासरा ने कहा कि पूर्व उप राष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत का भी राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया था।डोटासरा ने ट्वीट किया-स्वतंत्रता सेनानी और गुजरात की पूर्व राज्यपाल डॉ. कमला बेनीवाल जी की अंत्येष्टि में उन्हें राजकीय सम्मान नहीं दिया गया।क्या दिल्ली के इशारे पर दिवंगत सेनानी का अपमान किया गया या ये मानवीय भूल हुई है? स्वतंत्रता सेनानी को आखिरी सम्मान न देना क्या उचित है?सरकार जवाब दे। बता दें वर्ष 1942 में भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त करने के लिए भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ था। देश प्रेम के जज्बे को देखकर सब चकित रह गए। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी उन्हें ताम्रपत्र सम्मान से सम्मानित कर चुकी हैं। इस बालिका का नाम कमला था जो कॉलेज की पढाई के बाद सक्रिय राजनीति में आई और देश की प्रतिष्ठित नेता के रूप में जानीकमला बेनीवाल के बेटे आलोक बेनीवाल कांग्रेस छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में भले ही शामिल हो गए है।

उत्तर प्रदेश में पांचवें चरण में पांच मंत्रियों को बचानी होगी साख

लखनऊ , एजेंसी। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में मोदी सरकार के पांच मंत्रियों को अपनी साख बचानी होगी। इनके भाग्य का फैसला 20 मई को जनता करेगी। इस चरण में मोदी सरकार में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, कौशल किशोर, साध्वी निरंजन ज्योति, भानु प्रताप वर्मा और योगी सरकार के मंत्री दिनेश सिंह रायबरेली से कांग्रेस के नेता राहुल गांधी के खिलाफ ताल ठोक रहे हैं।

पांचवे चरण में यूपी में 14 सीटों पर चुनाव होगा। 2019 के चुनाव में सिर्फ रायबरेली को छोड़कर सभी सीटों पर भाजपा को जीत मिली थी। रायबरेली से सोनिया गांधी ने जीत दर्ज की थी।

राजनाथ सिंह लखनऊ से तीसरी बार चुनावी मैदान में हैं। उनके खिलाफ सपा-कांग्रेस गठबंधन से रविदास मेहरोत्रा और बसपा के सरवर अली चुनावी मैदान में हैं।

अमेठी लोकसभा से केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी एक बार फिर से चुनाव लड़ रही हैं। 2019 में उन्होंने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी को हराया था। उनके खिलाफ गांधी परिवार के खास किशोरीलाल शर्मा ताल ठोक रहे हैं। शर्मा का दावा है कि 40 सालों से वो अमेठी की जनता से जुड़े हैं। उन्होंने राजीव गांधी के साथ भी रैलियों में भाग लिया था। इस सीट पर कांग्रेस के बड़े नेताओं का पूरा फोकस है।

वहीं लखनऊ से सटे मोहनलाल गंज से केंद्रीय मंत्री और भाजपा उम्मीदवार कौशल

किशोर तीसरी बार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। उनको सपा-कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवार आर.के. चौधरी से कड़ी चुनौती मिल सकती है। वहीं बहुजन समाज पार्टी से राजेश कुमार मैदान में हैं।

फतेहपुर सीट पर केंद्रीय मंत्री और भाजपा से प्रत्याशी साध्वी निरंजन ज्योति एक बार फिर से चुनावी रण में हैं। वह 2014 और 2019 में जीत दर्ज कर चुकी हैं। सपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल से उनको कड़ी चुनौती मिलने की उम्मीद है। बसपा ने यहां से पिछड़ी जाति के कुर्मी बिरादरी के प्रत्याशी डॉक्टर मनीष सचान को मैदान में उतार कर सपा व भाजपा की धड़कन बढ़ा दी है।

भाजपा ने जालौन सीट से पांच बार के सांसद और वर्तमान में मंत्री भानु प्रताप वर्मा को एक बार फिर से मैदान में उतारा है। उनके खिलाफ सपा-कांग्रेस से नारायण दास अहिरवार मैदान में हैं। अहिरवार बसपा के संस्थापक सदस्य रहे हैं। वह 2007 से 2011 तक मायावती सरकार में मंत्री थे। 2022 में वह सपा में आ गए थे। वैसे इस सीट पर बसपा का अच्छा खासा प्रभाव माना जाता रहा है। 2019 में सपा-बसपा गठबंधन में यह सीट बसपा के खाते में गई थी। इस बार भानू प्रताप का मुकाबला इन्हीं से माना जा रहा है। इसके अलावा इस चरण में कांग्रेस नेता राहुल गांधी रायबरेली से ताल ठोक रहे हैं।

इमरान खान की पार्टी को 9 मई की हिंसा के लिए माफी मांगनी होगी, बिलावल भुट्टो की चेतावनी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो जरदारी ने चेतावनी दी है कि इमरान खान और उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ ने अगर बीते साल 9 मई को हुए दंगे के मामले में माफी नहीं मांगी तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। बिलावल भुट्टो जरदारी ने कहा कि पीटीआई गंभीर राजनीतिक पार्टी नहीं है। बिलावल का आरोप-हिंसा में शहीदों के स्मारकों को पहुंचाया गया नुकसान बुधवार को पाकिस्तान की नेशनल असेंबली में बोलते हुए बिलावल भुट्टो ने कहा कि किसी को भी आतंकी घटनाएं अंजाम देने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। विपक्षी नेताओं ने बीते साल 9 मई को उन शहीदों के स्मारकों का अपमान किया, जिन्होंने देश के लिए अपनी जान दी। गौरतलब है कि बीते साल 9 मई को इमरान खान की गिरफ्तारी के विरोध में पाकिस्तान में हिंसा हुई थी। इस हिंसा के दौरान पीटीआई समर्थकों ने सेना के कई शीर्ष अधिकारियों के घरों के साथ ही सार्वजनिक संपत्ति को भी भारी नुकसान पहुंचाया था। हालांकि इमरान खान और उनकी पार्टी ने हिंसा के आरोपों को नकार दिया है। बिलावल भुट्टो जरदारी ने कहा कि पीटीआई गंभीर पार्टी नहीं है और उनमें देश की राजनीति करने की कोई इच्छा नहीं है, उनके नेता जेल में रो रहे हैं। पीपीपी नेता ने कहा वे (पीटीआई) अपने निजी हित साधना चाहते हैं। मैं उनके गैर-गंभीर रवैये की आलोचना करता हूं। एक तरफ वे दावा करते हैं कि वह पाकिस्तान के संविधान की सर्वोच्चता की लड़ाई लड़ रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ वे सिर्फ सैन्य प्रतिष्ठान से बातचीत करने की बात कर रहे हैं। पीपीपी नेता ने कहा पीटीआई और सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल के नेताओं का लोकतंत्र, संविधान, कानून में कोई विश्वास नहीं है। बिलावल भुट्टो ने पाकिस्तानी नेताओं से पाकिस्तान के आगामी बजट को लेकर सुझाव देने की भी अपील की। उन्होंने अपील की कि सरकार देश के आयात विवाद को सुलझाने के लिए भी कड़े कदम उठाए और इस मामले में दोषी लोगों की जवाबदेही तय की जाए।

जस्टिन ट्रूडो से न हिंदू खुश न सिख, मुस्लिम समर्थन भी घट रहा; सर्वे ने चौंकाया

ओटावा, एजेंसी। कनाडा में अगले साल अक्टूबर में चुनाव हो सकते हैं। इससे पहले आया एक सर्वे प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और लिबरल पार्टी के लिए टेंशन का कारण भी बन सकता है। संकेत मिल रहे हैं कि देश में हिंदू और सिख मतदाता बड़ी संख्या में कंजर्वेटिव पार्टी को मतदान कर सकते हैं। वहीं, सर्वे से यह भी पता चला है कि ट्रूडो की पार्टी मुस्लिम और यहूदियों का भी समर्थन खोती नजर आ रही है। एन्गस रीड इंस्टीट्यूट या ऋ्ढ की तरफ से जारी ताजा सर्वे में कहा जा रहा है कि कंजर्वेटिव के पास हिंदू समर्थन 53 फीसदी पर है। जबकि, सिख के मामले में यह एक पॉइंट ज्यादा है। इससे उलट, लिबरल्स को 22 फीसदी हिंदुओं और 21 फीसदी सिखों का समर्थन हासिल है। कहा जा रहा है कि कंजर्वेटिव्स के प्रति इन समुदायों का रुझान काफी अहम है। इसकी एक वजह यह भी है कि ये ग्रेटर टोरंटो एरिया, मेट्रो वेंकूवर और कैलगरी में बड़े मतदाता समूह के तौर पर सामने आते हैं और आगामी चुनावों में यह काफी अहम साबित हो सकता है। गाजा और इजरायल के मामले में लगातार संतुलन बनाने की कोशिश में लगी ट्रूडो सरकार के हाथों से मुस्लिम और यहूदी समर्थन भी छिटकता नजर आ रहा है। खबर है कि 41 फीसदी मुस्लिम न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी या एनडीपी का समर्थन कर रहे हैं। जबकि, लिबरल्स के मामले में आंकड़ा 31 प्रतिशत पर है। इधर, कनाडा में रहने वाले यहूदियों का भी 42 फीसदी समर्थन हासिल है। खास बात है कि कनाडा में रहने वाले मुसलमानों का 15 फीसदी समर्थन कंजर्वेटिव को मिल रहा है। स्टैटिक्स कनाडा की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, साल 2021 जनगणना में देश में 8 लाख 30 हजार हिंदू रहते हैं। ये कुल आबादी का करीब 2.3 फीसदी है। खास बात है कि इन संख्या बीते 20 सालों में दोगुनी से ज्यादा हो गई है। इसी तरह सिख आबादी 7 लाख 70 हजार है और आबादी 20 सालों में दोगुनी से ज्यादा हो गई है।

भारतीय अमेरिकियों को हर पद के लिए चुनाव लड़ना होगा : कृष्णमूर्ति

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में भारतीय मूल के प्रभावशाली सांसद राजा कृष्णमूर्ति ने समुदाय के लोगों से कहा कि अब समय आ गया है कि वे प्रत्येक निर्वाचित पद के लिए चुनाव लड़ें और हर बार मतदान जरूर करें। साथ ही उन्होंने देश के नागरिक मामलों में भागीदारी के महत्व को भी रेखांकित किया। डेमोक्रेटिक थिंक-टैंक 'इंडियन अमेरिकन इम्पैक्ट के वार्षिक समारोह के लिए यहां एकत्रित हुए भारतीय अमेरिकियों को संबोधित करते हुए कृष्णमूर्ति ने कहा, ''हमें मतदान करना होगा। क्या आगामी चुनाव में यहां मौजूद हर व्यक्ति वोट देगा? क्योंकि हम राजनीति पर बात तो दिनभर कर सकते हैं, लेकिन राजनीति का हिस्सा बनना अलग बात है। याद

रखिए, राजनीति केवल एक संज्ञा नहीं है, बल्कि एक क्रिया है और हमें इस साल राजनीति में हिस्सा लेना है। हमें मतदान करना है।

उनकी यह टिप्पणी नवंबर 2024 में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से पहले आई है, जिसमें डेमोक्रेट नेता और वर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन का मुकाबला रिपब्लिकन नेता और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से होगा। प्रतिनिधि सभा में शिकागो का प्रतिनिधित्व करने वाले कांग्रेस सदस्य ने कहा, ''दूसरी बात यह है कि हमें खुद से ज्यादा राजनीतिक हितों के लिए काम करना है। हमें अपने स्थानीय मंदिरों का समर्थन करना होगा। हमें स्थानीय मस्जिदों का समर्थन करना होगा। हमें हमारे स्थानीय गैर-लाभकारी संगठनों का समर्थन करना होगा। मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा करेंगे।

उन्होंने कहा, ''आप डेमोक्रेट हो, रिपब्लिकन हो या निर्दलीय हो, मुझे फर्क नहीं पड़ता; बस आप इस बात को समझें कि आपको आपके देश के प्रशासनिक मामलों में भागीदारी की जरूरत है और अब ऐसा करने का समय आ गया है। कृष्णमूर्ति ने कहा, ''मेरा तीसरा और अंतिम बिंदु है कि यह हर स्तर के पदों पर चुनाव लड़ने का समय है। इसी समारोह में उप राष्ट्रपति कमला हैरिस ने एक दिन पहले कहा था कि अमेरिका में निर्वाचित पदों पर भारतीय अमेरिकियों का प्रतिनिधित्व काफी कम है। अधिक से अधिक लोग चुनाव लड़ने के बारे में सोचेंगे। आप शहर काउंसिल के लिए लड़ सकते हैं, राज्य विधायिका के लिए लड़ सकते हैं या सीनेट के लिए लड़ सकते हैं। आप कांग्रेस के लिए लड़ें। कृष्णमूर्ति ने समुदाय को संगठित करने में थिंक टैंक 'भारतीय अमेरिकी इंपैक्ट की भूमिका की प्रशंसा की।

उन्होंने कहा, ÷ इंपैक्ट(थिंक टैंक) एक बड़ा बदलाव ला रहा है, ताकि हम सभी स्तरों पर अधिक से अधिक लोगों को ला सकें।

पाकिस्तानी सांसद ने बयां किए अपने देश के हालात, कहा भारत चांद पर और हम गटर में

ईस्लामाबाद, एजेंसी। भारत की तरक्की को देखकर पाकिस्तानी आवाम में एक टीस उठती है कि वे पीछे क्यों रह गए। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान के एक नेता ने कराची के हालात बताते हुए कहा कि दुनिया चांद पर जा रही है और हमारे यहां मासूम बच्चे खुले हुए गटर में गिरकर मर रहे हैं। एक ही स्क्रीन पर खबर है कि भारत चांद पर चला गया और उसी स्क्रीन पर 2 सेकेंड बाद खबर है कि कराची में किसी गटर में ढक्कन न होने से बच्चे गटर में गिरकर मर गए। उन्होंने कराची में पानी की भी किल्लत बताई। कहा का कराची में पानी माफिया टैंकरों के पानी को चोरी करके बेचते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक मुत्ताहिद कौमी मूवमेंट पाकिस्तान(एमक्यूएम-पी) के सांसद सैय्यद मुस्तफा कमाल ने संसद में बोलते हुए अपना यह दर्द बयां किया। पाकिस्तान के सभी सांसद उन्हें चुपचाप सुनते रह गए। सैय्यद मुस्तफा ने कहा कि पाकिस्तान में ये हर तीसरे दिन ऐसा ही हो रहा है कि बच्चे गटर में गिर रहे हैं। मगर इस समस्या का निदान करने वाला कोई नहीं है। उन्होंने कहा कि पिछले 15 सालों से कराची जैसे शहर को एक कतरा नया पानी नहीं दिया गया। उन लाइनों में जो पानी आता था, उसको चोरी करके पानी माफिया बेच रहे हैं। आज सिंध भर में 48 हजार स्कूल हैं, उनमें से 11 हजार घोस्ट स्कूल होने की रिपोर्ट आई है। हमारे मुल्क में 2 करोड़ 62 लाख बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। यह आंकड़ा भयावह है। एमक्यूएम नेता ने पाकिस्तान के हालात पर चिंता जताते हुए मौजूदा स्थिति को भयावह बताया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के कराची जैसे शहर मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129